



# हिन्दी-गद्य-वाटिका की कंजी

संपादक—केशवप्रसाद

प्रकाशक

हिन्दी-भवन

हास्पिटल रोड, लाहौर

मूल्य ॥१॥

## सूची

१ गुमाईं जा व म्बक	१
२ डालड ता म्क अ गोश्री धाने वा	२
३ कपी शरद शस्तु धर्गन	५
४ औरगजध का कौम का वर्णन	८
५ स पाथ-प्रकाश	५
६ एक दुराशा	१३
७ मनसुखी और सुन्दरमिह का रिम्मा	१७
८ माता का स्न	१८
९ पाहवों का विवाह	२०
१० साहित्य की मत्ता	२३
११ विषधर सर्प	२८
१२ नैपालिया घानापाट	३०
१३ दधवाला की मृत्यु	३४
१४ संभाषण म शराष्टाचार	३५
१५ हिन्दा म विराम चिह्न का दुरुपयोग	३८
१६ शुक्र की कथा	३९
१७ हिन्दी नाटक और रंगशाला	५०
१८ सभ्यता का विनाम	५२
१९ महापुरुषों के जीवन का रहस्य	५४
२० नता के शुद्ध गुण	५५
२१ समर्थ और शिवाजी	५८
२२ विलायती समाचार पत्रों का इतिहास	६१
२३ लन्दन के पार्क	६३
२४ भगवान बुद्ध के चपराश और उनकी शिष्य मस्त्री	६४

२५ शिकागो का रविवार	६९
२६ अमावस्या की रात्रि	७०
२७ रामायण का महत्त्व	७९
२८ अध्ययन	८०
२९ मेघ	८७
३० वृष्टि	८९
३१ राजपूतनी का बदला	९१
३२ हिन्दू जाति को पावन शक्ति	९३
३३ लाहौर में रावी नदी का उषाकालीन दृश्य	९६
३४ बाहनू जी आँसे	९८
३५ उन्नत देश के देहाती कैसे रहते हैं	१०२
३६ कृष्ण चरित	१०५
३७ भरत	१११
३८ रत्नाबन्धन	११७
३९ सुधा	११९
४० मध्य एशिया के खंडहरो की खुदाई का फल	१२२
४१ हमीर	१२५
४२ हिन्दी साहित्य के मुमलमान कवि	१२८
४३ महाभारत	१३८
४४ जर्मन देश पर एक ऐतिहासिक दृष्टि	१४३
४५ त्रिमूर्ति	१४५
४६ हेनरी फेवर	१४३
४७ आकाश-नागा	१५८
४८ बर्जिन	१६१
४९ राजपूतों की अद्भुत देशभक्ति	१६४
५० अमेरिका की रोज	१६६
५१ दीर्घ जीवन	१६६

५२ हरिद्वार	११
५३ अभिमन्यु की वीरता	१२
परिशिष्ट (क) हिन्दी गद्य का विकास	११
" (ख) भिन्न भिन्न तोगकोंकी लखन-शैली	११
" (ग) अनुमानित प्रश्न	११

---

## अशोक नाटक की कुजी

[ ले०—ए० रामकृष्ण शास्त्री, हिंदा प्रभाकर ]

इसमें अशोक नाटक अकों की कथा का संक्षेप, कति शब्दों के अर्थ, प्रधान पात्रों का चरित्र चित्रण तथा नाटक आवश्यक परिभाषाएँ दी गई हैं। मूल्य १।

## भारतवर्ष के इतिहास के चार्ट

इन चार्टों को देख कर विद्यार्थी १० मिनट में भारतवर्ष के सारा इतिहास दुहरा सकते हैं। मूल्य—हिन्दू युग ≡) मुसलिम युग ≡)

## श्री गुसाईं जी के सेवक

( लेखक—गोसाईं गोकुलनाथ )

पृष्ठ ३

स्फुरण काल—प्रसिद्धि का समय  
प्रगट होने का समय  
शतान्दी—किसी सवत् के सैकडे  
के अनुसार एक से सौ वर्षा  
तक का समय ।

मो—बह ।

गाम—गाँव ।

रहेतो—रहता ।

हतो—था ।

खडन—किसी बात को भूठा सिद्ध  
करना, बात को काटना ।

पढथोहतो—पढा हुआ था ।

पृष्ठ ४

याको—उसका ।

नेम—नियम ।

याहीं तैं—इमी से ।

सोगन—सोगी ।

पाइयोहतो—रखा हुआ था ।

महाप्रभु—वैष्णवों के आचार्य  
वल्लभाचार्य जी की आदर-  
सूचक पदवी ।

वैष्णवन—विष्णु के भक्त ।

शास्त्राध—वाक्यविवाद ।

अथये को—अते का ।

इहाँ—यहाँ ।

मडन—प्रमाण आदि के द्वारा  
किसी बात को सिद्ध करना  
भगवद्वार्ता—भगवान की कथा ।  
भगवदश—भगवान की कीर्ति ।  
आयो—आना ।

तोहुँ—तोभी ।

याने—उसने ।

प्रकृती—स्वभाव, आदत् ।

हती—थी ।

सूतो—मोया ।

याकुं—उसको ।

जनेन—आश्मियों ने ।

सर्वोपर—सबसे ऊपर, सबसे  
अच्छा ।

भगवत्परायण—भगवान में लगे हुए  
भगवदर्पण—भगवान के समर्पण  
भगवान की भेंट ।

तन—शरीर ।

जिननें—जिन्होंने ।

धिनको—उनको ।

अर्थ—इच्छा, तालसा ।

भिद्ध—हासिल ।

भये—होगये ।

हुं—को ।

जासुं-जिससे ( इसलिये ) ।  
 तोरुं-तुम्हारे ।  
 मारै-मारते ।  
 पारा-पारवों में ।

बिनती-बिनती, प्रार्थना ।  
 भोक्तुं-भुक्तो ।  
 करौ-बनाया ।  
 सबक-सेवा करनेवाला उपासक

### ( सरल भाषा )

वह श्रीनन्द गाँव में रहता था । वह सड़न करने वाला ब्राह्मण शास्त्र पढ़ा हुआ था । जितने पृथ्वी पर मत हैं उन सबका सड़न करना उसका नियम था । इसी में सब लोगों ने इसका नाम सड़न रख दिया था । वह एक दिन महाप्रभु बल्लभाचार्य जी के उपासक विष्णुभक्तों की मडली में आया और सड़न करने लगा । वैष्णवों ने कहा जो तुझ शास्त्राय ( वाद विवाद ) करना हो तो पहिलों के पास जा, हमारी मडली में आने का तेरा कोई काम नहीं । यहाँ किसी बात को काटने या सिद्ध करने का ( वादविवाद का ) काम नहीं है । यहाँ तो भगवान के भजन की बात है । यदि भगवान का यश ( कीर्ति ) सुनना हो तो यहाँ आना । तब भी वह माना नहीं और रोज आकर सड़न करता था । ऐसा उसका स्वभाव ही था । एक दिन वैष्णवों का मन बहुत उदास हो गया । जब वह सड़न करने वाला ब्राह्मण घर में सोया हुआ था तब चार आदमी सुदूर लेकर उसे मारने लगे । जब उसने उठा तुम मुझे क्यों मारते हो, तब चार आदमियों ने कहा कि तुम भगवान के धर्म का सड़न करते हो और यह भगवान का धर्म सब से ऊपर है, सब धर्मों से अच्छा है । जो केवल भगवान में लगे हैं,

जिन्होंने तन मन तथा धन भगवान को भेंट कर दिया है, उन्हें कोई इच्छा बाकी नहीं रही। सब प्राप्त हो गए हैं। ऐसे धर्मात्माओं का तू खडन करता है, इसलिए तुझे मारते हैं। यह सुन कर खडन करने वाला ब्राह्मण उन चार आदमियों के पाँवों में पड़ा। और दूसरे दिन भक्तों की मडली में आकर वैष्णवों के पैरों में पड़ा और उनसे प्रार्थना की कि कृपा करके मुझे भी विष्णु का भक्त बना लो और वैष्णवों को साथ लेकर श्रीगोकुल आकर श्रीगुसाई जी का उपासक होगया। इस तरह वह खडन करने वाला ब्राह्मण गुसाई जी की कृपा से मडन करने वाला हो जायगा।

२

## डोलडाल एक अनोखी बात का

( लखन—धैयद इशाअल्लाह खॉ )

पृष्ठ ५

डोलडाल—प्रयत्न।

पूर्वज—पुरुखा, दादा परदादा।

अस्त—नष्ट, डूबना।

रंगीली—रसिया।

चुलबुलाइट—रसिकता।

पृष्ठ ६

ध्यान में चढी—ध्यान में आई।

छुट—छोड़कर, सिवाय।

पुट—रगत, जरा सी भी मिलावट।

पुराने घुराने—बहुत दिनों के, अनुभवी।

घाघ—चतुर, अनुभवी, चालाक।

खटराग—झंफट, बखेड़ा।

हिंदवीपन—ठेठ हिन्दी भाषा।

भाखापन—सरकृत मिश्रित हिन्दी

डौल—बनावट।

छाँह—परछाँह, पुट, मिलावट।

टहोका खाकर—धक्का खाकर।

बड़ घोला—बड़ी बड़ी बातें करने वाला।

राई का पर्यत करना—छोटी सी

बात को बड़ी बना देना।

उलामी सुलामी—टढ़ी सीधी।



दप-तरीके ।

गाय भाव-भरमी तेजी ।

अचपचाहट-घटा अधिक चालता

प्रसु ७

शोकदी भूल जाय-नाक भी चाल

न सूभे, मुद्धि काम न दे ।

( सरल भाषा )

एक दिन बैठे बैठे यह बात ध्यान में आई कि कोई ऐसी कहानी कही जाय जिस में हिन्दी को शोक और किसी बोली की खरा भी मिलापट न हो तभी मेरे हृदय की कली खिलेगी ( मैं प्रसन्न होऊँगी ) । उस कहानी में विदेशी शब्द और गैराम् बोली न हो । अपने मिलने वालों में से कई बहुत दिनों के पुराने अनुभवी और बूढ़े चतुर व्यक्ति ने यह दृष्टादृष्ट कर दिया और सिर मुँह हिलाकर और नाक मोड़ चढ़ाकर और आंग्र फिराकर कहने लगे, यह बात होती दिग्गद नहीं देती कि खालिस हिन्दी भाषा भी रहे और सफ़्त मिश्रित हिन्दी भी न आवे । और भले लोग जो आपस में बोलते चालते हैं, ठीक वैसी ही बनावट बनी रहे और दूसरी भाषा की वसमें छाया न आवे । मैंने ठाकी ठडी साँस का धक्का त्याकर ( ताना मुनकर ) हँसलाकर कहा—मैं कोई ऐसा बड़ा बातूनी नहीं जो छोटी सी बात को बढ़ा कर कहूँ, झूठ सच बोलकर घमाउरियाँ नचाऊँ और वेसिर बैठकाने की देदी सीधी बातें घाऊँ । जो यह मुण से न हो सकता तो ऐसी बात उदता ही क्यों ? जिस तरह से होता इस यत्ने के टाल देता । इस कहानी का कहने वाला मैं आपको बतलाता हूँ और वैसा लोग मुझ कहते हैं, वैसे ही कह सुनाता हूँ । दाहिना

हाथ मुँह पर फेरकर आपको बताता हूँ कि जो मेरे दाता ने चाहा ( यहाँ ठेठ हिन्दी के प्रयोग करने ही के लिए सैयद साहब ने अपना नाम भी हिन्दी में दे दिया है, इशा अह्लाह का अर्थ है जो मेरे दाता ने चाहा ) तो ऐसी गरमी तेजी, फुद फाँद दिखाऊँगा कि देखते ही आपके ध्यान का चक्कल घोड़ा जो बिजली से भी अधिक चक्कल है, अपनी चौकड़ी भूल जायगा अर्थात् आपका ध्यान केवल मेरी चुलचुली भापा की ओर ही अटक जायगा ।

जरा सा अपन घोंड़े पर चढ़ कर मैं जो आता हूँ और जो कुछ करतब हैं वे कर दिखाता हूँ । और अगर मेरे दाता ने चाहा [ इशा अह्लाह ] तो जो कुछ कहता हूँ, यह सब कर दिखाऊँगा ।

अब कान लगाकर, आँखें मिलाकर सामने होकर जरा इधर देखिये [ जरा इधर ध्यान कीजिये और देखिये ] कि किस प्रकार मैं बढ़ता जाता हूँ, और फूल की पखुड़ी के समान अपने फोमल होठों से कैसे कैसे शब्द रूपी फूल निकालता हूँ ।

३

## वर्षा शरद ऋतु-वर्णन

( ले०—श्री लल्लू लाल )

पृष्ठ ८

प्रेरणा-रहन से, प्रोत्साहन से ।  
ब्रजभाषामिश्रित-ब्रजभाषा मिली

पृष्ठ ९

प्रोप्स-गरमी ।  
अति-बहुत ।

अनीति-अधेर, अन्धकार ।

नृप-पावस-वर्षा ऋतु रूपी राजा ।	वग्रानते-कहते ।
प्रचण्ड-प्रतापी ।	खेत-लाडाई या मैदान ।
इल-सना ।	अपना जी-अपनी जान ।
घन-घादल ।	पिया-प्यारा, पति ।
धौसा-बड़ा नगारा, डंका ।	वियोग-डुदाई ।
वर्णवर्ण-रंग रंग ।	यांग-तप ।
घटा-घने घादलों का समूह ।	तिमका-मका ।
रावत-सामत, सरदार ।	भाग भरना-सुख उठाना ।
तिनक-उनक ।	मुहावनी-सुन्दर ।
ठमक-चमक ।	कामिनी-सुदरी स्त्री ।
शस्त्र-शुधियार ।	मरोवर-तालाब ।
वगर्पात-वगुलों की श्रेणी, पंक्ति ।	रुख-पेड़ ।
ठौर ठौर-जगह जगह पर ।	पिक-फोयल ।
ध्वजा-झंडी ।	कीर-तोता ।
दादुर-मोंडक ।	कपात-कवूतर ।
कडखेत-वारों की प्रशंसा सभर	सूहे-लाभ ।
गीत गानेवाल भाट ।	कुसुमे-फूल के रंग के, लाल ।
यश-कीर्ति ।	जोड़-कपड़ ।
	मलार-वर्षा ऋतु का गान ।

### [ सरल भाषा ]

[ शुकदेव मुनि कृष्णद्वैपायन ध्यास के पुत्र थे, और पुराणों के बड़े भारी यज्ञ और ज्ञानी थे । इन्होंने राजा परीक्षित को उनके मरने के पहले मोक्ष धर्म का उपदेश दिया था, कहा जाता है वही उपदेश भागवत पुराण है । लल्लुलाल कृत प्रेम सागर उसी भागवत के दसवें स्कंध का अनुवाद है । ]

श्रीशुकदेव मुनि बोले—हं महाराज परीक्षित, गरमी का अत्यन्त अन्याय और अत्याचार देख कर प्रतापी वषाऋतु रूपी

राजा जीव-जन्तुओं की बुरी दशा सोचकर चारों ओर से बादलों की सेना को साथ ले लड़ने को चढ़ आया। उस समय बादल जो गरजता था, वही मानो नगारा बजता था—युद्ध का डका बजता था। और रग रग के घने बादलों के समूह जो इकट्ठे हो गये थे, वही मानां शूरवीर सरदार थे। उनके बीच बिजली की चमक हथियार की तरह चमकती थी। घगुलों की पक्ति जगह जगह पर झलियों की तरह फहरा रही थी। मडक और मोर वीरों के यश गाने वाले भाटों की तरह यश बखान कर रहे थे, और बड़ी बड़ी वृद्धों की जो झड़ी लगी थी, वही मानों बाणों की झड़ी थी। इस शान [ सजावट ] से वर्षा ऋतु को आता देव गरमी मैदान छोड़ कर अपनी जान लेकर भागी। तत्र बादल रूपी प्रियतम [ पति ] ने बरस कर पृथिवी को सुख दिया। उस पृथिवी ने जो आठ महीने पति की जुदाई में तपस्या की थी, उसका सुख पा लिया। कुछ वृद्ध गिरने से पृथिवी शीतल हुई और गर्भ रहा। उसमें से अठारह हजार पुत्र उत्पन्न हुए। वे भी फल-फूल भट लेकर प्यारे को प्रणाम करने लगे। उस समय वृन्दावन की भूमि ऐसी सुन्दर लगती थी कि जैसे शृंगार किये [ गहने आदि पहने हुए ] सुन्दरी युवती खी हो। और जहाँ कहीं [ हर जगह ] नदी नाले और तालाब भरे हुए थे, उन पर हँस और सारस शोभा दे रहे थे। ऊँचे ऊँचे पेड़ों की ढालियाँ झूल रही थीं। उनमें कोयल पपीहा, कबूतर, और तोते बैठे हुए कलरव कर रहे थे—सुन्दर बोल बोल रहे थे और जगह जगह पर लाल फूलों के रग के कपड़े पहने गोपियाँ और गाल झूलों पर झूल झूल कर ऊँचे स्वरो से प्रसन्न हो मलार

[सर्पों आदि का गाना] गा रहे थे। उनके पास जा जा कर भीड़-गम और बसरायम बाध मीला करके अधिक सुख देने में।

४

## औरगज़ेब की फ़ौज का वर्णन

(देख—राजा शिपसगाद विगारे दि द)

पृष्ठ १०

विशान—अंत में, आभिर  
निगाह—रश्मि, नजर,  
गालें—घोड़े की गर्दन के ऊपर के  
हाल, अयास।

साज—सजावट का सासान  
खीन, लगाम, सग, दुमगी  
आदि।

पृष्ठ ११

झांझनें—एक प्रकार का पैर में  
पहनने का गहना जो चौड़ी  
का बाता है। घोड़ों के पैरों  
में प्रायः सौंघ की झांझन  
पहनाने जाती है।

थारझामे—खीन। घमड़े या  
कपड़े का वह आसन जिसे  
घोड़े की पीठ पर कम कर  
सवारी करते हैं।

खरखोखी—एक प्रकार की दस्त-  
कारी जो कपडा पर सुाहल

बजावत या मसम सवार  
में की जाती है।

दगजा—भारी लघादा मोटे यस्त  
का बना हुआ या रुईदार  
श्रैगरया।

पिरह—धकतर—छोटे का कदब  
जामा—अचकन, या शेरवानी  
सा एक प्रकार का घुटन के नीचे  
तक का घेरदार पहनावा।

खर्द—पोले।

वेदम—अघमरा।

भाई भगतिये—एक प्रकार के  
पशोघर जो प्रायः कई इकट्ठे  
ठाकर रहते हैं और गह-  
फिजों शाशियों पर नाचते-  
गात और स्थांग बनाते हैं।

गंडी छाकरे—रखियाँ और लौंडे  
चिदमतमार—सरा करने वाले।

डेर-डंड-डिन्ने का मामान।

ऐश शारत—भाग विज्ञास।

साज सामान-वस्तुएँ ।	पृष्ठ १२
बार घर्दारी-सामान होनेका काम	हवा खाने को-धूमने को ।
तद्दीर-तरकीध, उपाय ।	माँदि-बीमार ।
मुज्राइका—परवाह ।	शामियाना-बड़ा तंबू

## ( सक्षेप )

औरगजेब की फौज की शान शौकत और सामान अत्यधिक था परन्तु सिपाही सब कमजोर या नशे में धूर और दवाई खाते पीते थे । उनका ध्यान अधिकतर जीवन के भोग विलास की ओर था, युद्ध की उन्हें कुछ परवाह नहीं थी । उन्हें बड़ी बड़ी तनखवाहें मिलती थीं, पर काम कुछ न करना होता था । फ्रांसीसी जिमेली करेरी लिखता है कि औरगजेब की सेना में दस लाख से ऊपर आदमी थे और उनके डेरे साज आदि बहुत दूर तक फैले थे । इन मुसलमान सैनिकों को मुकाबला उन मराठे वीरों से करना पडा जिनको जीवन के किसी आराम की परवाह नहीं थी । जो रूखा सूखा खाकर ऊँची नीची जमीन पर सोकर भी लड़ने को प्रस्तुत थे ।

## ५

## सत्यार्थ-प्रकाश

( लेखक—श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती )

पृ० १३

छत्रकोटि-ऊँचे दर्जे के  
अन्तर्गत-में

के मानने वाले,  
वाले ।

संस्कृतगर्भित-संस्कृत मिला  
विष प्रयोग से-ध्वंस देने से  
देहान्त-मृत्यु, मौत

पृ० १४

प्रयोजना-उद्देश्य, मालथ  
मिथ्या-भूठ  
प्रतिपान्न-प्रमाण सहित कहना,  
अच्छी तरह समझना ।  
पदार्थ-यस्तु  
पक्षपाती-सम्पहार  
प्रवृत्त-सत्पर, तैयार  
आप्त-विषय की ठीक तरह  
जानने वाले, प्रामाणिक ।  
सत्यासत्य-मथ भूठ  
स्वरूप समर्पित कर दे-स्वरूप  
ठीक ठीक बता दे ।

हिताहित-भला बुरा  
मिथ्यार्थ-भूठा अर्थ, भूठी बात  
परित्राग-झोड़ना  
सिद्धि-प्राप्ति, पाना ।

दृढ-जिद ।

दुरामह-जिद, अपनी बात के  
ठीक न सिद्ध होने पर भी  
उम पर स्थिर रहना ।

अविद्या-अज्ञान

अन्य-दूसरा

पृ० १५

शोधो-ठीक करने  
हितैषी-हित चाहने वाला

जनावेगा-बतलावेगा ।  
संगृहीत-संगठ किया जायगा,  
जोड़ दिया जायगा  
मर्त्यतन-जिसे सब शास्त्र मानते हैं  
विधि-प्रकार  
वृद्धि-बढ़ती ।  
सार्वजनिक-सर्वसाधारण का ।  
सत्यमेव जयते नानृतम्-मत्य ही  
की जीत होती है भूठ की नहीं ।  
सत्येन पथा धितता देवयाना -  
सत्य में ही विद्वानों का  
रास्ता विस्तृत होता है ।

पृ० १६

आलवन-सहारा, पकड़न  
अभिप्राय-मतलय  
अविरुद्ध-समान जिनमें विरोध  
न हो ।

मतस्थ-मत को मानने वाले ।  
आर्यावर्त्त-आर्यों के रहने का  
देश भारतवर्ष ।

मत मतान्तर-भिन्न भिन्न मत ।

यथातथ्य-ठाक ठाक

देशस्थ-देशा क ।

मतोन्नति-मतकी उन्नति करना

रममत-अपना मत

स्तुति-बड़ाई प्रशंसा

( सरल भाषा )

मर इम ग्रन्थ बनाने का मुख्य मतलय सच्चा सच्ची बात

का बताना है अर्थात् जो सच है उसको सच कहना, तथा जो झूठ है उसको झूठ ही समझाना सचे अर्थ का प्रकाश करना है। वह सत्य नहीं है जो सच के स्थान में झूठ, और झूठ के स्थान पर सच कहा जाय, अर्थात् झूठी चीज को सच्चा बताया जाय। परन्तु जो वस्तु जैसी है उसको ठीक ठीक वैसा ही कहना लिखना आदि सत्य कहलाता है। जो मनुष्य किसी की तर्फदारी करने वाला होता है वह अपने झूठ को भी सच और दूसरे विरोधी मत के मानने वाले की सच्ची बात को भी झूठा बताने को तैयार रहता है। इसलिए वह सच्चे मत को नहीं पा सकता। इसलिए विद्वानों और विषय को ठीक तरह जानने वालों का यही मुख्य काम है कि उपदेश से या लेख से सब मनुष्यों को सच झूठ का असली रूप दिखा दें। इसके बाद वे लोग अपने आप अपने भले नुरे को समझकर सच्ची बात को अपना कर और झूठी बात को छोड़कर सदा आनन्द में रहें। मनुष्य का आत्मा सच झूठ को जानने वाला है, फिर भी वह अपने मतलब को पाने के लिए जिद अथवा किमी बात को झूठा समझते हुए भी उस पर अड़े रहने तथा भ्रमज्ञान आदि दोषों से सच्ची बात को छोड़कर झूठ की ओर झुक जाता है—झूठ को अपना लेता है। परन्तु इस पुस्तक में यह बात नहीं रखी गई और न हमारा मतलब किसी का मन दुखाने अथवा हानि करने का है। किन्तु जिस चीज से मनुष्य जाति की उन्नति हो और मनुष्य को सच झूठ को समझ कर सच और झूठ को छोड़ दें, उसी बात को सच ही है। क्योंकि सच्ची बात के कहने,



और किसी चीज से मनुष्य जाति की उन्नति नहीं हो सकती ।  
 इस पुस्तक में जो किसी किसी जगह पर गल्ती में  
 अथवा छापने में कोई भूल चुक रह गई होगी तो उसके मानने  
 और अथवा बताये जाने पर जैसा ठीक होगा वैसा कर दिया  
 जायेगा । और जो कोई तरफदारी से सन्देह या स्वयं मद्द्  
 करेगा उस पर ध्यान न दिया जायेगा । हाँ, जो कोई मनुष्यमात्र  
 का हित चाहने वाला होकर कुछ बात बतलावेगा, और हमकी  
 बात को ठीक समझने पर हमका मत जोड़ दिया जायेगा । यद्यपि  
 आधुनिक घटुव से विद्वान् प्रत्येक मत में हैं, वे भी तरफदारी  
 छोड़ कर जिसे सभ शास्त्र मानते हैं ऐसे सिद्धांतों को अयान्  
 जो सब मतों में समान और सब में ठीक हैं उनको महण कर  
 और जो एक दूसरे के विरुद्ध बातें हैं उनको छोड़ कर, एक  
 दूसरे से प्यार से बातें तो ससार का पूरा कल्याण हो । क्योंकि  
 विद्वानों की लड़ाई से मूल्यों में भी लड़ाई बढ़ती है और हम  
 से अनेक प्रकार के दुखों की बढ़ती और सुख की हानि होती  
 है । इस हानि ने, जो स्वार्थी मनुष्यों को प्यारी है, सब  
 मनुष्यों को दुख के सागर में डाल दिया है । इन विद्वानों में  
 से जो कोई सर्वमाधारण के [सबके] भले को ध्यान में रख  
 कर कुछ करने को तैयार होता है स्वार्थी लोग उस से विरोध  
 करने को तैयार होकर अनेक तरह की रुकावटें डालते हैं, परन्तु  
 अन्त में सत्य की ही जीत होती है, शूठ की नहीं तथा सत्य से  
 ही सारे विद्वानों का मार्ग विमृत्त होता है, इस पक्ष निश्चय का  
 सहारा लेकर प्रामाणिक लोग कभी भी लोगों की भलाइ वा जयाल

छोड़कर सच्ची बात बताने से नहीं धूकते । इस पुस्तक में यही उद्देश्य रखा गया है कि जो जो सच मतों में सच्ची सच्ची बातें हैं, सच मतों में समान होने से उनको खपनाया गया है और जो भिन्न भिन्न मतों में झूठी बातें हैं उनका खण्डन किया गया है । भिन्न भिन्न मतों की छिपी अथवा प्रगट बुरी बातों को खोल कर विद्वान और अनपढ़ सचके सामने रख दिया है । जिससे मनुष्य सबका विचार कर और एक दूसरे के प्रेमी होकर सच एक सत्य बात को मानने वाले हो जावे । यद्यपि मैं भारतवर्ष में पैदा हुआ हूँ और यहीं बसता हूँ तथापि जैसे इस देश के भिन्न भिन्न मतों की झूठी बातों की तरफदारी न कर ठीक-ठीक बात बतलाता हूँ, वैसे ही दूसरे देशों के मतों की उन्नति करने वालों के साथ भी यही वर्ताव करता हूँ । और सच सबजनों को ऐसा करना भी चाहिए । यदि मैं भी किसी मत की तरफदारी करता तो जैसे बाजकल अपने मत की बड़ाई, उसका महान और प्रचार करते हैं और दूसरे मत की बुराई, हानि और उसके प्रचार करने का यत्न करते हैं, वैसे मैं भी करता परन्तु ऐसी बातें शिष्टता के बाहर हैं ।

---

 ६

### एक दुराशा

( ले० — श्रीयुत बालमुकुन्द गुप्त )

पृष्ठ १७,

दुराशा—ऐसी आशा जो पूरी  
होने वाली न हो, व्यर्थ

की आशा ।

हास्य—हँसी ।

व्यङ्ग—चोट, छाना ।

पृ० १८

पैनी-तेज

आफरानी-फेसर का सा रग

वसन्ती घटी-भाँग

मौन-मन में उठती उमग ।

एय ली घोडे-विचार, कल्पना

वाग-लगाम

जकन्द-छल्लाँग

तूल अरख-चौड़ाई

फनरमिया-गागा वजाना सुनने  
का शौकीन ।

महफिल-जलसा

लय-तान

पृ० १९

मलार-एक राग जो वर्षा ऋतु  
में गाया जाता है ।

सुदी-शुक्ल पत्र

विकास-खिलना

विधि-त्रहा, विधाता

ऋतुविपर्यय-ऋतुओं की उलट  
पुलट

खिलैया-खेलने वाले ।

कन्हैया-कृष्ण

ग्वाल बाल-ग्वालों के लडके ।

अधीर गुलाल-सुगन्धित रंग  
जो होली में एक दूसरे पर  
डाला जाता है ।प्रतिनिधि-यह जो किसी दूसरे  
की ओर से काम करने को  
नियुक्त हुआ हो । बादशाह  
के प्रतिनिधि चायमराय  
कहाते हैं ।

पृ० २०

वेतुका-वेमेल ।

शायनागार-सोने का कमरा ।

परयाद-शिकायत ।

दुर्लभ-मिलना मुश्किल ।

चन्द्रानन-चन्द्र के समान मुख ।

( संक्षेप )

नारगी के रस में फेसर के रग की भाँग छानकर शिव  
शम्भुशर्मा मन की उमगों का आनन्द ले रहे थे । उन्होंने गल्पना  
( विचार ) के घोड़ों की वाग ढीली कर दी थी वे मनमानी  
छल्लोंगे मार रहे थे—अर्थात् उनके मन में एक के बाद दूसरा  
विचार उठा रहा था । उनके हाथ पाँव खटिया की चौड़ाई से  
बाहर निकल गये थे, उनके शरीर खटिया पर था, पर विचार

कही क कही जा रहे थे। इतने में गाने की आवाज सुनकर गाने सुनने के शौकीन शिवशम्भु चारपाइ पर बैठ गये। उन्होंने सुना—“चलो, चलो, आज कृष्ण कन्हैया के घर होली खेलें।” यह सुन शिवशम्भु कमरे में निकल कर बरामदे में खड़े हुए। मालूम हुआ कि पड़ोस में किमी अमीर के यहाँ गाने बजाने की महफिल लगी है, जिसमें कोई मुरीली तान से होली गा रहा है। परन्तु उन्होंने साथ ही देखा कि बादल घिरे हुए हैं। त्रिजली चमक रही है और वृंदा बाँदी हो रही है। इस वसंत में माघन देख कर वे चकरा गये, और सोचने लगे कि गाने वाले को (मलार) वर्षा ऋतु का राग, गाना चाहिये। परन्तु माघ ही सोचा कि फाल्गुण का शुक्लपक्ष है। वसंत के मिलने का समय है। इस समय यह जो ऋतुओं का उलट फेर है यह तो ब्रह्मा की भूल है। गाने वाले का इसमें क्या दोष ?

फिर वे गान का अर्थ सोचने लगे। होली खेलने वाले ग्यालबाल कहते हैं—चलो अपने राजकुमार कृष्ण के घर होली खेलने चलें। यह सुन वे चौंक उठे। क्या कभी भारत में राजा और प्रजा का ऐसा मेल था ? क्या इस भारत में राजा लोग प्रजा के आनन्द को अपना आनन्द मानते थे ? यदि आज शिव-शम्भु और उसके साथी (भारत की प्रजा) राजा के साथ होली खेलना चाहें तो कहाँ जाँय ? आज राजा (बादशाह) तो सात समुद्र पार ( इंग्लैंड में ) रहता है और न राजा को शिवशम्भु ने देखा है और न राजा ने शिवशम्भु को। खैर राजा न सही, उसने अपना प्रतिनिधि ( वायसराय ) तो भेजा है। जैसे कृष्ण जब घृदावन छोड़ द्वारका चल गये थे तब प्रजुवासियों को सतोष

देने के लिए उन्होंने बख्श को प्रतिनिधि बनाकर भेजा था। पर  
 क्या आजकल के बादशाह के प्रतिनिधि के साथ, प्रजा होती  
 चल सकती है। यह विचार ब्रह्मा ही बेमेल है, जैसे वर्षा में  
 होली गाया जाता। परन्तु यदि ब्रह्म में क्या पड़े तो गाँववालों  
 को क्या मलार गाता चाहिये? यह सबमुच बढ़ा कठिन सवाल  
 है। कृष्ण (राजा) हैं, बख्श (प्रतिनिधि, वायसराय) हैं पर  
 ब्रह्मवासी [प्रजा] उनके पास फटक भी नहीं सकते। सूर्य है, पर  
 ऐसा छिपा है कि धूप नहीं है। चन्द्र है, पर ऐसा छिपा है, कि  
 उसकी चाँदनी दिखाई नहीं देती। माई बाप वायसराय नगर  
 (कलकत्ता) में ही हैं पर शिष्यशम्भु उनके द्वार पर फटक भी  
 नहीं सकता (उस समय वायसराय कलकत्ता में रहता था)  
 उनके साथ होली खेलना तो दूर रहा। वायसराय के घर तक  
 घात की हवा भी नहीं पहुँच सकती। जहाँगीर के बारे में प्रसिद्ध  
 था कि उसने अपने सोने के कमरे में एक ऐसा घटा लगाया था  
 कि जिसकी जजीर बाहर लटकती थी और प्रजा का कोई आदमी  
 शिकायत करना चाहता तो वह जजीर खींच देता था और  
 बादशाह उसे बुलाकर उसके दुखड़े सुनता था। तो आज कल  
 के बादशाह के प्रतिनिधि के घर में ऐसी कोई जजीर  
 नहीं लगी, जिससे प्रजा उसे अपना दुखड़ा सुना सक।  
 वायसराय का मुँह देखना मुश्किल है। दूज के चाँद की  
 तरह कभी कभी बहुत देर तक नज़र लड़ाने से उसका चद्र के  
 समान मुख दिख जाता है, तो दिख जाता है। छो। उगलियों  
 से इशारा करते हैं कि यह है। परन्तु दूज के चाँद के दिखाई  
 देने का (उदय का) कोई समय है। लोग (पचास द्वारा) उसे

जान सकते हैं । पर माई-बाप धायसराय के मुग्धहृषी पाँद के दिग्गई देने का कोई समय निश्चित नहीं । इन सब बातों को सोच शिवशम्भु ने निश्चय कर लिया कि राजा प्रजा के दोस्ती रखने—परस्पर मिल बैठने—का समय धय गया ।

७

## मनसुखी और सुन्दरसिंह का किस्सा

पृष्ठ २२.

बहार—वसंत  
पुजापा—पूजा का सामान  
समययज्ञ—एक घराघर उमर की  
सुईयें—मंगल गीत, प्रसंग के गीत  
अहार—ग्याला ।

पृष्ठ २३

धनड़ा—दुल्हा  
भली—अच्छी  
काहे को—किसलिए ।  
निर्धन—गरीब ।  
माया—रोज  
दक्षती फिरती छाँह—छाँहकी तरह  
जो कभी एक जगह नहीं टिकती ।  
गर्जी—मतलबी, इच्छुक ।  
आवभगत—आदर सरकार, खातिर

पृष्ठ २४

माता—सीतला माता, चेचक  
जात—चदाना

आस—आशा ।

बद्धड़ा छौंछेंगी—सीतला माता  
व नाम पर बद्धड़ा छौंछा जाता  
दे, वही बद्धड़ा आगे चलकर  
माँह या जाता है । धनारस  
आदि तीर्थों में इसी कारण  
साँहों की अधिकता हो जाती है  
जोड़ा पहनाऊँगी—कपड़े का  
जोड़ा दूँगी ।

भार्या—स्त्री, धीरत ।

छोरे—सदक

पृष्ठ २५

दाता की खैर—देने वाले का भला  
सदका—दान, वह वस्तु जो  
किसी प्यारे के सिर पर से उतार  
कर रास्त में रख दी जाय ।  
बेज देना ।

पीटा—सुधर का यथा ।

# माता का स्नेह

( भी बालकृष्ण भट्ट )

पृष्ठ २७

वात्सल्य—प्रेम, माता पिता का बच्चों के प्रति प्यार। साहित्य में माधारणतया श्रृंगार आदि नौ रस माने जाते हैं। पर कई लोग माता पिता के प्रेम वर्णन को वात्सल्य रस मानते हैं।

वात्सल्य रस की शुद्ध मूर्ति—बच्चों से स्वाभाविक प्रेम का पवित्र अवतार।

महज—स्वाभाविक

स्नेह—प्रेम

मर्यादा परिपालन—मत्पाचार, प्रथा रीति रिवाज क पालने के लिए।

आदरणीय—पूज्य, पूजा (आदर) के योग्य।

निःस्वार्थ—बिना स्वार्थ का, बिना मतलब का।

अनुमति—सम्मति, राय सुदम विचार स—बारीकी से (ध्यान स) देखने से।

गुप्त रीति—द्विपे द्विपे

पृष्ठ २८

प्रधीण—कुराज नेत्र

भय—डर

ताड़ना—मार, फिटक

अकृत्रिम—स्वाभाविक

अकृत्रिम, महज स्नेह—स्वाभा

विक प्रेम, प्रेमा प्रेम जो

दियावटी न हो।

विकल—व्याकुल घबराई हुई

क्लेश—रुष्ट, पीडा

जनन—पैदा करन

नीरोग—रोग रहित, भला चगा

हुलास—प्रसन्नता, मुशी

घटुधा—प्राय

पृष्ठ २६

वाद—वाद विवाद, शास्त्रार्थ

पराजित होकर—हार कर

तन त्याग दिया—शरीर छोड़

दिया।

चिंतामणि मंत्र—मरस्थती देखी

का मंत्र जिसे लोग घालकों

की जीभ पर बिद्या आने

के लिए लिखते हैं, और

जाप कराते हैं।

कृपापात्र—कृपा का अधिकारी।

परास्त करने—इरान

प्रोत्साहन—उत्साह घटाना

शिक्षा—सीमा

वज्रपात—वज्र का गिरना  
 सन्तश—ममान  
 वारुपहार—वाणी की चोट,  
 वात की चोट।  
 ताडित—घाट खाकर।  
 अवज्ञा—निरादर, अपमान  
 सतापित—दुःखी  
 ध्रुव पदवी—अचल पदवी, अचल  
 लोक। ध्रुव की कहानी  
 मृत्यु प्रसिद्ध है।  
 हेतु—कारण  
 उच—ऊँचा।  
 स्थिर—एक जगह ही रहने वाला  
 अपाहिज—दूला, लँगडा, काम  
 करने क अयोग्य।  
 अर्पण—अंगहीन, लँगडा लूला  
 अन्न वस्त्र—भोजन कपड़ा  
 उदार—श्रेष्ठ, सरल  
 पृष्ठ ३०  
 स्मरण—याद  
 उद्गार—मने के भाव एक  
 बारगी कह देना।  
 प्रत्युपकार—उपकार का बदला

वासना—इच्छा  
 देह—शरीर  
 मूसलाघार—बड़े जोर की वर्षा  
 ठाठ—टट्टी, लकड़ी या बाँस  
 का घना परदा  
 तनिक—जरा।  
 वात—वायु  
 वृष्टि—वर्षा  
 अनिष्ट—हानि, बुरा  
 व्यग्र—ज्याकुल, घबराई हुई।  
 अस्वस्थ—बीमार  
 मन मारे—दुखी दिल से  
 दुस्तर—कठिन  
 गौरव—महत्ता  
 प्रष्ट ३१  
 उच्छृणु—कर्ज से मुक्त, शृणरहित  
 शील—स्वभाव  
 प्रेमबद्ध—प्रेम में बँधे हुए  
 सौहार्द—भ्रातृभाव, प्रेम  
 धर्म-मूल—धर्म का कारण।  
 गंध—गू  
 साक्षात् स्वरूप—भूर्ति घर।

## ( सक्षेप )

माता के स्नेह की तुलना ससार में कहीं नहीं है। वह  
 जो अपनी सतान से प्यार करती है उसमें स्वार्थ का लेश नहीं  
 होता। माता ही वषे का सबसे बड़ा गुरु है। गुरु जो पाठ



उसे ताड़ना से सिखाता है, माता वही प्यार से सिरा सकती है। माता अपनी सन्तान के लिए जितने कष्ट उठाती है उतना कोई और नहीं उठाता। इसी को देखकर माता का गौरव पिता से भी सौ गुना माना जाता है।

६

## पाण्डवों का विवाह

( श्री महावीरप्रसाद द्विवेदी )

पृष्ठ ३२,

परिमाजित—मैंजी हुई शुद्ध

पृष्ठ ३३

रमणीय—सुन्दर

दक्षिण पांचाल—हिमालय और

चंचल क बीच गंगा नदी

के दोनों ओर के देश को

पांचाल कहा जाता था।

गंगा के उत्तरप्रदेश को उत्तर

पांचाल और दक्षिण प्रदेश

को दक्षिण पांचाल कहते

थे। इसी देशके राजा

द्रौपदी के पिता दुपद थे।

उत्सव—जलसा

वेदी—किसी शुभ कार्य के लिए

तैयार की हुई ऊँची भूमि।

प्राय विवाह में या यज्ञ में

हवनकुंड के चारों ओर

बनाई जाती है।

कमलनयनी—कमल के समान  
नयन (आँसु) वाली।

अनुपम—बेजोड़, अद्वितीय  
जिसको उपमान दी जा  
सके।

ठाट धाट—सज धज

कर्तव्य—रजेल।

देशदेशान्तर—भिन्न भिन्न देश

ठान ली थी—निश्चय कर लिया।

पका कर लिया था।

धनुर्धारी—धनुष चलान में निपुण

पृष्ठ ३४

प्रत्यंचा—धनुष की डोरी जिस  
में लगाकर बण छोड़ा  
जाता है।

आकाश यत्र—आकाश में फिर-  
ने वाला यंत्र

अधर—आकाश, ग्वाली स्थान

मुनाटा करादा—दिंदोरा पिटवा

दिया

कन्यादान—विवाह में कन्या देना।

चौरस—जो ऊँची नीची न हो,

समतल

रंगभूमि—जलसे का स्थान

शुभ्र—सफेद

चौदोवे—छोटे छोटे मडप

यादव—यदु राजा के वंश के।

पृष्ठ ३५

मचान—घाँस आदि को घाँघ  
कर बनाई गई ऊँची बैठक।

सुहावने—सुन्दर

घरत्राभूषणों—कपड़ों और गहनों

ऐश्वर्य—धन सम्पत्ति

चूर—भरे

ढाह—ईपा, जलन।

यथाविधि—विधि (रीति-रिवाज)  
के अनुसार।

अग्नि को तृप्त किया—अग्नि  
को जलाया।

स्थितिवाचन—मंगल पाठ।

कांचनी—कांचन (चंपा या मोना)  
की माला।

अपूर्व—अनोखा।

लावण्यमयी—सुन्दरी, सुन्द  
रता से युक्त।

पृष्ठ ३६

नरेश—राजा।

अवण कीजण—सुनिए

सुरारण—छेद

तेजस्वी—तेज (कामि) वाला

बालमित्र—बचपन के मित्र

लाक्षागृह—लाख का घर, जो

दुर्योधन न पाइया क लिए  
बनवाया था।

पृष्ठ ३७

भूपित—मजकर

बलधीर्य—बल-पराक्रम

विकट—विशाल, भयंकर

कुंडल—कान का गहना

भुजबन्द—बाजूबन्द

महाधनुर्धात्री—धनुष चलाने में  
बड़े चतुर

सूत—वर्णसंकर जाति, रथ  
हाँकने वाला

पृष्ठ ३८

तिरस्कार सूचक—अपमान जताने  
वाली, घृणा जताने वाली।

सूत पुत्र—सारथि के पुत्र

चेदिराज—चेदिदेश का राजा

भुजा—घाँह

पृष्ठ ३९

फलाहार—फलों का भोजन

वायु भक्षण—वायु खाना

पृष्ठ ४०

मृगचर्म—हरिण का चमड़ा

उत्तरीय—दुपट्टा, चादर

पंठ—गला, स्वर

सूत मागध—भाट

स्तुति-पाठ—प्रशंसा के गीत  
गाना।

अनुल—अद्वितीय, बहुत अधिक	प्रष्ट ४२
निरादर—अपमान	ताक में दम करना—अत्यधिक
पृष्ठ ४१	तंग करना
पांचाल नरेश—पांचाल के राजा	ब्रह्म-तेज—ब्राह्मण का तेज
सजाति—एक जाति के	वत्साह—बढ़ युक्ति जिससे कुछ
भेद्यता—बदस्पत	का कोई मेंच रह किये
	जाता है।

### संक्षेप

पांचालनरेश द्रुपद ने प्रण किया था कि अपनी पुत्री द्रौपदी का विवाह किसी धड़े धनुर्धारी से करूँगा। इसके लिए उन्होंने एक बड़ा धनुष बनाया, और यह घोषित कर दिया कि जं आकाशयत्र के बीचों बीच के सूर्यास से पाँच बाण चलाकर निशाना मार सकेगा उसी से द्रौपदी का विवाह करेगा। स्वयंवर में अनेक दशों से राजा आये हुए थे। ब्राह्मणवेशधारी पाण्डव भी वहाँ बैठे हुए थे। कई राजा निशाना मारने उठे, पर असफल रहे। जब महाधनुर्धारी कण उठे तब द्रौपदी ने कह दिया कि वीरसूतपुत्र से विवाह न करेगी, इस पर अपमानित हो कण बैठ गये। तदनन्तर बाकी राजाओं ने भी अपना बल आजमाया पर जब कोई सफल न हुआ, तब ब्राह्मण वेशधारी अर्जुन उठा, और वह लक्ष्यभेद में सफल हुआ। द्रौपदी ने उसे जयमाला पहनायी। इस पर उपस्थित क्षत्रिय राजा उसे ब्राह्मण समझ मारने को उठे, परन्तु अर्जुन और भीम ने सबको परारत कर दिया। अंत में कृष्ण ने मौका पा सबको शान्त किया।

## साहित्य की महत्ता

पृष्ठ ४४

ज्ञानराशि—ज्ञान के ढेर  
 सचित—इकट्ठा किया हुआ ।  
 निर्दोष—बिना दोष के  
 निजका—अपना ।  
 रूपवती—सुन्दरी  
 कदापि—कभी भी  
 शोभा—सुन्दरता  
 श्रीसंपन्नता—सपत्ति से युक्त होना  
 मानमर्यादा—यश  
 अवलम्बित—आश्रित सहारे  
 जातिविशेष—कोई खास जाति  
 नत्कर्ष—समृद्धि, बढ़ाई, उँचा  
 उठना  
 अपकर्ष—नीचे गिरना, अपमान,  
 बेकदरी  
 भाव—विचार  
 घटनाचक्र—घटनाओं का धारी  
 धारी से आना  
 स्थिति—प्रवृत्ति  
 प्रतिदिग्ध—झाया  
 पृष्ठ ४५  
 प्रथम साहित्य—प्रथमों में लिखा

अशक्ति—अममर्थता ।  
 निर्जीवता—मुर्दापन  
 निर्णायक—कैसला करने वाला  
 एकमात्र—एकल एक  
 अभाव—न होना ।  
 न्यूनता—कमी  
 किंवा—अथवा  
 अपूर्ण सभ्य—आधी मस्य ।  
 क्षमता—योग्यता, सामर्थ्य ।  
 आईना—शीशा, दर्पण  
 तत्काल—उभी समय, तुरत  
 भूतकाल—धीता हुआ समय  
 क्षीण—दुर्बल, कमजोर  
 अचिरात्—बिना देर के, शीघ्र ही  
 नाशोन्मुख—नाश की तरफ  
 मुँह किये ।  
 रसास्वादन—रस का चखना ।  
 भस्तिष्क—दिमाग  
 यचित—हीन, रहित  
 निष्प्रेय—निश्चेष्ट, जिसमें कोई  
 किया-या काम न हो ।  
 स्वाद्य—खाने योग्य, भोजन  
 कालान्तर—कुछ समय के बाद  
 निर्जीव—मुरदा ।

पृ० ४६

सतत—निरंतर, हमेशा  
 सेवन—आराधना, उपयोग ।  
 नवीनता—नयापन  
 पौष्टिकता—बल देने की शक्ति  
 उत्पादन—पैदा करना, बनाना  
 विकृत—बिगड़ा हुआ  
 शृणु—धीमार  
 विकारमल—खराबी में युक्त  
 निर्भ्रान्त—धम रहित जिसमें  
 कोई सन्देह न हो ।

यथेष्ट—इच्छा के अनुसार  
 साधन—कारण, उपाय  
 श्रमपूर्वक—परिश्रम से  
 सत्साहित्य—अच्छा साहित्य  
 हत्या—नाश  
 दयनीय—दया के योग्य  
 आडम्बर—ढोंग  
 विसर्जन—त्याग  
 चमल पुथल—एक दम बदल  
 डालना

अनुहार—संवृणित, पुराना ।

पृ० ४७

हानिकारिणी—हानि करने वाली  
 रुदिर्या—प्रथा, आस, रिवाज  
 कथाटन—कथा के फैंकना

स्वातन्त्र्य—स्वतन्त्रता  
 व्यक्तिगत—एक आदमी की  
 पतित—गिरे हुए ।  
 पुनरुद्धान—दुबारा उठाना  
 प्रभुता—मलकियत, स्वामित्व  
 ताकत  
 सत्ता—दृष्टि, अधिकार  
 उन्नयन—ऊपर उठाना ।  
 पादाक्रान्त—पैरों से धुचला हुआ  
 मस्तक—भाथा, मिर  
 संजीवनी—जीवन देने (प्राणदेन)  
 वाली  
 धाकर—घर खसाना ।  
 संवर्धन—बढ़ाना  
 अज्ञानान्धकार—अज्ञान का  
 अन्धकार  
 गर्त—गढ़ा  
 अस्तित्व—सत्ता, दृष्टि ।  
 महत्त्वशाली—महत्त्व (बहुपन)  
 से युक्त  
 अभिवृद्धि—बढ़ती ।  
 अनुराग—धेम  
 समाजश्रेणी—समाज में द्वेष  
 करने वाला ।  
 क्लिष्टता—और अधिक क्या  
 आत्महत्या—अपने आपकी मारने  
 वाला

## ( मरल भाषा )

ज्ञान के ढर क इकट्टे किये हुए रजजाने को साहित्य कहते हैं । चाहे किमी भाषा में सब तरह क विचार प्रकट किये जा सकते हों और वह बिलकुल निर्दोष भी हो, तो भी उसका यदि अपना साहित्य नहीं है तो सुन्दरी भित्तिारिन की तरह कोई उसका आदर न करेगा । उसकी सुन्दरता, उमका धनी होना और उसका यश सब उमके साहित्य पर ही आश्रित हैं । किसी जाति के उठने और गिरने की उसके ऊँच और नीचे भावों की, उमके धार्मिक विचारों और समाज के सगठन की, उसके इतिहास की घटनाओं की और उसकी राजनीतिक अवस्था की परछाईं यदि कहीं दिखाई देती है, तो उसके प्रथम-साहित्य में ही — अर्थात् किसी जाति के साहित्य क प्रथो स ही उस जाति की अवस्था का पूरा पता लग सकता है । किमी समान की ताकत या उसमें जीने की शक्ति अथवा समाज की दुर्बलता और मुर्दापन और समाज की सभ्यता तथा जगलीपन का फैसला करने वाला केवल साहित्य ही है । जिस जाति में साहित्य नहीं अथवा साहित्य की कमी दिखाई दे, आप यह बिना किसी शक के निश्चित समझ लीजिए कि वह जाति जगली अथवा आधी सभ्य है । जिस जाति के समाज की जैसी अवस्था होती है, उमका साहित्य भी वैसा ही होता है । जातियों की योग्यता (सामर्थ्य) और उनकी जीवन शक्ति यदि कहीं माफ-माफ दिखाई देती है तो वह उनके साहित्य रूपी दर्पण में ही । उस दर्पण के सामने जाते ही हमें तुरन्त मालूम हो जाता है कि अमुक जाति की जीवनी शक्ति इस समय कितनी और कैसी है और घाते हुए समय में कितनी और

कैसी थी। आप भोजन करना बंद कर दें या कम कर दें तो शीघ्र ही आपका शरीर दुर्बल हो जायगा और नष्ट होने लगेगा इसी तरह यदि आप साहित्य के रस को घराना—साहित्य को पढ़ना—छोड़ दें तो आपका दिमाग निश्चेष्ट होकर धीरे धीरे किसी काम का न रहेगा। शरीर व जिस अंग में काम न लिया जाय, उस अंग की काम करने की शक्ति थोड़ा दिन में नष्ट हो जाती है। शरीर का भोजन साधारण ग्यान की वस्तुएँ हैं और दिमाग का भोजन साहित्य है। इस लिए यदि हम अपने दिमाग को निश्चेष्ट और कुछ समय के बाद मुँह के समान नहीं कर देना चाहते तो हमें सदा साहित्य का भवन (पढ़ना लिखना) चाहिये और उसे पुष्ट करने के लिए नया साहित्य बनाये रहना चाहिए। पर याद रखिये कि खराब भोजन से जैसे शरीर बीमार होकर खराब हो जाता है, उसी तरह खराब साहित्य से दिमाग भी खराब होकर बिगड़ जाता है। दिमाग का बलवान और सामर्थ्यवान होना अच्छे साहित्य के ही महार है। इसलिए हममें कोई सदेह नहीं कि दिमाग को इच्छानुसार बढ़ाने का उपाय एक मात्र अच्छा साहित्य है। यदि हम जीवित रहना है और सभ्यता की दौड़ में दूसरी जानियों का घराबरी करनी है तो हमें परिश्रम करके, बड़े जोश के साथ अच्छे साहित्य को पैदा करना और प्राचीन साहित्य की रक्षा करनी चाहिए और यदि हम अपने मानसिक जीवन का नाश करके आजकल की दया के योग्य ( गिरी हुई ) दशा में पड़ा रहना अच्छा समझते हों तो आज ही हम 'साहित्य सम्मेलन' (हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग—यह मरथा हिन्दी प्रचार के लिए बनी है। इसका कानपुर के वार्षिक अधिवेशन में सभापति के





## विषय सर्प [जहरीले साँप]

श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी

प्रश्न ४८

मर्यादहीन-जिसरी गिनती १  
हो सक असंग्य

फीट-कॉर्से

पतंग-पतंगा

समीम-सीमावाली, सीमित

सैमनित्र-प्रकृति क

अधिकारी-अधिकतर

जीवनचर्या-जावन क काम काय

विध्वंस-धम रहित

उद्भिज-प्रकृतता आदि जो भूमि

फोड़कर निकलते हैं, धनस्पति

प्रश्न ४९

व्यापक-सब जगह फैले हुए

समरा-सारा

नियमन-कायदे में बाँधना

एक नियम में बाँधना

अचिन्त्य-जो सोचा या समझी

न जा सक ।

शक्तिमत्ता-शक्तिवान होता

नास्तिक-ईश्वर को न मानन वाले

जगत्रियन्ता-जगत् को नियम स

बांधा वाला

कर्ता-बनान वाला

जड़ प्रकृति-जिसमें ५ शक्ति

नहीं गिनी प्रकृति

आसन-स्थाप

पुरुष-परमात्मा, सृष्टि की

व्यपत्ति करने वाला

परनिमाता-घर बनाने वाला

विनाश-धीरे धीरे ध्वंस

विचार कता विचार करनेवाला

कोटि-दरजा

प्रश्न ५०

मस्पादर-डकट्टा करना

लौकिक-इस लोक संधी

धम-धोतत

अन्नमास-अन्न का टुकड़ा

जैकडा-एक प्रकार का कौवा

प्रश्न ५१

अकमण्य-निकम्मा आलसा

प्रयास-कोशिश

निविष-विना लहर का

जलधर-जल में रहने वाले

दृष्टा-दाढ

प्रष्ट ५२

नागिन-सापिनी

शिसङ्कृति-भारन की प्रकृति

दुषित-क्रुद्ध, गुम्से

उत्थित-उठा हुआ

कोपकराल-क्रोध से भयंकर

दहलना-काँपना

मद्य-भोजन

प्रचुरता-अधिकता

उपभेद-छोट छोटे भेद

कंडलाकार-गोला

प्रष्ट ५३

क्रोधाविष्ट-गुस्से से भरा

शैर्य-लवाई, विस्तार

काहिल-आलसी

प्रष्ट ५४

ध्वनि-आवाज

तनुमय-चाल से युक्त

प्रष्ट ५५

गाम-कले के टठल का गूना

## ( संक्षेप )

हिन्दुस्तान में साँपों की ३०० जातियाँ हैं, उनमें से कुछ जातियाँ विषधर और कुछ विषरहित हैं। जलचर साँप मभी विषधर हैं। स्थलचर साँपों में हिन्दुस्तान में दो प्रकार के काले साँप, चारह प्रकार के करेब और सात प्रकार के भूरे साँप पाए जाते हैं। काले नागों में से एक जाति बहुत बड़ी होती है, उसे नाग राज कहते हैं। यह साँप सबसे अधिक भयंकर होता है, और कबल घने जंगलों में मिलता है। साधारण जाति के काले साँप प्रचुरता से हर जगह पाए जाते हैं। करेब जाति के साँप का रंग कुछ भूरा होता है, उसके शरीर पर थोड़ी दूर पर छल्ले से घने रहते हैं। यह साँप बस्तियों में ही अधिक होता है। यह विषधर होता है। घामन जाति के साँप बहुत कम देखने में आते हैं। भूरे साँप बहुत अधिक पाए जाते हैं, ये भागते बहुत कम हैं। इनके भी कई उपभेद हैं।

विषय माँपों के सिर में एक छड़ी सी थैली होती है  
 काटते समय न्याय पटन ही थैली का सुग खुल जाय  
 और विष हानो में पतुष जाना है। सप व विष के प्रभाव को  
 करन को आपतक अनर आशुष्यो, वती हैं, पर पूरी सफल  
 किसी ने भी नहीं मिला। और काटन ही कटी हुई जगह  
 कुछ दूरा उपाय चाह थोड़ा अन्तर पर दो घड़ पतली रस्सी के  
 लगा देना चाहिए। एक करन में विष भाग नहीं बढता। सि  
 वन जाह को उक्त साधु में काट कर, वहाँ से गुन निकाल दे  
 चाहिये या एक जाह पर गरम लाह में भाग देना चाहिए।

हितसंपादन-भलाई करना

पृष्ठ ५६

उपार्जन-इकट्टा करना

शौर्य-शूरता, वीरता

मग्राम-लड़ाई

युद्धविद्या विशारद-युद्ध विद्या  
जानने वाला

पृष्ठ ६०

दूरदशिता-दूर की बात सोचने  
का गुण, दूरदेशी

राष्ट्रीय विप्लव } राजनीतिक  
राष्ट्र विप्लव } क्रांति उथल  
राज्य विप्लव } पुथल

अधिष्ठाता-मुखिया

शासन-हकूमत

भ्रातृभाव-भाईपन

असह-न सहने योग्य

यातनाएँ-पीड़ाएँ

निर्दीप-बेकसूर

प्रजातन्त्र-बहु शासन प्रणाली

जिस में कोई राजा नहीं होना,

प्रजा ही समय समय पर अपना

प्रधान शासक चुन लेती है।

अवहेलना-अपमान

धर्मानुयायी-धर्म को मानने वाले

पृष्ठ ६१

दृढयुद्ध-लड़ाई

आत्मरक्षा-अपनी रक्षा

वयोवृद्ध-उमर में वृद्धे

तरुण-युवक

दुरचरित्रता-घटचलनी, नुरा चरित्र

अनाचार-दुराचार, घटचलनी

लज्जाहीनता-लज्जा न होना

अह्न-विभाग

विच्छ्र रत्न-बेसिलमिला, जिसमें

कोई सिलसिला या क्रम न हो

पद-अधिकार

अलौकिक-अद्भुत

अस्थिरता-जब कोई स्थिरता

या नियम न हो

शामन परिपाटी-शासन का

तरीका

अराजकता-अशान्ति

विकराल-भयकर

त्रास-डर

पृष्ठ ६२

संकीर्णता-कमी

दक्षता-कुशलता, चतुराई

बहिष्कृत-(समाज में) बाहर

निकाले हुए

समस्याएँ-उलझन

अधिरा-निरंतर, बिना विराम के

पृष्ठ ६३

निरकुशता-बिना किसी प्रकार

के डर या धधन का होना,

जो दिल में आए कर देना

काराधाम-जेल

बाध-बंधा हुआ

७४ ६५

आजन्म-जन्म भर  
 अधिवनि-मासिक  
 राज्याभिषेक-राज्य पर बैठना  
 सम्राट-राजाओं का भी राजा  
 पराजित-फारा हुआ  
 मंथ-गुट्ट  
 रण क्षेत्र-युद्ध का मैदान  
 क्विन्मात्र-कुट्ट भा  
 स्वार्थ सिद्धि-स्वार्थ का सिद्ध  
 करना  
 युद्ध की प्रचण्ड अग्नि में मौजूद  
 दिया-युद्ध में मरवा दिया

७४ ६६

परास्त किया-भगवा  
 शोनीय-दुष्ट के गोय  
 पंचला-राज्य लगना, संवत्ति  
 सुराज्य-भारत राज्य  
 चागडार-लगाम, कामकाजका भार  
 चुर ही गड र्थी-टूट गई र्थी  
 स्या उपरता-गुणगती, अवन  
 मालय सिद्ध कराने बिना  
 रण-अधिकार  
 मात्रा-उपाय  
 अमर-पान न मर, या न मिते  
 युवा-जवान

(मञ्जर)

१८वीं शताब्दी में प्रारंभ में राज्यक्रान्ति हुई थी, जिस  
 में वहाँ के राजा और राजपरिवार में सन्ध्र रखने वाले  
 आदमियों को बर्तन कर दिया गया था। स्वतंत्रता, समानता, तथा  
 भ्रातृभाव व भाव ही राज्यक्रान्ति के कारण थे, अर्थात् जनता  
 में यह विचार पैदा हो गये थे कि सब पुरुष स्वतंत्र हैं सब  
 पुरुष एक समान हैं, ऊँच नीच का भाव छोड़ कर सब में भाई  
 चारा होता चाहिये, इन्हीं भावों के कारण राज्यक्रान्ति हुई।  
 इन विचारों के कारण रईसों को फौसी दी गयी पादरियों की  
 संपत्ति छीन ली गई, और प्रजातंत्र राज्य की स्थापना हो गई  
 परन्तु एक विचार का राष्ट्रीय दल दूसरे विचार के राष्ट्रीय दल से  
 हमेशा लड़ता रहता था। इस कारण राज्य में कोई सिलसिला

नहीं था। इस गड़बड़ी के कारण फ्रांस की अवस्था दिन पर दिन खराब होती जाती थी। एसी अवस्था में नैपोलियन बोना-पाट ने वहाँ का शासन अपने हाथ में लिया। नैपोलियन कार्सिका नामक टापू के एक साधारण वकील के घर पैदा हुआ था, उसकी माता इतनी शिक्षित न थी, पर बड़ी वीर, दृढ़प्रतिष्ठा और विचारशील थी। ये सब गुण नैपोलियन में आये थे। वह एक साधारण सैनिक से एक शासक बन बैठा। उस समय उसके सामने कई प्रश्न थे, राज्यक्रांति में जिन रईसों का बहिष्कार किया गया था, वे घट्यन्न करते रहते थे, उनके पड्यन्त्रों को रोकना, राष्ट्रीय विचार के व्यक्तियों के दिलों का असन्तोष दूर करना और उन पादरियों को जिन की संपत्ति लूट ली गई थी, शान्त करना। ये सब फठिन उलझनें उसके सामने थीं। नैपोलियन ने शीघ्र ही काम संभाल लिया। वह कड़े परिश्रम से भी न थकता था। छोटी-छोटी बातों को वह स्वयं देखता था। इन सब के नियंत्रण के लिए उसने पुलिस को बहुत से अधिकार दे दिये थे। व्यक्तिगत स्वतंत्रता को बहुत कम कर दिया। सपादकों को राज्य के विरुद्ध लेख लिखने पर फड़ा दण्ड दिया जाता था। वह ज़िंनों को ऊँची शिक्षा और स्वतंत्रता न देना चाहता था और उनका बहुत आदर न करता था।

घर में शान्ति स्थापन करने के बाद उसने बहुत से बाहर के देशों को जीत लिया, इटली, स्विट्जरलैण्ड और हालैण्ड फ्रांस के अधीन हो गये। परन्तु अन्त में वाटरलू के मैदान में अगरेषों से हार गया। इयूक आफ पैलिंगटन के

नेपोलियन को कैद कर सेंटहेलेन नामक टापू में भेज दिया ।  
और वह वहीं एकान्त में सन् १८२१ में इस दुनियाँ से  
चल बसा ।

नेपोलियन का साम्राज्य यद्यपि अधिक वर्ष नहीं रहा पर  
यह एक असाधारण पुरुष था, फ्रांस की उन्नति का बहुत सा  
श्रेय उन्हीं को है और इतिहास में उसका नाम सदा अमर  
रहेगा ।

१३

## देवचाला की मृत्यु

( लेखक—श्रीरुत अयाध्याखिह उपाध्याय )

प्रश्न ६७	विना बेन-समय से पहले
बयार-वायु हवा	घरदुआर-घरद्वार, घरबार
प्रश्न ६८	नौबी और लँगोटी-साधुओं के
रुख-पेड़	लिए आवश्यक चीज
ठौर-स्थान	मुरत-याद
किरिया फरम-भरने के याद का	प्रश्न ७१
अन्तिम मंत्रकार	कलेजा परड़ना-दु खित होते
प्रश्न ७०	रहना
तिरिया-स्त्री	भभूत-राग्य
जग में नाता तोड़ लिया-सत्तार	प्रश्न ७२
स अलग होगया	जोन-ज्योति प्रकाश
जी के उच्चाट-दिल खराब होने से	खीमल-दूर होगई
	खोटी छुटा कर-चुराई दूर कर

( सज्ञेप )

देवचाला और देवनन्दन बचपन के साथी थे । दोनों एक

साथ खेले थे। किशोरावस्था में दोनों एक दूसरे को चाहने लगे। परन्तु देवनन्दन छोटे कुल का था, अतः देवबाला के पिता ने उसकी शादी अनपढ़, निकम्मे, निठल्ले पर कुलीन रामनाथ के साथ कर दी। निराश हो देवनन्दन घरबार छोड़ सन्यासी हो गया। रामनाथ शराबी भी था, वह देवबाला को छोड़ कर स्वयं कहीं निकल गया। धीरे धीरे देवबाला के सम सम्बन्धी इस लोक को छोड़ गये। इन आपत्तियों के कारण देवबाला चारपाई पर पड़ गयी। देवनन्दन ने उसकी बड़ी सेवा की। फिर वह रामनाथ को भी ढूँढ लाया। पर इतने में देवबाला भी इस ससार से चल बसी। धीरे धीरे सब देवबाला को भूल गये, परन्तु देवनन्दन साधु होने पर भी उसको भुला न सका। वह समझता था कि देवबाला की बुरी दशा सामाजिक कुरीतियों के कारण हुई, अतः वह देश की इन बुरी चालों को दूर करने के लिए सदा इधर-उधर घूमता रहता था। एक दिन वह भी इस धरती को छोड़ गया। तब लोग यही कहते थे क्या फिर कोई देवनन्दन जैसा माई का लाल जन्मेगा।

१४

## सभापण में शिष्टाचार

(लेखक—भी कामताप्रसाद गुरु)

पृष्ठ ७३  
सभापण-घातचीत

व्याकरणसम्मत-व्याकरण के  
अनुसार ठीक



सारगभित-भार म युक्त, अम  
लियन लिण द्रुण

विनोद-हँसो

विद्वत्तासूचक-विद्वत्ता बताने वाला

पृष्ठ ७४

कहें कृपाराम सध सीखिबौ

निकाम एक बालिका न सीखो

सध साखी गयी धूल में-कृपाराम

कवि कहो हे कि सध बुद्ध

सीखन पर भी यदि बोलना

न सीखा तो सध व्यर्थ है ।

शिष्टाचार-भल आदमियों का

सा वर्ताव

भोना-मुनने वाला

मर्यादा-पत्र

अनुबन्ध-लायक, अनुमार

घनिष्ठ परिचय-बहुत अधिक

जान पहचान

अत्यन्त प्रतिष्ठित-बहुत अधिक

प्रतिष्ठा (आदर) वाले

पृष्ठ ७५

बका-बोले वाला

अनुराग-प्रेम

कटाज-साना

आक्षेप-निंदा, दोष लगाता

व्यंग्य-ताना

तपालभ-उत्तहना

अश्लीलता-गंदापन

मुक्त-धचाकर, दूर

प्रहम्मन्यता-अहंकार, घमट

कटु-कड़वा, कठोर

वय-अर

आग्रह-ओर

पृष्ठ ७६

आत्मप्रशंसा-अपनी बढ़ाई

यथासमय-जहाँ तक होसक

देव-आदत

उपमा-मिलान, किसी वस्तु के

रूप रंग अथवा गुण की दूसरी

वस्तु के रूप, रंग और गुण

में तुलना करना । जैसे उसका

मुख चन्द्र के समान है, यहाँ

मुख और चन्द्रमा में समानता

बताई गई है ।

रूपक-सादृश्य समागता ।

अशिष्टता-जो भले आदमियों

का सा व्यवहार न हो ।

अनुचित-ठीक नहीं ।

विषय-बात प्रसंग

इन्द्रापूर्ति-इन्द्रा पूरी करना

प० ७७

क्षतव्य-क्षमा करने के योग्य

अकारण-बिना कारण के

परनिन्दक-दूसरे की निन्दा

करने वाला

क्षमा-प्राचना-क्षमा माँगना

आवेश-जोश  
 मौन धारण-चुप रहना  
 परामर्श-सलाह  
 पृ० ५८  
 भयंकरता-जिससे डर लगे  
 उल्लेख-विक्र, वर्णन  
 विरत करना-हटाना  
 श्वाभास-पता  
 पृ० ७९  
 गहन-मूढ़  
 विचार स्वातंत्र्य-विचारों की  
 स्वतंत्रता  
 वैयक्तिक धारणा-एक व्यक्ति का

निश्चय, निज निश्चय  
 भविष्यता-भाषा का ज्ञान  
 गृहासयोग्य-हूँसी के लायक  
 पृ० ८०  
 उर्दूदानी-उर्दू में प्रवीणता  
 अनुरोध-तकाजा  
 पृ० ८१  
 संसर्ग-साथ  
 विचड़ी संभाषण प्रथा-मिली  
 जुली भाषा (उर्दू हिंदी, या हिंदी  
 अंगरेजी) में बोलने का रिवाज  
 आधिपत्य-अधिकार  
 मदेम-भटा, भौंडा

### ( सक्षेप—सभाषण के कुछ नियम )

घातचीत इस प्रकार करनी चाहिये जिससे सुनने वाला  
 उकता न जाय ।

घातचीत में ताना, उलहना, गदापन आदि न आना  
 चाहिये ।

जब तक आवश्यकता न पड़े तब तक किसी की जाति  
 कुल आदि के बारे में पूछताछ न करनी चाहिये ।

घातचीत में जहाँ तक हो सके अपनी बड़ाई न की जाय ।

दूसरों की घातचीत में दखल देना अशिष्टता है ।

किसी अनुपरिचित सज्जन की रिना कारण निंदा करना

में क्रोध के आवेश को रोकना चाहिये ।

रोगी मनुष्य स अधिक घातपीत करना या समके रोग को बढ़ा कर बढ़ना हानिकारक है ।

जिस समाज स घातपीत कर रा हों, उसके अनुसार ही भाषा बोलनी चाहिये ।

वचनधारण दोषों स जहाँ तक हो सक धरना चाहिये ।

१५

## हिन्दी में विराम-चिह्नों का दुरुपयोग

पृ० ८२, ८३

सामयिक-आज कल स  
विशेष-ज्ञानवान, जीव  
अर्थबोध-अर्थ का ज्ञान  
मनोविकार-मन में उत्पन्न होने  
वाला विकार क्रोध, लया, आदि

पृ० ८४ ८५

यथार्थ-वसी अर्थको बताने वाला  
भ्रामक-भ्रम पैदा करने वाला  
एच्छक है-अपनी इच्छा पर है  
यथेन्द्र-मनमाना

द्रव्य-रूपया पैसा

सार्धक-सफल

विजातीय-दूसरी जाति के

पृ० ८६

संवादमय-मानचीत वान

सर्वसम्मत-सध में माना गया

अमानुशी-मनुष्य की शक्ति से  
धार का

पृ० ८८ ८९

धारवर्ध-वातु का अर्थ  
निरपवाद-जिमका विरोध न हो  
शतुपरिवर्तन-शतु का बदलना  
समुषयबोधक-जो अव्यय एक  
वाक्य का संबंध दूसरे  
वाक्य स मिलाना है, उसे  
समुषयबोधक कहते हैं ।

प्रक्रिया-युक्ति तरीका

संयुक्त वाक्य-बहु वाक्य जिनमें  
दो या दो से अधिक सरल  
अथवा मिश्रितवाक्य परस्पर  
एक दूसरे पर आश्रित न  
होकर मिलते हैं

कोष्ठकगत-कोष्ठ म आया हुआ

पृ ९०

वैयाकरण-व्याकरण को जानने  
वाला  
दुर्गति-बुरी हालत ।

पृ ९२

सपत्ति शास्त्र-वह शास्त्र जिसमें  
रूपये की प्राप्ति, रक्षा और  
वृद्धि का विधान हो

## ( संक्षेप )

घातचीत करने में हम जहाँ तहाँ थोड़ा बहुत ठहरते हैं,  
लिखने में उन जगहों पर विराम चिह्न डाल देते हैं। ऐसे ही  
मनोभावों को प्रगट करने के लिए लिखने में भिन्न भिन्न चिह्नों  
का प्रयोग किया जाता है। इन चिह्नों को विराम चिह्न कहते  
हैं। अँगरेजी भाषा की देखादेखी हिन्दी में भी इनका  
प्रयोग बहुत बढ़ गया है पर कई लेखक इनका दुरुपयोग करते  
हैं, विद्वान् लेखक ने यही भली भाँति दर्शाया है।

१६

## शुक की कथा

(लेखक—धीरुत गदाधर सिंह)

पृ ९४, ९५

बाहुबल-बाहुओं का बल  
अरोप-सारे  
अक्क-बिना शोक-शोक का  
पृथ्वीनाथ-पृथ्वी के मालिक  
आकर-रखाना, स्थान ।  
पश्चि रत्न-पश्चिमों में रत्न के  
समान  
पद्मविन्द-चरण रपी कमल

राजाज्ञा-राजा की आज्ञा  
हेममय-सोन के  
आभरण-गहने  
मणिमय-मणियों के  
सुमेरुगिरि-पुराणों के अनुसार  
एक पहाड़ जो सोने का कड़ा  
जाता है, और पर्यतों का  
राजा भी माना जाता है  
भूधरमण्डल-पहाड़ों के मण्डल ।  
श्री-शोभा

पाल

- जमःटा-द्वैरान  
 निरवना-दृष्टि, गडर  
 वृम ६६, ६७  
 दृष्टिपात-गडर हालना  
 रूप लावण्य-रूप-मौन्द्य  
 तर्कना-विचार  
 अनहाता-ग दान वाला, असभ्य  
 संभव-उपति चम्म, वैदाशाता  
 सकल-मव  
 शाम्भवेत्ता-शाम्भ्रा का पाता  
 वाला  
 मद्राणा-अवद्या धानन वाला ।  
 धनाभिज्ञ-कलाओं का ज्ञान  
 वाला  
 पंठाम समती है-प्रधानी याद है ।  
 गुणवादा-गुणियों का आन  
 करन वाला ।  
 अनुपह-कृपा  
 कृतार्थ-सफल मनोरथ  
 अर्थयुक्त-अर्थ वाला, तिनका  
 अर्थ हो  
 विस्मित-द्वैरान  
 आहार-खाना  
 निद्रा-सोना  
 वाक्शक्ति-बालने की ताकत  
 व्यापार-व्यवहार  
 मनोवृत्ति-विचार ।  
 ताई-समान
- अतायाम-विता कौशिरा क  
 वृ ९८ ९९  
 मभाभंगमूषक-मभा की समा  
 का ममय हो गया है  
 इम की सुरता द  
 वाला  
 मध्यह्न कान-दोपहर  
 अपर-दूमर  
 ताम्युक्तवाहक-पान रिराने  
 बाल गौर  
 अन्तर-बाद  
 पीढ़-लट  
 शयनागार-सात का कमरा  
 सिद्ध-एक प्रकार का दवता  
 करोवर-शरीर  
 आराधना-उपासना  
 उद्वेग-धवराहट  
 भरतरणह-भारतवप  
 विध्याचल-विध्यपवत  
 दशानन-दस मुँह वाला रावण  
 निशाचर-राक्षस  
 जानकीवियोग-मीता की जुदाई  
 सजलनयन-आँसु भरी आँखें  
 अनुताप-दुःख  
 लताद्रुमादि-बेल, पेड़ आदि  
 सरोवर-तालाब  
 शाल्मली-सैमल

छतनार-छत की तरह फैली हुई  
 गगामंडल-आकाश  
 पेड़ी-पेड़ का तना  
 चनुदिक-चारों ओर  
 पुनगी-युक्त या पीधे का अगला  
 हिस्सा  
 खोता-घोसला  
 पल्लवमय-पत्तों से युक्त  
 पृ १००, १०१  
 दिग्दिगान्तरों-भिन्न भिन्न दिशों में  
 दैवयोग-भाग्य से  
 उपरान्त-बाद  
 प्रमथ पीड़ा-बच्चा जनने की  
 पीड़ा  
 आहार द्रव्य-खाने का सामान  
 रक्तवर्ण-लाल रंग का  
 परिष्कृत-साफ  
 मृगया-शिकार  
 बनैले-जंगली  
 महिष-भैंसे  
 कलरव-चहचहाहट  
 व्याध-शिकारी  
 भूतमध्यस्थ-भूतों से विरा हुआ  
 भैरव-महादेव  
 दूत-संयुक्त-दूतों से युक्त  
 कालान्तक-यमराज

रुधिर-रून  
 पृ १००, १०३  
 असुर-राक्षस  
 दुर्कर्म-दुरे काम करने वान  
 मत्कर्म-अच्छे काम  
 मृणाल-रमल की डही  
 असाध्य-कठिन  
 निसेनी-सीढ़ी  
 अचिन्तित-न सोची हुई  
 करकराल-सर्प-सर्पिण्डे समान  
 भयंकर हाथ  
 कम्पित-काँपने हुए  
 चरण-पैर  
 पृष्ठ १०४, १०५  
 कालपास-मौत के पास से  
 तमाल-एक ऊँचा सुन्दर सदाबहार  
 वृक्ष, जो काले रंग का होता है  
 शावक-बच्चे  
 पिपासा-प्यास  
 मृत्तिका-मिट्टी  
 लिप्त हो गया-भर गया  
 जीवन आशा-जीने की आशा  
 म्वत-अपने आप  
 विकलेन्द्रिय-विकल (बेचैन)  
 होगई हैं इन्द्रियाँ (हाथ पैर)  
 जिसकी  
 पत्नी विरह-स्त्री की जुदाई  
 परित्याग-छोड़कर

१४-१५  
 १५-१६

उत्तम करना-नपाना

शुक्र-भूया

त्रिपुण्ड-राज की तीन बड़ी बही

रखा प्रा का निलक, जा

शैव लोग लगाने हैं

स्फटिक-विल्दौर पत्थर

कृष्ण-काला

शान्तिसागर-शान्ति के सागर,

अत्यधिक शांत

पार्वती पल्लव-पार्वती के पति,

महादेव

टहलुए-सबक नौर

पृ १०६, १०७

मानस-तालाब

नलिनीपत्र-रुमलिनी का पत्ता

आर्य-जल पूर, मूल आदि पूजा

में देने योग्य पदार्थ

पुगीत-पवित्र

कुसुमित-पुष्पित, फूलों से लदे

पल्लवित-पत्तों से युक्त

भूमि स्पर्श करते वे-पृथ्वी को

छूने थे

लवंग-लौंग

मधुप-भौरा

चंपक-चपा

किशुक-पलाश, टाक

मल्लिका-भोतिया, बेला

मालती-एक प्रकार की घेल

जिसका फूल सफेद होता है-

मलिन-मैली

होमगंधमय-हवन की गा

(सुशयू) से युक्त

निराङ्ग-बिना डर

रक्त-पलव संपन्न-लाल लाल;

पत्तों में युक्त

रक्षारोऊ-लाल अशोक का पेड़,

ललाट-भाधा

पञ्जर-ऊपरी धड़ (छाती) की

हड्डियों का घेरा, टटरी

श्रवण संयुक्त-कान

श्वेत लोम-सफेद बाल, रोदें

प्रवाह-स्रोत, धारा

क्रोध-भुजग-क्रोध रूपी साँप

महामंत्र-प्रभावशाली मंत्र जिससे

साँप को रश म किया जाता है-

सत्पथदर्शक-अच्छे मार्ग को

दिखाने वाले

आश्रय-सहारा

विस्मय-आश्चर्य

मात्सर्य-ईर्ष्या, डाढ, जलन

शृगाल-गीदड़

पृष्ठ १०८, १०९

त्रिकालदर्शी-तीनों कालों की

बात जानने वाले ।

धरतल पदार्थ की भाँति था—  
 हथेली में रखी हुई वस्तु की  
 तरह था—अर्थात् जिस तरह  
 हाथ में रखी सभ चीजों का  
 ज्ञान होता है, इस तरह उन्हें  
 सभ चीजों का ज्ञान था।  
 उद्वेगजनक-घबराहट पैदा करने  
 वाली।  
 देवार्चन-देवताओं की पूजा  
 आशोपान्त-शुरू से अंत तक  
 रक्तचंदन-लाल चंदन  
 लोहित-वर्ण सूर्य-लाल, ग्वन के  
 से रंग का सूर्य  
 समारि-अधकार का शत्रु, सूर्य

स्वर्ण वण-सोने के रंग का।  
 पत्ररूपीहस्त-पत्तों रूपी हाथ।  
 विहङ्गो-पक्षियों  
 पृष्ठ ११०  
 अग्निहोत्र-हवन  
 तिमिरनाशक-अँधेरे को नष्ट करने  
 वाला, सूर्य  
 षष्टिगारर हुई-नखर आई  
 सुधाधर-चंद्रमा  
 कलामात्र-अश (टुकड़ा)मात्र  
 मण्डल-पूरा गोला  
 कोई-कुमुदिनी  
 समीर-हवा  
 आरुहादित-प्रसन्न

### ( सरल भाषा तथा संक्षेप )

शूद्रक नाम का एक बड़ा बुद्धिमान राजा अपनी भुजाओं  
 के बल और पराक्रम से बारी बारी से सार देश को जीतकर  
 वेप्रवती नाम की नदी के किनारे विदिशा नामक नगरी में बिना  
 रोकटोक के राज्य करता था। एक दिन राजसभा में द्वारपाल  
 ने आकर कहा—“पृथ्वी के मालिक! दक्षिण देश से एक तोता  
 लिए हुए एक चाडाल कन्या आई है। वह कहती है कि मेहा-  
 राज सभ रत्नों के खजाने है इसलिए मैं यह पक्षियों में रत्न भी  
 उनकी सेवा में भेंट करने लाई हूँ। आशा हो तो वह आकर  
 आपके चरण कमलों का दर्शन करे। राजा ने आशा द दी।



क्या ने समाग्रहण में घुमकर देखा कि ऊपर एक मने हर चदोवा टंगा है ।

नीच राजा सोन के गहने पहने हुए एक मणियों के सिंग सन पर बैठा है । उसके चारों ओर सभासङ्गण अपन अपने उचित स्थान पर बैठे हैं । उस समय की शोभा ऐसी जान पड़ती थी मानो सोन का पहाड़ पर्वतराज सुमेर और पर्वतों के बीच में अद्भुत सुंदरता धारण किये बैठा हो । चाहाल कन्या ने समाग्रहण पर छड़ी मारकर सबकी नजर अपनी ओर खींच ली । महाराज ने भी नजर डालकर देखा कि एक बूढ़ा मनुष्य और पीछे विजरा हाथ में लिए एक बालक और उन दोनों के बीच एक बड़ी सुकुमार कन्या खड़ी है । कन्या किसी तरह भी चाहाल कुल की न जान पड़ती थी । राजा उमका अनुपम मौख्य देखकर दंग हो एकटक उसकी ओर देखने लगे, और राजा ने यह सोचने लग कि लाग इसे नीच जाति की समझकर न चुपका, यही मोक्ष कर विधाता ने शायद इस इतना रूप दिया है । यदि यह कारण न होता तो इतनी सुंदरता और इतने रूप का होना भी कठिन है, और फिर चाहाल के घर में तो ऐसी सुन्दरी का जन्म होना भी असंभव है आर यह आश्चर्य का विषय है । राजा यह सोच रहे थे । इतने में बूढ़ा बोला—महा राज यह सोचो सब शास्त्रों को जानने वाला, राजनीति को समझने वाला, अच्छा बोलने वाला, बालाक, सब कलाओं को जानने वाला, बड़ा भारी कवि और गुणी है । जो विद्या, मनुष्यों को भी कठिना से आती है, वह इस जमाने का नाम वैशम्पायन है । ममार के सब

तोते को आपके पास लाया हूँ। यदि आप कृपा कर इसको ले लेंगे तो मैं सफल हो जाऊँगा। यह कह बूढ़ा दूर जा गया हुआ।

तोत ने पिंजरे के भीतर में अपना दाहिना पैर उठाकर 'राजा की जय हो' इस प्रकार आशीर्वाद दिया। राजा पक्षी के मुँह से साथक वाणी सुन कर बड़ा हैरान हुआ और मन्त्री से कहने लगा कि मैं समझता था कि पक्षी केवल खाना, सोना और डरना जानत हैं, उनमें समझने और बोलने की ताकत नहीं होती। परन्तु तोते का यह व्यवहार देख कर आश्चर्य होता है। वह आदमियों की तरह बोलता है, और ब्राह्मणों की तरह ही आशीर्वाद देता है। मन्त्री बोला—पक्षी अगर मनुष्य आदि के समान बोल सकता है तो इममें कोई आश्चर्य नहीं। लोग तो मूना आदि पक्षियों को बड़े श्रम में मिखाते हैं, और वे भी पिछले जन्म के मस्कारों के कारण त्रिणा कोशिश के ही सींग लते हैं।

यह बातचीत होते होते सभा के समाप्त होने का समय हो गया है, यह बताने वाला दोपहर का घण्टा बजा। नहाने का समय आया जान राजा ने सभा में धैठे हुए दूसरे राजाओं को नम्र घबन कह कर बिदा किया। चाण्डाल-कन्या को और वैशम्पायन को विश्राम करने तथा स्नान आदि कराने के लिए कह दिया।

इसके बाद राजा स्नान, पूजा आदि कर शयनागार में शय्या पर लेटे और द्वारपाल को वैशम्पायन को लाने की आज्ञा दी। राजा ने वैशम्पायन से पूछा—हे वैशम्पायन तुम्हारा देश में हुआ है ? तुम सिद्ध हो वा कोई

या तप के बल से शरीर बदल कर देश देश में घूमते फिरते हो, या तुमने किसी देवता की पूजा कर कर पाया है। अपना सारा हाल कहकर हमारे मन को शान्त करो।

वैशम्पायन ने अपनी राम कहानी कहनी शुरू की— भारतवर्ष के बीच में विंध्याचल पहाड़ के पास विन्ध्य नाम का जंगल है। उस जंगल में गोदावरी नदी के तीरे पर अगस्त्य ऋषि का आश्रम है, जहाँ व्रता में राम लक्ष्मण तथा सीता रहते थे। जहाँ दुष्ट रावण के भेजे हुए मारीच नामक राक्षस ने मोने का मृग बन कर सीता का हरण कराया था, और राम लक्ष्मण आँगों में आँसू भरे कई तरह का विलाप और पठतावा करत हुए तिम जंगल के पशु पक्षी तथा बेलों और पड़ों को भी दुःखी करते थे। उसी आश्रम के पास पपा नामक तालाब के पश्चिम की ओर एक सेमल का पेड़ था। उस वृक्ष की शाखाएँ इतनी लम्बी और छाते की तरह फैली थीं, मानो पेड़ ने आकाश की ऊँचाई नापने के लिए अपने हाथ फैलाए हों। उसका गना इतना उचा था मानो किसी ने पृथ्वी की चारों दिशाओं को देग्नने को ऊँचा मिर बठाया हो। उस वृक्ष के खोखलों में घोंसला बनाकर कई प्रकार के तोता मैना आदि पक्षी सुख से रहते थे। रात को पक्षी उसमें आराम करते और संधरे इकट्ठे हो इधर उधर खाने की तलाश में उड़ जाते।

इस पुराने पद के खोखले में मेरे माता पिता रहते थे। बदकिरमती मेरे पैदा होने के बाद ही मेरी माता बचधा

जनने की पीड़ा से मर गई। तब मेरे पिता मरी माता के मरने के दुःख को मुला कर बड़े लाड प्यार में मुझे पालने लगे। एक दिन मन्वेरे जब चंद्रमा छिप गया, पक्षी सब चहचहा रहे थे, सूर्य-देव के निकलने से आकाश लाल हो रहा था, आकाश में फैली हुई अघकार रूपी धूनी सूर्य की किरण रूपी झाड़ से साक हो गई थी, सप्तऋषि (रात को दिखने वाले तारे) स्नानादि के लिये मानमरोवर क तट पर बतरे थे—अर्थात् इष गये थे, उम समय उस वृक्ष पर रहने वाले सब पक्षी भी भिन्न भिन्न देशों को चले गये। उनके उभे चुपचाप घोंमलों में बैठे थे। मैं भी अपने पिता के पास बैठा था कि इतने में शिकार का शब्द सुनाई दिया। हाथी, सुअर आदि जतु इधर उधर दौड़ते दिखाई देने लग। हाथी की चिंघाड़ से, शेर की दहाड़ से और जानवरों की आवाज से चारों तरफ शोर मच गया।

जब शोर कुछ कम हुआ, तब मैंने देखा कि यमराज के भाई के समान भयकर रूप वाले एक सेनापति के साथ यम-दूतों की तरह बहुत से शिकारी चले आते हैं। उनको देख कर ऐसा मालूम पड़ता है कि मानों भूतों के बीच में महादेव ही अथवा अपने दूतों के साथ यमराज ही हों। शराब को मस्ती से उनकी आँखें लाल हो रही थीं, सारे शरीर में खून लगा हुआ था। उनको देख कर मैंने सोचा कि ये कैसा बुरा काम करने वाले और पापी हैं, ये हमेशा जगलों में ही रहते हैं, धनुष ही इनकी संपत्ति है, युत्ते ही इनके दोस्त हैं, शेर आदि जानवरों के साथ इनका रहना, और जीवों को

ही इनका गोलगार है। इतना म व सप डमी वृक्ष के नीचे  
आ बैठे और न्या पीकर वहाँ से चले गये।

उम सता ग से एक वृक्ष को कुछ आश्रित न मिला था।  
पद उम वृक्ष पर चढ़ गया, और घोंसले से बच्चों को निकाल  
निकाल कर नीचे पटक कर लगा। फिर मेरे पिता को भी अधमरा  
करके उभन पृथ्वी पर फट दिया। मैं दर के मारे पिता के  
पाय में चिपट गया था, इसलिए इसी मुझ देखा नदी। मैं  
नीचे पत्तों के ढेर पर गिरा इसलिए मुझे कुछ चोट भी न आई।

ऊँचे से गिरने और दर के कारण मरा शरीर धरधर  
काँपता था, और प्यास से कूठ सूखा जाता था। जब क्वाप  
चला गया तब मैं गिरत पड़ते तालाब की ओर बढ़ने लगा।  
उधर स ही जायालि नामक ऋषि के पुत्र द्वारीत सरोवर पर स्नान  
को जाते थे। उनके सिर पर जटा, माथ पर तिलक, कान में  
भाला, बाय हाथ में कमण्डलु, दाहिने में डण्डा, कंधे पर काले  
हरिण की छाला और गले में यज्ञोपवीत शोभा पा रहा था।  
उनकी शातमूर्ति को देख कर ऐसा जान पड़तना था कि जैसे  
शाति के समुद्र पायती के पति महादेव मेरी रक्षा को चले  
आ रहे हैं। मुझे देखते ही उन्होंने अपने सेवक से मुझे उठाने  
को कहा, और तालाब पर ले जा कर उन्होंने अपनी लगली  
में मुझे जल पिनाया। जल पीने से मेरी प्यास शांत हुई। वे  
हाथ धोकर मुझे तपोवन की ओर ले चले। तपोवन को देखा  
कर मैं बड़ा प्रसन्न हुआ। उसके भीतर लाल पत्तों से युक्त लाल  
अशोक के नीचे महाप्रतापी जायालि ऋषि बैठे थे। जायालि  
ऋषि बहुत बूढ़े थे। उनके माथे पर झुर्रियाँ पड़ गई थी।

हड्डियों का पजर और माथे की हड्डी निकल आई थी, कानों के दोने श्वेत बालों से ढक गये थे। उनकी शकल देखने में जान पड़ता था कि वे करुणा रस के स्रोत हैं, क्षमा और सतोष के आधार हैं शान्ति रूपी बेल की जड़ हैं, क्रोध रूपी साँप को शान्त करने के लिये मंत्र के समान हैं और अच्छा रास्ता दिखाने वाले हैं। उनके प्रभाव से जगल में हिंसा, द्वेष, दुश्मनी और जलन आदि का नाम भी नहीं था। हारीत मुझे उसी लाल अक्षोक के नीचे रस पिता के पास बैठ गये, तब ऋषिकुमारों के पूछने पर उन्होंने मेरा हाल बताया। हारीत की बात सुन कर जानालि ऋषि ने मेरी ओर देखा और कहा कि यह अपने किये का फल भोग रहा है। महर्षि तीनों कालों ( भूत, वत्तमान और भविष्यत् ) की बात जानने वाले थे इसलिय किसी को उा की बात पर अविश्वास न हुआ। आदिग वे ऋषि से मेरी कहानी पूछने लगे। ऋषि ने कहा कि पूजा आदि नित्य के काम समाप्त कर लो तो मैं इसकी शुरू से अत तक की कहानी कहूँ।

अब सध्या हो गई, मुनिकुमारों ने पूजा का लाल चदन जो शरीर पर लगाया था, यह उनके शरीर पर ऐसी शोभा देता था, मानों लाल रंग का सूर्य हो। सूर्य की किरणों ने धीरे-धीरे पृथ्वी से कमलों के झुड और कमलों के झुड से वृक्षों पर और वहाँ से पहाड़ों की चोटी पर जा कर सब को सुनहरा कर दिया था। वायु में हिलते हुए पत्तों रूपी हाथों से सब वृक्ष पक्षियों को अपने अपने बोंसलों में बुलाने लगे।  
ने भी यह पहाड़ से उसका उत्तर दिया। अंधेरे

करने वाले सूय के भय से छिपा हुआ अंगेग वाहर निकला । सभ्या के नष्ट हो जाने के कारण तुरिया रात धरकार रूपी मैला कपड़ा धारण कर दिखाई देने लगा । तारे (नक्षत्र) रूपी चोर जो सूय के कारण छिपे हुए थे, अब वाहर निकले । पूर्व दिशा में चन्द्रमा का थोड़ा थोड़ा प्रकाश होन लगा । इस से पूष दिशा की सुन्दरता ऐसी मालूम पड़ना थी, मानों वह मुसकरा रही हो । चन्द्रमा का पहले एक टुकड़ा सा निकला, फिर आधा और फिर पूरा गोला निकल आया । तुमुदिती शिष्ट उठी, धोमी धोमी हवा के बहने में तुमुदिता में से गन्ध आने लगी, और तपोवन प्रकशयुक्त हो गया ।

भोजन आदि समाप्त कर ऋषिकुमार फिर महर्षि जायालि के पास पहुँचे । महर्षि ने उठे मेंरी सारी कहानी सुनाई, जिससे ऋषिकुमारों को बड़ा आश्चर्य हुआ ।

१७

## हिन्दी नाटक और रंगशाला

( लेखक—बाबू इशामुन्दर दास )

पृष्ठ १११ से ११७

रंगशाळा—नाटक खेलने का जगह,

रंगभूमि

नाट्यकला—नाटक खेलने की गीति

आनुनिद—आजकल की, वर्तमान

काल की

अभिनय—नाटक खेल

अनूदिन—अनुवाद दिना हुए

पुरस्कार—इनाम

अन्यान्य—दूसर

कुरुधिपूर्ण—बुरी कवि से युक्त

निवृष्ट—गिराव

व्यवसायी—व्यापारी

समकक्ष—बराबर की

आशाजनक—आशा दिलाने वाली

सत्साहबद्धक—उत्साह को बढ़ा

वाली

## ( सक्षेप )

हिन्दी में नाटक लिखने की प्रणाली के जन्मदाता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हैं। उनसे पहले कुछ नाटक—नेत्राजकृत शकुन्तला, हृदयरामकृत इनुमान नाटक, महाराजा लक्ष्मणसिंह कृत शकुन्तला ( कालिदास की शकुन्तला का अनुवाद ) अवश्य मौजूद थे। पर या तो वे नाट्यरत्न की दृष्टि से नाटक नहीं कहे जा सकते थे, या अनुवाद मात्र थे। भारतेन्दु ने लगभग २० नाटक लिखे हैं। जिनमें से कई प्राचीन नाटकों के छाया अनुवाद अवश्य थे। तो भी उनके कई नाटक बहुत अच्छे हैं और अब भी अनेक स्थानों पर खेले जाते हैं। उस समय और भी कई नाटक लिखे गये पर उनको कोई विशेष आदर नहीं मिला। उनमें से विशेष उल्लेखनीय बानू राधाकृष्णदास का प्रताप नाटक है। भारतेन्दु के बाद हिन्दी में अनुवाद की धूम मच गयी, और कई संस्कृत तथा बँगला के (विशेषतः द्विजन्द्रलाल राय के) नाटकों का हिन्दी में अनुवाद हुआ। मौलिक नाटक-लेखकों में जयशंकर प्रसाद का नाम विशेष प्रसिद्ध है। उनके अज्ञातशत्रु आदि नाटक बहुत अच्छे हैं।

नाटकों के अभाव के कारण हिन्दी में नाटक मडलियों और रंगशालाओं का भी अभाव रहा। यद्यपि एक दो जगह भारतेन्दु के 'सत्य हरिश्चन्द्र' आदि नाटकों का अभिनय हुआ, पर व्यापारी कम्पनियों—विशेषतः पारसी कम्पनियों—शुक्रचिपण, निकुण्ट उर्दू नाटकों के ही अभिनाय करती रहीं। इनसे कुछ ऐसी व्यवसायी कम्पनियाँ



जिन्होंने नाटकों में हिन्दी का प्रयोग किया है, जत भविष्य  
आशाजनक है ।

१८

## सभ्यता का विकास

प्रष्ट ११८ ११६

अन्वेषण-गोच

शृंगलारों-मिल-सिला

शिशाल-बड़ा

विदुमार-जितना

घनिष्ठ-गाढा पाम का

नयनात-नये पैदा हुए

भाषनायें-विचार, इत्यादि

प्रकृति-जातिम स भी

जातिम, बड़ा निर्णय

माया-मोह

लि त-फैमा हुआ

रत-लगा हुआ

कौतूहलवर्द्धक-आश्चर्य को

बताने वाली

निर्धारित-निश्चित की गई

बद्ध-बैधी

काय साधन-कार्य करन

सृष्टिनिर्माण-सृष्टि के बताने में

प्रष्ट १२० १२१, १२२

विकामयाद-इस सिद्धान्त के

मान वालों का कहना है

कि आनन्द को सारी सृष्टि

और जीव-जंतु तथा पेड़

आदि पर ही मूल तत्व

स धीरे धीरे था है ।

सूक्ष्मातिसूक्ष्म-वाराह म भी

धारी

अभिधायित-प्रकाशन, सुरा और

न दिग्गइ देने वाले कारण

का दिग्गइ देने वाले काय

में बदल जाना, जैसे बीज

में अंडुर निकलना

सकुलता-यनापन, भीड़

गतात्मन-बीबा की, प्राणिया की

जीवात्मन-जीवों की, प्राणियों की

विलिन होता है-पता लगता है

पद-पेट

पूर्ति-मरना

पशुपालन विधान-पशुओं के पालने का इंतजाम	लालसा-इन्द्रा विधान-नियम
बीनारीपण-प्रारम्भ	मस्तिष्क-शक्ति-बुद्धि, दिमाग
आयोजन-इंतजाम	स्वत्व-हक अधिकार
वृत्ति-रोजी। वह कार्य जिसमें पाने पीने का प्रबन्ध होता हो	अक्रश-दबाव
कृषि-सूती	अन्योन्याश्रय-परस्पर एक दूसरे पर आश्रित होना
भू माग-पृथ्वी के हिस्से	

## ( सक्षेप )

ईश्वर की सृष्टि विचित्रताओं से भरी हुई है। हम देखते हैं कि छोटे से बीज से पेड़ बन जाता है, एक छोटी सी बीज की बूँद से मनुष्य पैदा हो जाता है। यह परिवर्तन, यह विकास किम तरह होता है, विकासवाद इन सब बातों की जाँच करता है। विकासवाद यथायथा है कि आधुनिक सारी सृष्टि और उसमें पाये जाने वाले जीव जंतु तथा वृक्ष आदि किस तरह एक ही मूलतत्त्व से उत्तरोत्तर निकलते गए हैं।

हम देखते हैं कि जैसे जीवों की सृष्टि में विकासवाद के नियम काम करते हैं वैसे ही हमारे सामाजिक जीवन की उन्नति भी उन्हीं नियमों के अनुसार हुई है। पहले पहल मनुष्य जंगली अवस्था में थे, और जंगलों में शिकार कर अपना पेट पालते थे। परन्तु कई बार समय पर शिकार नहीं मिलता था अतः उन्होंने पशु पालन प्रारम्भ किया। फिर पशुओं के चारे की व्यवस्था करनी पड़ी। उससे खेती होने लगी। गाँव बसे। धीरे-धीरे खेती प्रारम्भ हुई। छोटा और पढ़ाई आ धमके।

आपस में लेने देने प्रारम्भ होने लगा, इसी से व्यापार की नींव पड़ी। क्रमशः नई चीजों को बनाने के लिए मस्तिष्क-शक्ति का विकास होने लगा। इस सामाजिक जीवन के परिवर्तन का दूसरा नाम असभ्यताप्रथा से सभ्यताप्रथा को प्राप्त होना है। सभ्यता वह है जिसमें मनुष्य का यह सिद्धान्त स्थिर हो जाय कि जितना किसी काम के करने का अधिकार मुझे है उतना ही दूसरे को भी है और उसे इस सिद्धान्त पर दृढ़ रखने के लिए किसी अक्षुण्ण की आवश्यकता न हो। यह भाव मस्तिष्क के विकास के बिना नहीं हो सकता। ये दोनों बातें एक दूसरे पर आश्रित हैं। मस्तिष्क के विकास में साहित्य का स्थान बड़े महत्व का है।

१६

## महापुरुषों के जीवन का रहस्य

( लेखक — श्रीयुत रामनारायण मिश्र )

प्रप १२३ १२४, १२५ १२६

उदय होना-निम्नता

रसातल-पृथ्वी के नीचे कालोक

रसातल चले जाना-दृश्य जाना

चिरस्मरणीय-बहुत दिनों तक

यात्रा करने योग्य

पाश्चात्य-पश्चिम दिशा का यूरोप

और अमेरिका

प्रादुर्भाव-उत्पत्ति

( संक्षेप )

महापुरुषों की जीवनी उनके देश के गुणों का दर्पण है। बड़े आदमियों के जीवन के वे काय जो वे प्रकट रूप से सब के सामने करते हैं, उतने शिक्षाप्रद नहीं होते जितने महत्व की

अपने जीवन की छोटी छोटी कहानियाँ। इनके द्वारा मह्यो मनुष्य स-मार्ग पर चल सकत हँ, धर्म का अवलम्बन कर सकत हँ आर जीवत का आदश जान सकते हँ।

२०

## नेता के कुछ गुण

(ले०—आयुत माधवराव मये, वी ए )

१०१६,  
आत्मोद्धार—अपना उद्धार  
निर्णय—फैसला  
भारत गिरोमणि—भारत के सिर  
का रत्न, भारत का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति  
मोहिनी—मोहने वाली  
सर्वरय—सारी सपत्ति, सब कुछ  
अपणु—भेद  
योगेश्वर्य सपन्न—योग ऐश्वर्य  
वाली  
लार्डशिप—लार्डपदवी प्राप्त करने  
पृष्ठ १३० १३१  
परात्पर—सर्वश्रेष्ठ, सब से बड़ा  
न मे पार्थस्ति—हे अर्जुन यद्यपि  
मुझे तीनों लोकों में कुछ भी  
कर्तव्य नहीं है तथा कुछ  
भी प्राप्त होने योग्य वस्तु  
अप्राप्त नहीं है तो भी मैं  
धरता ही रहता हूँ।

यदि ह्यह क्योंकि जो मे कदाचित्त  
आलस्य छोडकर कर्मों मे  
न बर्तूगा तो हे पार्थ ?  
मनुष्य मय प्रकार स मेरे  
ही पथ का अनुकरण करेगे  
निस्प्रह—लालच या इच्छा से रक्षित  
लोकसमूह—मय की भलाई समार  
क लागों को प्रसन्न करना।  
प्रबोध शक्ति—ज्ञान देने की शक्ति  
अपेक्षित—आवश्यक  
सहिष्णुता—सहनशीलता  
उत्कटता—प्रवीणता, कुशलता  
वाचाल—बानूनी  
दांभिक—दंभ करने वाला, घमंडी  
पृष्ठ १३२, १३३  
घात—पुराई  
सूत्रमार—सारा कार्य भार अपने  
ऊपर लने वाला

अपार-बहुत अधिक  
 रंक-शंका  
 प्राण-भाग्य सिद्धि  
 विपदावस्था-विपत्ति क दिनों  
 स्वहित-अपना हित, अपना भना  
 अपरीति-गिरा  
 पुत्र १३४ १३५  
 आत्मवत्-अपने समान  
 आपत्तिर्पासत-आपत्ति म फँसत हुए  
 कृत्य-काम

प्रभार-फैलाव  
 मिद्वन्त-निपुण  
 स्तुति-सोई काम करने के लि  
 मन म उत्पन्न होने वाले  
 हलका बस्ते रना  
 तोरहित-जगत का कल्याण  
 प्रच्छ १३६  
 आध्यात्मिकता-आत्मा नर्तकी  
 विचार  
 पारमाधिक-दूमरों के भलाइ के  
 अधिष्ठान-आधिकार शासन

### सक्षेप

नेता की आवश्यकता सभी कामों में, सभी समाजों में और सभी अवस्थाओं में होती है। परन्तु नेता में कौन कौन से गुण होने चाहिये यह विवाद की बात है। समर्थ गुरु रामदास ( जो शिवाजी के गुरु थे ) ने नेता में निम्नलिखित ११ गुण आवश्यक समझे हैं—

(१) यात्रा—जिसे लोक सेवा करनी है उसे एक जगह ठहरना नहीं चाहिये। उसे तो समस्त देश में भ्रमण करना चाहिये। यात्रा द्वारा ज्ञान प्राप्त करना नेता के लिए आवश्यक है। कौन आदमी धारतव में कैमा है, भले गुरे के इस ज्ञान के बिना नेता सफल नहीं हो सकता।

(२) विवेक—विवेक के बिना नेता कभी नेतृत्व नहीं कर सकता। अतः नेता में विवेक होना आवश्यक गुण है।

(३) परिश्रम—परिश्रम के बिना कोई किसी काम में सफल

नहीं हो सकता, अतः नेता को भाग्य के भरोसे न रहना चाहिये, अपितु नेता में परिश्रमशीलता परमावश्यक गुण है। जिस आदमी के ऊपर इतनी जिम्मेवारी है, उसके थोड़े से आलस्य से बहुत से काम बिगड़ सकते हैं।

(४) मृत्यु के सन्ध में निर्भयता तथा (५) कीर्ति की चाह, ये दो गुण भी नेता के लिए आवश्यक हैं। यदि नेता निभय न हो अथवा उसे कीर्ति से अधिक धन आदि की चाह पनी हो तो वह कभी सफल नहीं हो सकता।

(६) वैराग्य का होना भी नेता में आवश्यक है। यदि नेता में वैराग्य न हो, वह अपने ही मायाबधनों में फँसा रहे, तो वह कभी लोकोपकार नहीं कर सकता। नेता के कामों से यह मालूम होजाना चाहिये कि यद्यपि उसके सभी कार्य सासारिक हैं, पर वह किसी भी दशा में उनमें फँसा नहीं है।

(७) निस्पृहता—नि स्वार्थता—भी नेता का एक आवश्यक गुण है। जब तक स्वयं नेता निस्पृह नहीं, तब तक वह कभी भी देश के भले की अपना भला नहीं समझता, और जब तक वह अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के खयाल को नहीं छोड़ता तब तक वह जनता पर दिव्य प्रभाव नहीं डाल सकता।

(८) मृदुवचन तथा (९) क्षमा, शान्ति और सहनशीलता नेता के भूषण हैं। यदि स्वार्थ-त्यागी होने पर भी नेता कठोर वचन बोलता है, अथवा क्षमा नहीं कर सकता, अथवा उसमें सहनशीलता नहीं तो वह सफल नेता नहीं हो सकता।

(१०) परोपकार और (११) उत्कटता ये दो और गुण

स्वामी रामदास ने नेताओं में आश्चर्यक माने हैं। परोपकार के लिए मदैव तत्पर रहना नेता क सर्वोत्तम गुण का सूचक है। यही नेता का सर्वप्रधान गुण है। उरकटता किसी कार्य में कुशलता, अथवा तटोलता को कहते हैं। जब तक नेता किसी कार्य या पूरा शांता न होगा किसी कार्य में सिद्धिस्त न होगा तब तक वह लोगों को अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकता और नेता के किसी विषय में चतुर हुए बिना यद् और इष्टसिद्धि नहीं होती।

ऊपर लिखे सय गुणों के साथ नेता में आध्यात्मिकता—परमात्मा सम्बन्धी विचार—आश्चर्यक है। यदि नेता ईश्वर के अधिष्ठान को—शासन को—अधिकार को—नहीं मानेगा तो उसका आन्दोलन सफल न होगा। तात्पर्य यह है कि नेता को अपने प्रत्येक कार्य और आन्दोलन में ईश्वर के प्रभुत्व का अनुभव करना चाहिये।

२१

## समर्थ और शिवाजी

पृ० १३७

सत्रोपदेश-भंग का उपदेश

राजसत्ता-राज्य

भवानी-दुर्गा

पृ० १३८, १३९

सन्तसमागम-सन्तों से भेंट,

सन्तों की सेवा

अन्त करण-हृदय

चिन्तन करते-सोचते

मुमुक्षु-जो मुक्ति पाने की कामना करता हो

अभिलाषा-इच्छा

साधु कीर्ति-प्रशंसा

सहार-नाश

चित्त-वृत्ति-मन की दशा  
पृष्ठ १४०, १४१  
निष्ठायुक्त-ब्रह्मा और भक्ति से

युक्त  
दरी-पहाड़ की गुफा, ग्रीह  
खारियों-तंग रास्तों  
विह्वल-व्याकुल  
भार्त्त-दुग्दी

शाकाब्द-राजा शालिवाहन का  
चलाया हुआ संवत् ।  
इसवी संवत् में मे  
७८, ७९ घटाने स  
शाकाब्द निकल आता है

अद्वैत-अकेला ब्रह्म । वेदान्ती  
लोग यह कहते हैं कि एक  
'ब्रह्म' ही है, दूसरा कुछ नहीं  
जैसे अंधेरे में रस्सी को साँप  
समझ लिया जाता है वैसे  
ही ब्रह्म के रूप को न जान  
ने से ही समार दिग्गई देता  
है । अन्त में अज्ञान दूर हो  
जाने पर सब यथार्थ ब्रह्म-  
भय दिग्गई देता है ।

पृष्ठ १४२, १४३  
विपुल-बहुत अधिक  
द्रव्य प्राप्ति-धन का मिलना  
धनकृत्य-धर्म के काम

साङ्गोपाग सब तरह से पूरे  
सत्पात्र-दान आदि देन के योग्य  
उत्तम व्यक्ति

ज्ञान सम्पादन-ज्ञान प्राप्त करना  
पृ० १४४, १४५

योगवामिष्ठ-वेदान्त शास्त्र का  
एक प्रसिद्ध ग्रन्थ जो  
यसिष्ठ जी का  
बनाया कहा जाता  
है इसमें यसिष्ठ जी  
ने रामचन्द्र जी को  
वेदान्त का उपदेश  
किया है ।

पादुकाएँ-ग्रहाऊँ  
स्थापन करके-रख कर  
बेलदार-वह मजदूर जो फावड़ा  
चलाने का काम करता है ।

पृ० १४६, १४७  
अगाध-अपार  
पामर-नीच, तुच्छ  
स्वर्णपुष्प-सोने का फूल  
वैभव-धन संपत्ति, थड़ा धन  
शिगरर-चोटी

प्रतीति-विश्वास  
सिंहावलोकन-आगे बढ़ने के  
लिए पिछली बातों का  
संक्षेप में कथन



राज के कामकाज के साथ-साथ शिवाजी सत समागम का यज्ञ ध्यान रखत थे । उन्होंने एक बार साधु तुकाराम ने भद्रोपदेश लेना चाहा, पर उन्होंने शिवाजी को समर्थ गुरु रामदास से शिष्या लेने को कहा । तदनुसार शिवाजी ने समर्थ गुरु के पास पत्र भेज उन्हें बुलाया । समर्थ स्वयं न आये, पर उन्होंने पत्र का उत्तर भेज दिया । पत्र का उत्तर पढ़कर शिवाजी को समर्थ के दर्शन की अभिलाषा और भी बढ़ गई । ये समर्थ के दर्शन को प्राप्त करने पर उन्हें बार-बार उर्द निराश होकर लौटना पड़ा, क्योंकि समर्थ प्रायः चाफल के आमपास घृष्णा नदी के किनारे पर्वत की गुफाओं में रहते थे । अन्त में उन्होंने यही निश्चय किया कि जब तक समर्थ गुरु के दर्शन न करूँगा तब तक भोजन न करूँगा, तब बहुत खोजने के बाद शिवाजी समर्थ का दर्शन प्राप्त करे । शकाब्द १५७१ में समर्थ ने शिवाजी को भद्रोपदेश दिया । शिवाजी ने समर्थ गुरु से बहुत विनती की कि वे किसी एक स्थान में रहें जिससे उनके दर्शन की सुविधा प्राप्त हो, पर समर्थ न माने । तब शिवाजी ने उन्हें सप्रदाय की वृद्धि के लिए मठ स्थापन को कहा । समर्थ ने श्रीराम की मूर्ति स्थापना कर मठ तो बना दिया पर वे स्वयं वहाँ न रहे । शिवाजी ने बहुत अनुरोध कर समर्थ सप्रदाय की सेवा के लिए गाँव और भूमिदान की सनद लिख कर गुरुजी को भेज दी । अन्त में शिवाजी का बहुत ध्यान देखकर समर्थ सतारा के पास सब्जन गढ़किले में रहने लगे । शिवाजी ने वहाँ एक मठ बनवा दिया ।

एक दिन समर्थ भिक्षा माँगते हुए शिवाजी के महल में पहुँच शिवाजी ने एक कागज पर मारा राज्य उन के नाम लिखकर उनकी झोली में डाल दिया, पर समर्थ ने कहा कि राज्य का प्रबंध करना ब्राह्मण का काम नहीं, अतएव राज्य हमारा समझ प्रधान तुम ही बनो और राज्य का प्रबंध करो। पर शिवाजी ने समर्थ से उनकी पादुकाएँ माँगी और स्वयं मंत्री की तरह राज काज करने का प्रस्ताव दिया। समर्थ ने यह स्वीकार कर लिया। उसी समय से शिवाजी ने मराठा राज्य का झंडा भगवे रंग का कर दिया।

एक बार शिवाजी के मन में एक किला बनवाते समय अभिमान पैदा हुआ। तब समर्थ ने उनको उपदेश दे उनका अभिमान दूर किया। जिस तरह शिवाजी समर्थ गुरु के प्रति श्रद्धा रखते थे, वैसे ही समर्थ भी देवी की स्तुति करते हुए भी शिवाजी के लिए वरदान माँगते थे। उनके पुण्य प्रताप से शिवाजी इतने सफल हो सके।

## विलायती समाचार पत्रों का इतिहास

( लेखक श्रीयुत प्यारेलाल मिश्र बी० ए० )

१४८, १४९  
निक-रोजाना अखबार  
मौलवी-आकार  
नहीं पाया-बढ़ न सका  
मीन-बहद, बहुत अधिक

पृ० १५०, १५१  
विशेषांश-अधिक भाग  
विज्ञापन-इस्तहार  
प्रयासि-प्रसिद्धि  
टोरी-कश्यपेंदिय, अनुदार,  
संयुक्त विचारों का

टाइम्स के बाद दूसरा मुख्य पत्र डेली टेलीग्राफ समाप्त होता है। इसका आकार टाइम्स से बड़ा होता है, पृष्ठ २० के लगभग। इसकी दैनिक बिक्री अनुमान से तीन लाख है। इसका लेख टाइम्स से भी अधिक खोरादार समझे जाते हैं। इसका मूल्य एक प्रति का पहले दो आना होता था, पर अब एक आना है। पहले यह पत्र उदार दल का था पर आजकल यह अनुदार दल का है। ( इंग्लैंड में तीन मुख्य राजनीतिक दल हैं १ अनुदार दल, जिसे टोरी या क्वार्थरटिस कहते हैं। २ मजदूर दल, सेपर पार्टी, ३ उदार दल लिबरल ) आजकल इसके स्वामी लार्डबर्नहम हैं। इसके सम्पादक तथा लेखक बड़े विद्वान और विख्यात पुरुषों में से हैं। पार्लियामेंट की विस्तारपूर्वक रिपोर्ट टाइम्स के बाद टेलीग्राफ ही में प्रकाशित होती है। इसके मुख्य सम्पादकों मिस्टर रोज हैं। ये टेलीग्राफ के मुख्यतम माने जाते हैं। मैनेजर होते हुए भी युद्धों में सैनिक सहायता का कार्य भार इन पर ही रहता है। विज्ञापन द्वारा सबसे अधिक आमदनी इसी पत्र की कही जाती है। इसमें अधिकतर किराए के मकानों के इश्तहार निकलते हैं, अतः लोग इसे लैंड-लेट्टीस पेपर कहते हैं। आजकल इस पत्र की देखरेख का कुछ भार लार्ड बर्नहम के निकट रिश्तेदार मिस्टर हैरी लासन पर है। सबसाधारण में इनकी बड़ी इज्जत है।



के लिए शूला आदि लगे होते हैं। हर तरह के खेल के लिए माउड बने होते हैं। इसके अतिरिक्त पाकों में नहर या छोटी सी झील भी होती है, जिन में चलाने के लिए किश्तियाँ भी क्रिया पर मिलती हैं। इतवार के दिन तो पाकों में खूब रौनक होती है। उस दिन पाकों में खूब जलमे और लेक्चर होते हैं। लेक्चर प्रायः भिन्न भिन्न राजनीतिक दल भिन्न भिन्न धर्म सभाओं और भिन्न भिन्न सस्थाओं की ओर से होते हैं।

## भगवान बुद्ध का उपदेश और उनकी शिष्य-मडली

( ले०—श्रीयुक्त लक्ष्मीधर वाजपेयी )

पृष्ठ १६२,

हास—अवनति, घटती।

ग्लानि—अरुचि।

पापाचार—पाप, बुरा आचरण

पृ० १६४ १६५

कलेंद—लड़ाइ, भगड़ा

निर्वाणपद—मुक्ति

जरा—बुढ़ापा

व्याधि—बीमारी

पराकाष्ठा—हृद, चरमसीमा

पूर्वाश्रम—पहले के आश्रम के

वर्ण—चार वर्ण, ब्राह्मण, क्षत्रिय,

वैश्य शूद्र

तपोभ्रष्ट—भ्रष्टहोगया है तप जिसका

प्रवृत्ति—मांसारिक विषयो में फँसना

निवृत्ति—दुटकारा ससार के

विषयों को छोड़ देना

निमग्न—डूबा हुआ तन्मय

पृ० १६६ १६७

अप्रियसयोग—धैरी का मिलाप

प्रियवियोग—प्यारे की जुगाई

पुनर्जन्म—दुबारा जन्म

दृष्टा—तालाच, किसी चीज को

लेने के लिए बड़ी तेज इच्छा

जन्ती—माता, पैदा करने वाली

प्रमेय—बढ़ बात जिसका यथार्थ

ज्ञान हो सके

हेय-छोड़ने योग्य, बुरी -  
 हान-हानि, नाश  
 संज्ञा-नाम  
 अनुष्ठान-नियमपूर्वक कोई  
 काम करना  
 राजगृह-एक प्राचीन स्थान जो  
 बिहार में पटने के पास  
 था, यह मगध की राज  
 धानी थी ।

पृ० १६८  
 परित्राजक-संन्यासी  
 भिक्षाटन-भीख माँगना  
 पृ० १६६  
 तथागत-गौतमबुद्ध  
 महाश्रमण-श्रमण, बौद्ध  
 संन्यासियों को और  
 महाश्रमण बुद्धदेव को कहते हैं  
 सहपाठी-साथ पढ़ने वाले  
 प्रमुख-मुख्य, घड़े  
 आख्यायिका-कहानी  
 गुरुद्रोही-गुरु से द्रोह ( द्वेष )  
 करने वाला  
 बधिक-जकलाद, मारने वाला  
 पृ० १७०, १७१  
 अर्हन्त-पूज्य, बुद्ध संन्यासी  
 देह-शरीर  
 निर्वाणयात्रा-मुक्ति

प्रमश्रायक-मुख्य भावक (बौद्ध  
 संन्यासी )  
 करुणोत्पादक-करुणा पैदा  
 करने वाली  
 भिक्षापात्र-भिक्षा का बरतन  
 अवतीर्ण-जन्म ग्रहण कर चुके  
 परिपाटी-रीति, सिलसिला  
 इहलोक-इस लोक  
 पृ० १७२, १७३  
 समाधान किया-मन वा सदेह  
 दूर कर दिया  
 पूर्वजोपाजित-पुरुषों की कमाई  
 हुई  
 पैत्रक-पुरुषों की, पुरतैनी  
 प्रव्रज्या-संन्यासग्रन्थ  
 भावक-जिस पर कोमल भावों  
 का जल्दी प्रभाव पड़ता हो,  
 अरुच्री जाते सोचने वाला  
 पृ० १७४, १७५  
 उत्कृष्ट-अच्छा  
 वनस्पति-पेड़, पौधे  
 असाध्य-न आरोग्य होने वाले  
 रोग  
 आम्रघन-आमों का ढाग  
 पुष्करिणी-तालाब  
 परिमल्ल-सुगंध  
 सपवन-ढाग

पृ १७६, १७७

मिन्न-दुस्ती

अपरमार-मृगी

यक्ष्मा-तपेदिक

पुष्ट-कीट

ससगज-साय रहने से होने वाले

विहार-बौद्ध संन्यासियों के

रहने की जगह

पृ १७८, १७९

अपराध-सुरे शब्द गाली

त्रिविध ताप-तीन तरह के दुःख

आध्यात्मिक (आत्मा संबंधी)

आधिदैविक (देवता भूत आदि

द्वारा दाने वाला) आधिमातृ

जाया या शरीर धारियों द्वारा

प्राप्त दुःख)

पट्टशिष्य-मुख्य शिष्य

रहस्य-गुप्त भेद, छिपी हुई बात

इन्द्रगत-इन्द्र के

पृ १८०

श्रेष्ठी-सठ

निम्न-नीची

### (संक्षेप)

भगवान् बुद्ध का धर्म कोई नवीन धर्म न था। प्राचीन वैदिकधर्म ईश्वर और वेद पर अधिक जोर देता था। परन्तु भगवान् बुद्ध ने ईश्वर और ईश्वर की इतनी आवश्यकता नहीं समझी, वहीँ सदाचार को ही अधिकता से अपनाया। सदाचार से रहने वाला पुरुष चाहे ईश्वर और वेद को भी न मानता हो तो भी वह धार्मिक है। और सदाचार से वह जन्म जरा मरण व्याधि इत्यादि कष्टों से मुक्त होकर निर्वाणपद पा सकता है। मनुष्यमात्र में जाति वर्ण आदि कोई भेद नहीं।

इस निश्चय का बुद्ध ने सब से पहले अपने पुराने साथी पाषाण संन्यासियों को पता दिया। पहलू तो संन्यासी उन्हें तपोधर्म समझते थे पर भगवान् बुद्ध की तेजस्विता ने उनके इस सशय को दूर कर दिया। भगवान् बुद्ध ने उन्हें अत्यधिक भोग विलास (प्रवृत्ति) तथा कठिन तपश्चर्या (निवृत्ति) दोनों

को छोड़ कर बीच का साधन मार्ग अपनाने के लिए कहा। उनका कहना था कि जो लकड़ी जलकर राख हो गई है उसके द्वारा आग जलाने की चेष्टा जरूर व्यर्थ होगी इसीलिए कठिन तपस्या (निवृत्ति) क्लेशदायक, अनावश्यक और व्यर्थ है। साथ ही, इन्द्रियों के सुख-भोग की लालसा (प्रवृत्ति) मनुष्य को मनुष्यत्वहीन और नीच बना देती है। इस मार्ग में जाने के लिए सम्यक् दृष्टि (अपनी दृष्टि को निर्मल करना), सम्यक् सकल्प (अपने मन के निश्चय को ठीक करना), सम्यक् वाक् (सदा सच बोलना), सम्यक् कर्मान्त (अपना व्यवहार साफ रखना), सम्यक् अजीव (अर्थात् अच्छे कामों से अपनी जीविका पैदा करना) सम्यक् व्यायाम (सभी चेष्टाएँ अच्छी करना), सम्यक् स्मृति (अच्छी बातों का चिन्तन करना) और सम्यक् समाधि (पवित्र ध्यान के द्वारा मनको समाधिस्थ करना) इन अष्टाङ्गिक मार्ग (आठ साधनों) का पालन आवश्यक है।

भगवान् बुद्ध ने दुःख की उत्पत्ति के जन्म, जरा (बुढ़ापा) व्याधि (बीमारी), भरण (मौत), अप्रिय संयोग (अप्रिय आदमी का मिलना) तथा प्रिय वियोग (प्यारे की जुदाई) ये छ कारण प्रकृत हैं। पुनर्जन्म का कारण तृष्णा है, अतः तृष्णा से ही दुःख पैदा होता है। इस तृष्णा से बचने के लिए ऊपर कहे गये अष्टांग साधना के मार्ग का आश्रय लेना पड़ेगा। इसके सिवाय भगवान् बुद्ध ने चार 'आर्य प्रमेय' बताए— दुःख (अर्थात् पद मय कुछ जो छोड़ने योग्य है), अज्ञान जिसके कारण छोड़ने योग्य पदार्थ की उत्पत्ति होती



हे ) दुःख निरोध (दुःख से दूर होने की इच्छा) दुःख निरोध कारिणी वृत्ति (हानि जिसके द्वारा दुःख नाश का उपाय हो सकता है) ।

अपने इन पाँचों साधियों को अपने धर्म में दीक्षित व गया जी में कई ब्राह्मणों को, और राजगृह के राजा बिम्बिसर को भी बुद्ध ने अपना शिष्य बनाया, भगवान बुद्ध के शिष्य अश्वजित् की भव्य और सौम्यमूर्ति से प्रभावित हो सारिपु और मौद्गलियन ने बुद्धधर्म में प्रवेश किया । ये दोनों ही बुद्ध के प्रमुख शिष्यों में से हुए । बुद्ध इन्हें अग्रश्राव कहते थे ।

एक बार धर्म का प्रचार करते हुए बुद्ध कपिलवस्तु पहुँचे । वहाँ भी इन्होंने भिक्षाटन जारी रखा । यह देख इनके पिता को बहुत दुःख हुआ । पर बुद्ध ने उन्हें उपदेश देकर शान्त किया । फिर महल में जाकर उन्होंने अपनी विरह से दुःखी पत्नी यशोधरा को उपदेश दिया । उनके बड़े बाने के बाद यशोधरा ने पुत्र राहुल को पिता से जाकर पैतृक संपत्ति माँगने को कहा । यह सुन बुद्ध ने उस बच्चे को सन्यास दे दिया । पीछे राहुल बुद्ध के मुख्य शिष्यों में हुआ । बुद्ध के अन्य शिष्यों में से राजा बिम्बिसार का साला वीश्लराज प्रसेनजित्, राजा बिम्बिसार का नाती तथा प्रसिद्ध राजवैद्य जीवक, बिम्बिसार का पुत्र राजा अजात शत्रु, भावस्ती नगरी का बड़ा भारी सेठ अनाथ पिण्डक, प्रसिद्ध व्यापारी पूर्ण तथा पट्टशिष्य आनन्द उल्लेखनीय हैं । राजवैद्य जीवक अपनी वैद्य विद्या में बड़ा सिद्धहस्त था, वह का मुफ्त इलाज करता था । उससे इलाज कराने

क लिये अनेक आदमी बुद्ध धर्म में दीक्षित हुए । आनन्द शक्यवशी क्षत्रिय था । भगवान बुद्ध के बाद वही सब विषयों में प्रामाणिक माना जाता था । इसके सिवाय सुनीत नाम का भगी, अशुमाली नामक एक औधिया, स्वाति नामक मछुआ आदि शिष्य नीच जातियों में से थे । भगवान बुद्ध के शिष्य दो श्रेणियों में विभक्त थे, एक सन्यासी जो भिक्षु कहलाते थे दूसरे गृहस्थी जो उपासक कहाते थे । ऐसे ही स्त्रिया भी बौद्धधर्म में प्रविष्ट हुई ।

## शिकागो का रविवार

२५

(लेखक—स्वामी सत्यदेव जी परित्राजर)

पृ १८२, १८३

ईश्वराराधना—ईश्वर की उपासना

अनुमति—प्राज्ञा

भूगर्भविद्या—यह विद्या जिसके

द्वारा इस बात का ज्ञान होता

है कि पृथ्वी का ऊपरी और

भीतरी भाग किस किस

चीजों का बना है, और

उसका वर्तमान रूप किस

कारणों से हुआ है ।

विकास क्रम—उत्पत्ति के बाद

बढ़ने का सिलसिला

पृ १८४, १८५

सत्त्व—समथ

दीर्घकाय—बड़े डीलडौल की

वनस्पति विद्या—बढ़ विद्या

जिसमें पौधों और वृक्षों आदि

के रूपों जातियों और भिन्न

भिन्न अंगों की छायादीन की

जाय ।

रसायन विद्या—बढ़ विद्या जिसमें

इस बात की छानबीन की

जाती है कि पदार्थों में कौन

कौन से तत्व होते

छनक परमाणुका म परि  
घतन होने पर पदार्थों में  
क्या परिवर्तन होता है।

विद्युत विद्या-बहु विद्या जिसमें  
पदार्थों का पूरा वर्णन होता  
है।

पर शरीर विद्या-बहु विद्या  
जिसमें यह पाया जाता है  
कि मनुष्य व शरीर का  
कौनसा अंग कैसा है और  
क्या काम करता है।

पृ १८६, १८७

प्रियतमा-प्यासी

पेशदुर्घा-ऐसी बात जो बड़ों  
व आदर या सम्मान क  
लायक न हो।

सहाय्यागी-साथ पढ़ने वाले  
पत्रित-गिरा हुआ, नीच

मिटिंग-हाकी की तरह का ख

निम्ने गेरने वाला के घू

के तले में फिमलने बा

रील सी लगी होती है। य

स्यल चर्क या पक्के 'कर्श'

मेजा जाता है।

पृ १८८, १८२

अरवारद-पुष्पधार

लोमहर्षण-बहुत भयानक। ऐसा

भयानक जिससे रोएँ ख

ही जाय

तापमान-गरमी को मापना

विहार वाटिका-घूमने के लिए

वने बाग

### (सन्देश)

रविवार की छुट्टी मनाने के लिए शिकागो में क्या प्रयत्न  
किया गया है, इस लख में इसी बात का विस्तृत विवरण  
है। शिकागो का सप्ताह के बड़े शहरों में तीसरा नम्बर है।  
यहाँ मिशिगन झील के किनारे एक फील्ड-न्यूजियम है,  
जहाँ रविवार को सब मुफ्त सैर कर सकते हैं। इस में बालक  
बालिकाओं को अच्छी तरह ज्ञान कराने के लिए शिकागो  
के सप्ताह प्रसिद्ध मेले में इकट्ठे हुए सब पदार्थ, भूगर्भ विद्या  
सम्बन्धी भिन्न भिन्न पदार्थ, अमेरिका के प्राचीन निवासियों

की चीजें, ऐसे ही अन्य पदार्थ खूब एकत्र किये गए हैं। इस अजायब घर के बीच में अमेरिका को रोजने वाले कोलम्बस की बड़े हीलडौल की एक मूर्ति है। उस को देखकर विचार उठता है कि कुछ ही सालों में अमेरिका का कैसा रंग बदल गया। वहाँ के प्राचीन निवासी कहाँ गए। इसके अतिरिक्त अजायब घर में वनस्पति विद्या, रसायन विद्या, जंतुविद्या, रक्षी शास्त्र और नर-शरीर विद्या आदि भिन्न भिन्न विद्याओं के सब्ध की सामग्री भी विद्यमान है।

अजायब घर के बाहर झील के किनारे भी आनन्द के हुत से स्थान हैं। शिकागो का हम्बोल्ड पार्क नामक उद्यान विशेष उल्लेखनीय है, जिसमें बड़े लंबे लंबे कुड हैं, उनमें नवयुवक और नवयुवतियाँ नौका खेते तथा जल लीड़ा कर आनन्द लेते हैं। सर्दियों में जब कुडों का पानी जम जाता है। सर्क पर स्केटिंग करते हैं।

लिफ्ट उद्यान भी कम वर्णनीय नहीं है, जिसमें वीरघर की घुड़सवार मूर्ति गुलामी प्रथा के विरुद्ध खे गये उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका के निवासियों के ख के भयकर युद्ध का स्मरण कराती है।

इस प्रमुख उद्यानों के सिवा नगर के कोने कोने में बहुत-विहार घाटिकाएँ हैं जहाँ काम से थके पुरुष अपनी षाघट दूर करते हैं।

रात के समय लोग प्राय विजली की रोशनी में जगमगाते नगर <sup>मैदान</sup> में गेल-तमाशे देखकर अपना समय <sup>सुख</sup> वाते <sup>परकस</sup> नाच, गान और कई तरह के

तमाशों का प्रबन्ध है। रविवार को यहाँ बड़ा मारी मेला होता है। सादिया में यह स्थान बंद रहता है।

इस तरह शिक्षागो-निवासी रविवार को कई प्रकार के मनोरंजक और शिक्षाप्रद रम्य उमाशों देखकर अपनी सप्ताह भर की थकान को दूर करते हैं जहाँ हमारे भारतवासी भग पीकर और ताश खेल कर अपनी छुट्टी का दिन बिता देते हैं।

२७

## अमावस्या की रात्रि

( छेलेक—श्रीयुत प्रेमचन्द की प )

पृ० १०४, १९५

घूर-बूड़े करकट का डेर

सुरागरविन्द-मुख रूपी कमल

हाथ मलती था-पड़वाती थी

कटाक्ष करती है-ताना गारती है

मदार-आक

मर्तग-हाथा के समान मदमस्त

विदीर्ण हो रही थीं-फट रही थीं

चकलेदार-छोटे छोटे जागीरदार

उस समय जाती थी-गदर

से पहले रुपयों की रसाद या

हुण्टी आदि पर टिकटें न

लगानी होती थीं, न ही

आदालती कागजकी आवश्यकता थी। सादे कागजों पर

सब बातचीत हाजाती थी।

पृ० १९६, १९७

मिट्टी में मिल गया-बरपाद होगया

बचन लेख लगा था-गदर

कथाद यातों पर विश्वास न

रहा, जब तक लेख लिखा

न हो तब तक कोई सत्कार

लिया मानता न था, साथ ही

लिख हुए में भी पूरी रगीन

टिकटें देखी जाने लगी थीं।

जब तक टिकट न लगी हो

तब तक लिया दिया माना न

जाता था।

जिनकी स्याही बड़ गई थी-

जिस तरह तिबारीजी का भाग्य

मंद पड़ गया था, किस्मत पट

गयी थी, वैसे ही उन हुडियाँ

का स्वाधी भी बहुत पुरानी  
हाजने के कारण भद्र होगई  
थी ( फीकी पड़ गई थी )  
लिरायट पढ़ी न जा सकती  
थी ।

भारकचिह्न-याद दिलाने वाले  
चिह्न

दम्बना-मजाक

तेषादी-दूसर पक्षवाला

पमालिका चुकी थी-दीर्घों

की छोटी सी जीवनी समाप्त

हो चुकी थी, अर्थात् दीर्घ

बुक चुके थे ।

बयों रही थी-जूआ

पेला जा रहा था, कौड़ियोंके

सौघा छलटा पड़ने से लाखों का

सँव हारा जीता जा रहा था ।

मटी-शराबखाना

गोर-सुबह

बेधमज्जर-जाड़ा देकर आने

वाला दुखार

तन्व-होश में

पृ १६८, १५९

नुष्य की व्यतीत होती

है-मरते समय मनुष्य के

हृदय में बड़ी इच्छाएँ-

जाणसाएँ-पैदा होती हैं, वह

सोचता है मैं यह कर सक्ता,

मैं यह कर सकता ।

दीपावली मुस्करा रहे थे-

दीर्घों पर ताना मार कर हँस

रहे थे । दीर्घों ने जल कर

उनकी रोशनी कम करनी चाही

थी, पर थोड़ी देर में इनकी

समाप्ति हो गई, इस कारण

तारे इनका मजाक उड़ा रहे थे

विद्यावारिधि-विद्या का समुद्र

नाजरीन-पाठक

खर्द-पीला

तनेलागिर-दुबला बदन

पृ २००, २०१

लज्जात दुनिया-दुनिया के लप

भोग, सुख

महरूम-बंधित

रगता तारोंकी-घर का अंधेरा

नफी-नकार

शख्स-व्यक्ति, आदमी

इमराज-धीमा-रिया

इन्सानी-मनुष्य की

गायब कर देना-नष्ट कर देना,

उड़ा देना

जौफरोश गदुमनुमा-गेहूँ दिखा

कर जौ बेचने वाले घोलेयाज,

बहुत भूठ बोलने वाले

बेख व धुन से-पड़ से

पाक-पवित्र

अरुण किलक-२३ निधाय,  
पक्का इगना

हेरत अगड-आशय ननक  
अइपनधियान-सीमित शक्ति  
बाला

नाशाद-अप्रसन्न, दुःखी  
दिलशाद-प्रमगचित्त  
गामुगाद-हताश  
ईमादफरदा-अधिकाश की दुर्द,  
बताई इद

अना-नु-द्व  
करिमा-पमकार  
हकोस्त-असलियउ  
रौशन-प्रकट  
आवहयात-अमृत  
मर्दानगी-पुरुषत्व  
जौहर-मार, निचोह  
फरजानगी-महत्ता, बढपन  
अफसीर-बह रस या भस्म जो  
धातु को सोना या चाँदी  
बनाये, रसायन

मुम्हा-स्रोत  
जेहन-बुद्धि, स्मरण शक्ति  
सीरल-साफ करन वाला  
मुशायराभाजी-सुकवदी

शाघारोड-रात दिन  
ताबबदारी-अथवा उठाना  
बाबजूद-होते एए भी  
दफरीर-मापण, होकर  
दामफरेब-घोरे के जाल  
सायत फी पाहुनी-सुन्न शक्ति  
मेहमान अमान थोड़ी  
में ही इम संभार स  
जाने वाली

पृ २०२, २०३  
होममयज्ञान-अयनति-सुचक  
धुरे दिन बताने वाले  
शेषांश-अथवा दुष्ठा भाग  
अधचन्द्राकार-आधे चाँद  
आकार का सा  
चुनाबदार-चूहोदार  
रकाब-पायदान जिससे घोड़ा  
या हाथी पर उतरने चढ़ने  
में सहारा लेते हैं।

पृ २०४, २०५  
सम्पदा-सम्पत्ति, ऐश्वर्य  
स्वजन सम्बन्धी, रिश्तेदार  
आकासा-इच्छा  
सन्तति-सन्तान

( ७५ )

( संक्षेप )

पंडित देवदत्त के पूर्वजों का कारबार बहुत विस्तृत था, वे जागीरदारों और राजाओं को रुपया उधार दिया करते थे । परन्तु गदर के समय कई जागीरदार और राजा नष्ट हो गये । उनके साथ ही पंडित जी के परिवार के दिन भी फिर गये ।

जब पंडित देवदत्त ने होश संभाला तो एक पुराने मकान को छोड़ कर उनके पास कुठ न था । वे पढ़ लिखे भी न थे, न उनके पास धन और बुद्धि थी । इसलिए अब वे कोई काम न कर सकते थे और उनका गुजारा मुश्किल हो गया । उनके अभिमान करने मात्र के लिए बाप-दादा की पुरानी चिट्ठियाँ और हुड्डियाँ रह गई थीं । वे उनकी पूना करते थे । क्योंकि उन चिट्ठी पत्रियों में ७० लाख की रकम छिपी हुई थी ।

इस विपत्ति के साथ साथ पंडित जी की प्यारी पत्नी गिरिजा कई दिन से धारपाइ पर पड़ गई थी । वे गरीबी का दुःख सह लेती थी, परन्तु यह नई विपत्ति सहना उनके लिए कठिन था । वह गिरिजा के सिरहाने पर बैठे घँठ वसे आश्वासन देते रहते । दीवाली के दिन सारे ही नगर में दीयों द्वारा प्रकाश किया गया । सब मकानों में दीये जले, पर फव्वल उनका ही मकान था जहाँ अमावरया के अधिकार ने आकर डेरा डाल दिया था ।

पंडित गिरिजा ने उसी समय होश में आकर आन दिवाली के दिन भी हमारे घर





न जलग । और यह अभिलाषा प्रकट की कि वह खर उठकर दीग जलाएगी । ये बातें देवदत्त के 'हृदय' में पुनः जाती थीं ।

ये उसी रात के समय वहाँ से उठे और नगर के प्रसिद्ध वैद्य शंकरदास के घर की ओर चले । वैद्य शंकरदास बड़े इशतहारवाच वैद्य थे और थे दिल के बड़े निर्दय । निम्न समय देवदत्त उनके घर पहुँचे उस समय वे अपने रामबाण 'अमृत बिन्दु' का विज्ञापन लिये रहे थे । विज्ञापन इस प्रकार था ।

"दर्शक गण ! आप जानते हैं मैं कौन हूँ ? आपका पीठ चेहरा आपकी शरीर की दुर्बलता और थोड़े से परिश्रम में बेहम हो जाना, आपका दुनिया के सपभोगों से बचि रहन आपके घर का अँधेरा ये सब इन प्रश्न का उत्तर नहीं मे दे हैं । सुनिश्च मैं कौन हूँ ! मैं वह व्यक्ति हूँ जिसने मानवी बीमारियों को पृथ्वी पर से नष्ट कर देने का बीड़ा उठाया है जिसने इशतहारवाच, धोखा देने वाले, झूठे इकीमों को जड़ खोदकर दुनिया को पवित्र करने का पक्का इरादा क लिया है । मैं वह आश्चर्यजनक सीमित शक्ति वाला मनुष्य हूँ जो अपसन्न को प्रसन्न, हताश को आशा वाला, भगोड़े को दिलेर और गीदड़ को शेर बनाता है । और यह किसी जादू से नहीं, किसी मंत्र से नहीं, यह तो मेरी अविष्कार की हुई अमृतबिन्दु के तुच्छ खेल (धमत्कार) हैं । अमृतबिन्दु क्या है इसे कुछ मैं ही जानता हूँ । महर्षि 'अगस्त्य ने धन्वन्तरि (कहा जाता है कि ये आयुर्वेद के सभ से बड़े



कि ज्वालिन बैद्य को यहा कैसे लाऊँ ? अब पण्डित जी को पत्र लगा कि उनकी माप-दादा की रिद्धियाँ किसी काम की नहीं हैं। अब वे क्रुद्ध हो उन्हें आग में डालने लगे। इतने में राजनार का जागीरदार पण्डित जी के यहाँ पहुँचा और बोला कि आर्य दादा ने मेरे दादा को पच्चीस हजार रुपया उधार दिया जो अब सूद जोड़ने से याद ७५ हजार रुपया हो चुका है। अब मैं अपने पुरुस्कारों का श्राद्ध करने चला था, इसलिये मेरे लिए यह आवश्यक था कि मैं माप दादा का सब हिसाब माप कर दूँ आपके पास वे रिद्धियाँ हो तो दे दूँ। पण्डित जी के दिल बैठ गया वे घबराए लिल में भीतर गये और दूँके लगे और उन पत्नी को पाकर एकदम उड़ल पड़े और दौड़कर च-होने गिरिजा को गले लगा लिया तथा बोले—व्यारी, यदि इश्वर ने चाहा तो अब तू जी जायगी। पर उस खुशी में उन्हें यह न पता लगा कि गिरिजा पहले ही इस सत्कार को छोड़ चुकी है।

देववत्त न बाहर आकर पत्नी ठाकुर को दी और वह वनकी हजार हजार रुपय के ७५ नोट लेकर चिरा हुआ। पण्डित जी खुश होते-होते भीतर पहुँचे तो च-होने देखा किरात की समाप्ति के साथ साथ गिरिजा भी समाप्त हो चुकी थी। यह देखते ही वनकी आँखों के आगे अंधेरा छा गया और वे ७५ हजार के नोट लेकर उसी समय वैद्य शकरदाम के यहा पहुँच और नोटों का पुलिन्दा उनके सामने फेरकर बोले—बैद्य जी, यह पचहत्तर के नोट हैं यह आपकी पीस है, आप चलकर गिरिजा लें और कुछ पेसा करें कि यह एक बार आँखें खोल

३। आपको रुपये मनुष्य की जान से प्यारे हैं, और मुझे गेरिजा की परु दृष्टि इन रुपयों से कई गुणा ज्यादा प्यारी है। ये जी यह देख बड़े शर्मिन्दा हो और बोले भविष्य में उन रुपयों की भूल न होगी।

२८

## रामायण का महत्व

२११	पृ० २१६, २१७
वनति-गिरावट, पतन	सलगन-लगा हुआ
आज्ञाप्रद-शिक्षा देने वाली	अलंकृत-विभूषित, संहित, युक्त,
दानुवाद-बहम	कृति-कृती, कुशल, साधु,
योगति-गिरावट	पुण्यात्मा
२१२, २१३	व्रतव्रत-जो अपने व्रत पर दृढ़ हो
सन प्रणाली-हकूमत का	निष्कलंक-बिना फलक के
तरीका	त्रैलोक्य-तीनों लोकों
भाव-न होना	समग्र रूप से-पूरे रूप से
भूषित-युक्त, संहित	अपेन्द्र-विष्णु
महत्त्व-आत्मज्ञान की परमा	पृ० २१८, २१९
स्थिति	नपुंसक-हीजड़ा, डरपोक
पार्शील-काम में चतुर,	राम-शत्रुभृतामहम्-शस्त्र
काम करने वाला	धारियों में मैं राम हूँ
शक्ति-अनपद	परिपद्-सभा
२१४, २१५	ऐतिहासिक आकाश का सूर्य-
वस्तु	सबसे मुख्य ऐतिहासिक व्यक्ति,
कालिक-पीछे के समय के	जिसकी सब प्रशंसा करते हैं

७० २२०, २२१

कर्म-बुरा काम

संभाम-युद्ध

सला-विचारणीय विषय

सोचने लायक बात समझा

विजय-चारा और विजय

प्राप्त करना

निवार्य-जा अवश्य हो

२२२ स २२४

म-अपन शत्रु को मीठी बातें

करके अपनी ओर मिला लना

म-राजनीति की एक चाल

जिसमें शत्रु को घन द्वारा

घस म करत हैं

। भेद-शत्रु लोगों को घड़का क

अपनी ओर मिलाना अर्था

वामें ट्रेप उत्पन्न करना

पलवाती-ठरफदागी करने वा

साघ्राज्य लोनुपत्रा-अपना रा

फैलान का लालच

घर का भदिया लंका दाह-पर

का भेदी हो तो लका जल जाती।

शासन-राज्य

प्रतिभूल-रिलाफ विरुद्ध

यतोरामस्ततोजय-जिधर राम

(राम मा शक्तिशाली पुरुष)

है उधर ही जीत है

## (संक्षेप)

रामायण उत्तर से दक्षिण तथा पूर्व से पश्चिम सारे भारत

एक सूत्र में बाँधन का एक बड़ा साधन है । श्री रामचन्द्र

नाम से प्रत्येक हिन्दू बालक परिचित है । हमारे पूर्वजों

राम का नाम स्मरण करने के लिए साल में रामनवमी और

नवदशमी (वशहरा) दो दिन नियत कर दिए हैं । रामायण

हमारे राष्ट्रीय जीवन का स्तम्भ कहा जा सकता है । हिन्दी

के हिन्दुओं का सामाजिक जीवन रामनाम की सुगधि से

परतु प्रश्न यह है कि रामायण और रामचरित्र को

क्यों ही गहं । आजकल की अवनति के दिनों

हम वही शिक्षा लेते हैं कि रामचन्द्र बड़े आज्ञाकारी थे ।  
पैसा का बड़ा खान्दर करते थे, और हम गुलाम रामायण के  
पूरी महत्त्व की ओर ध्यान नहीं देते ।

आज हम भूरे नगे अशिक्षित ब्रह्मचारी साधुओं को  
पना आदर्श मानने लगे हैं । योग, तप, वैराग्य और आत्मा  
बन्धी विचारों को बड़ा महत्त्व देते हैं, परन्तु रामायण और  
भारत में इस झूठे आदर्श का लेशमात्र नहीं मिलता । वे  
हमें शिक्षा देते हैं कि 'कुछ करो' और अध्यात्म विद्या  
पीछ की बनी और पुस्तकें कहती हैं—'कुछ न करो'

रामचन्द्र की पूजा का कारण उनका आदर्श मनुष्यत्व  
पूर्ण व्यक्तित्व है । महापि वाल्मीकि ने भी इसी ओर ध्यान  
दिया है । पूर्ण मनुष्यत्व के लिए स्वास्थ्य तथा सौन्दर्य, विद्या  
सदाचार आवश्यक हैं । रामचन्द्र जी में ये गुण फूट फूट  
भरे थे । परन्तु इससे भी अधिक रामचन्द्र की प्रशंसा  
में वीरता के कारण है । भगवान् कृष्ण ने भी अपनी गीता  
में कहा है 'शत्रुधारियों में मैं राम हूँ ।' इसी में रामचन्द्र जी  
रहता है । परन्तु इतने गुण होने पर भी राम का नाम  
नहीं हो सकता था । उनका नाम अजर है उनकी महान  
तीतिक सेवा के कारण । हम समझते हैं कि रामचन्द्र ने  
पर सीता के लिए चढ़ाई की थी । पर उसका वास्तविक  
म था हिन्दू जाति की साम्राज्य-खोलुपण । राम ने रावण को  
दूर दक्षिण तक हिन्दुओं को अभय दान दे दिया,  
मेना के नाश प बाद सारा दक्षिण हिन्दू सभ्यता के  
गया । दक्षिण का प्रभु हमेशा के लिए हल हो गया ।

भारतवर्ष की एकता में कुछ बाधा नहीं । अपितु दक्षिण भारत के लोग पण्डित कहलाने लगे । उनमें ही शंकराचार्य और रामानुजाचार्य जैसे विद्वान हुए । उनमें ही शिवाजी जैसे हिन्दू मभ्यता के रक्षक हुए । इस विजय पाने में रामचन्द्र न अंग्रेजों और फ्रांसिसियों की तरह कूटनीति से काम लिया था । इसी कूटनीति से उन्होंने रावण के भाई विभीषण को राज्य का लोभ देकर फोड़ लिया था । दक्षिण में बड़ी भारी सेना तैयार कर ली थी । इस कूटनीति द्वारा विजय पा रामचन्द्र ने हिन्दू जाति की रोटी, रक्षा, धर्म प्रचार, मभ्यता, एकता तथा जाति का भविष्य सब का प्रबन्ध कर दिया । उनकी इसी अनुपम राजनीतिक सेवा के कारण उनकी प्रशंसा में महाकाव्य लिखे गये । इसी कारण उनका नाम अमर है और प्रातःस्मरणीय है ।

२८

## अध्ययन

[ लेखक—पण्डित रामचन्द्र गुप्त ]

पृ० २२५

अध्ययन—पठना

दुर्द्ध—कठिन, ममक में ७ आग  
योग्यसंस्कृतानुगाभिनी—संस्कृत के  
दंग की

पृ० २२६, २२७

आत्म संस्कार—अपना सुधार

कर्मण्य—बूझ काम करने वाले  
उद्योगी

प्रज्ञा—बुद्धि, ज्ञान

प्रतिभा—बुद्धि, मूक, बड़ असा  
धारण मानसिक शक्ति

निससे कोई मनुष्य बहुर

आघक योग्यता प्राप्त कर  
लता है, नीति, चमक

पम्बोक्षण-स्त्रोत्र

क्रिया-तरीका, उपाय

पविष्कार-मिसी घातका पहले

पहल पता लगाना

एपेपित-पिस हुए को पीसना,

ही हुई घातको फिर फिर कटना

२२८, २२६

न्येयणा-स्त्रोत्र

दुरता-सिमटता, इकट्ठा होता

उत्ता-उथला

तत-अत मे

३० २३१

सि-यूनान की राजधानी

।।शं-यह फारसका बादशाह था।

इसने अपने पिता डेरियस

की यूनान विजय को पूरा

करने के लिए सवार की

सबसे बड़ी सेना को साथ

लकर ईसा से ४८० वर्ष

पूर्व यूनान पर हमला किया।

और वीर, ह्योनिदास ने

थर्मोपली की घाटी में इसका

सुकाबला किया। इस युद्ध

में थर्मोपली के सब वीर

मारे गये थे। क्षयार्श ने

विजय प्राप्त करली थी, पर

इतने में यूनान के एक छोटे

से घेडे ने उमका सर्वघ

पिद्धली सेना से काट दिया।

अब क्षयार्श आपत्ति में पड़

गया। वह अपनी आधी

सेना को उहाँ छोड बापिम

लौटा पर उसकी बड़ी

दुर्गति हुई। और ईसा से

४६५ वर्ष पूव घरेलू झगडों

में उसको कत्ल कर

दिया गया।

आघात-चोट

ध्वस्त-नष्ट

कामना-इच्छा

इतिहासविज्ञ-इतिहास को जानने  
वाल

विलीन-लुप्त, छिप गई

उद्घाटन-खोलना, प्रकट करना।

प० २३२, २३३

भावमयी-विचारों की

प्रपच-झगडा, झमेला

निस्तब्धता-शुष्पी, शान्ति

अलकापुरी-यत्नों की पुरी

पेरे-प्रेरित किये हुए

कितेरुहु-कितने ही

अँगनान-अँगनों



तन-शरीर

नित पौन-रुत्रि कुल गुरु कालिदा  
म ने मन्मथ नामक एक अत्यु  
त्कृष्ट काव्य लिखा है। यक्षपुरी  
के राजा कुंजर के शाप के कारण  
यक्षों की राजधानी अलना  
पुरी से एक यक्ष को बाहर  
जाना पड़ता है, तब यह  
यक्ष वायु का अपना दूत  
बना कर अपना विरहिणा  
स्त्री के पास भजता है। उसी  
यक्ष का कथन है—

रोन वायु द्वारा खड़े हुए  
कितन ही बादल घूमते घामत  
आते हैं और जल की बूँदों की  
वर्षा करके आँगनों के चित्र  
मिट्टा दते हैं। फिर डर कर तुरंत  
छोटा शरीर बनाकर मरोड़ों के  
रास्ते बाहर भाग जाते हैं। धुआँ  
बत कर इस प्रकार निरुल जान  
के कारण वे (शकल बदलने में)  
चतुर कहते हैं।

घनश्याम-काले बादल  
गिरिसोहन-पहाड़ की गुफाओं  
भरनन-मरनों  
कर-छा  
निमरत-निमली हुई

तर-पेड़

अहिम्बेद-साँप का पसीना  
फट्टे सुन्दर-ऊर्ध्व सुन्दर काले दाढ़  
हैं कहीं वे मयकर रूप धारण  
किये हुए हैं और कहीं पडाओं  
की गुफाओं में गूँजने से मरनों  
का शोर बढ़ रहा है। कहीं  
सुनसान घना जंगल है, कहीं  
जंगली जागृर शोर करते हैं।  
कहीं सोते हुए अजगर की साँस  
में पेड़ जलते हैं और उससे  
लपटें निकलती हैं। पहाड़ों की  
गुफाओं में कुछ जल भरे छोटे  
छोटे गढ़े दिखाई देते हैं। वहाँ  
गिरगिट जब घास से घबराते  
हैं तब साँप का पसीना पीते  
हैं।

कौरव-कृष्ण

काननचारी-जंगल में घूमने वाले  
निहारी-देगकर  
गाँव गाँव-सूर्यवश रूपी कुमुद के  
लिए चन्द्रस्वरूप श्री रामचन्द्र  
को देख कर गाँव-गाँव में ऐसा  
आनन्द होता था। जो कोई  
यह समाचार सुन पाते वे  
राजा रानी (दशरथ, कैकेयी) को  
दोष देने थे।

धन्य भूमि-हे नाथ, जहाँ जहाँ  
आपने चरण रखे हैं, वह  
पृथ्वी धन्य है, तथा वह धन,  
वह मार्ग और वे पहाड़ धन्य  
हैं। उस जगल के फिरने वाले  
पत्ती और मृग भी धन्य हैं जो  
आपका दर्शन पाकर सफल  
हो गये हैं। हम सब अपने  
कुटुम्ब सहित धन्य हैं कि  
जिन्होंने आपसे भर कर आप  
का दर्शन किया है।

जायसी मलिक मुहम्मद जायसी  
जिसने पद्मावत नामक महा  
काव्य लिखा है जिसमें यह  
वर्णन है कि चित्तौड़ के राजा  
रतनसेन ने सिधल द्वीप  
(लंका) में पहुँच कर वहाँ  
की राजकुमारी पद्मावती से  
विवाह किया। फिर पद्मा  
वती के पाने के लिए दिल्ली  
के बादशाह अलाउद्दीन ने  
चित्तौड़ का ध्वस किया और  
वह सती स्वयं चिता पर चढ़  
कर स्वर्ग चली गयी।

प्रेम पथ-प्रेम का रास्ता  
दीप्ति-दान्ति, चमक  
आन-गँठ प्रण

भोकमोरु-बनाव शृंगार, छेड़  
छाड़

मत्रवेत्ता-मत्र को जानने वाला  
आह्वान-बुलाना  
पृ० २३४, २३५  
सवित-शुक्र  
प्रचुर-बहुत बड़ा  
अध्यवसाय-लगातार उद्योग,  
उत्साह  
छाड़िये न-हिम्मत न छोड़िए  
और प्रभु के नाम को न  
भूलिए। जिस तरह भी राम  
रखें उस तरह रहिये।

हताश-निराश, जिस आशा  
न रही हो  
बिना विचार-बिना सोचे विचारे  
जो कोई काम करता है,  
वह पीछे पड़ताता है, और  
और ससार में उसकी हँसी  
होती है।

भीषण सग्राम-भयंकर लड़ाई  
थाप-मर्यादा, धाक, प्रतिष्ठा  
न्यायसगत-न्याय के अनुसार  
ठीक

परामर्श-सलाह

पृ० २३६, २३७

अभिप्रायगर्भित-अर्थ से युक्त  
अलम्य-जो कठिनता से मिले  
अनमोल

भाषना-ध्यान

आभा-दान्ति, चमक

## ( मक्षेप )

यदि हम कोई ऐसा चसका लगाना चाहते हैं जिससे हम एकान्त में और घुरे दिनों में आनन्द प्राप्त कर सकें और जो हम बुराइयों से हटा कर स-मार्ग दिगावे तो हमें पढ़ने का चमका डालना चाहिये । पढ़ना ज्ञान की वृद्धि और बढ़े धमक अभ्यास का एक मुख्य साधन है । यह बात सच है कि कइ एक बड़े बड़ काम करने वाले आदमी हुए हैं जो पढ़ लिगे न थे पर वे अपनी असाधारण प्रतिभा के कारण ऐसे हो सके हैं । एक तो सच साधारण आदमी वेने प्रतिभा शाली नहीं होते । दूसरा यदि वे लोग भी पढ़े लिगे होते और उन से पहले जो दूसरे प्रतिभाशाली ग्योज कर गये हैं, उनको जान सकते, तो वे और भी अधिक उपयोगी हो सकते । चाहे कितना भी प्रतिभाशाली आदमी हो पर यदि वह पढ़ा लिगा न हो तो भूतकाल उसक लिए केवल अधकार सा होता है और वह अपन आविष्कारों को बढ़ा मट्टय देता है । पर जब वह पढ़ता है तो नम पता लगता है कि उसकी प्रतिभा विष्ट वेपित बातों को छोड़ कर और कुछ आविष्कार नहीं कर सकी ।

पढ़ने क दो एक प्रमुख लाभ यह हैं कि उसके द्वारा हम भूतकाल के इतिहास को जान सकते हैं और काव्य का आनन्द ले सकते हैं । हम जातियों के इत्यान और पतन, उनकी अ-यथा के क्रमिक विकास और उनके भाग्य की अचलता को जान सकते हैं । हमें पता लगता है कि किम तरह यूनान, रोम और

भारत अपने उन्नति के दिन देख कर सांसारिक सभ्यता पर अपनी धाक जमा कर आज अवनति के गढ़े में गिर चुके हैं। फिर किस तरह उनका उत्थान हो सकता है।

इसके साथ ही जो विद्याभ्यासी आदमी है किसी भी स्थिति में उसे साधियों का अभाव नहीं गल सकता। काळि दाम, भवभूति तुलसीनाम शेकनपियर, आदि अमर कवियों का काव्य, दार्शनिकों का ज्ञान सदा उनके साथ रहता है। इसके अतिरिक्त जब हम पतन की ओर जाने लगते हैं, निराश होते हैं, हमारे सामने अधकार होता है, तब महापुरुषों की सूक्तियों से हम शिक्षा उत्साह और शक्ति प्राप्त कर सकते हैं। वे हमें रास्ता दिखा कर जीवन के भीषण मग्नम में अपनी अपनी धाक रखने में समर्थ करती हैं। उनके अध्ययन से चित्त शुभ भावनाओं और प्रौढ़ विचारों से भर जाता है। खाली बैठे रहने के समय—रेल आदि में जाते समय—अध्ययन हमारे लिए एक अच्छा मानसिक व्यायाम होता है। ग्रन्थकार की चमत्कार पूर्ण उक्तियों आदि से हम अमर भाग प्राप्त कर सकते हैं।

( २६ )

मेघ

( अनुवादक—श्री रूपनारायण पांडेय )

पृ० २३६

प्रयोजन—मतलब

कारण—कठोर

सगी—गधुर गुसकान घाली

सौदामिनी—विजली

अस्थिर—चंचल

पृ० २४०, २४१

मन्दं मन्दं उदति—जिस तरह

कुरुरुव वानु तुहे भाव नीर      गार्वा धौल रहोते मे  
 मरेदती हे मम या मरी      अवागि-मम का येर  
 कोरी चार बैठा मर चानक      कावागि-मम का की का ।  
 कविमात म-दिय मीमा चाम      मगोरम-मनामर, मुम्बर  
 रण है ।      अमगवने-मागारग  
 म'इत प्र'ग-प्यामे क'ग क'रिग      कागि ती-सुन्दरी रयी

## (मधेप)

हम गल म लियो गई कविता म ( गग फाल्ग में ) कवि  
 बादल के बरमाने व बरसने उसक रूप आदि का वर्णन स्वयं  
 बादल क मुह म वर्णन कर एक मंत्रना व्यञ्जित के मन के भावों  
 को प्रकट करता है । बादल कहता है कि उसके बरमाने में कोई  
 हमका अपना रसाध नहीं फिर वह क्यों बरमे, जब वह  
 बरसता है तब उसके हृदय पर बिजली भी आग उलती है  
 तिम दम्ब कर मनुष्य प्रसन्न होते हैं, पर खगर वह आग  
 मनुष्यों को छु भी जाय तो वे जल जायें । हमक सिखा हम  
 आग को आर कौन रम्य ग्रहता है । वायु सदा बादल को  
 घबरा दिये रहती है, परन्तु जब वह जल में भारी होता है  
 तब वायु उसका झुठ नहीं कर सकती । पेन ही जो सज्जन  
 गुण रूपी जल में भारी होता है, उसे दुनिया की धागधील-  
 अफवाह-अतिथर नहीं करती । फिर वही बादल दुनियाँ को  
 दूरा भरा करने क लिए बरमाने को तैयार हो जाता है ।  
 उसके मधुर मंत्रन से जहाँ दुनियाँ नाच उठती है, वहाँ  
 भयंकर गर्जन में सब डर जाते हैं । यही बादल आशा में  
 मिर उठाये जूही की कली को खच्छ जल से सीधेन के लिए

और नदी की आशापूर्ण करने के लिए बरसने को तैयार होजाता-  
 है। परन्तु जब वह देखता है कि बुढ़िया औरत उसी के पानी  
 को भर कर और वृंदापाँदी मन्द न होन के कारण उसे ही गाली  
 देती जाती है, तब वह अपनी निंदा सुन दिल में ठानता है कि  
 वह न बरसेगा। परन्तु कवियों की स्वागत वाणी सुन—  
 प्रसात्मक गीत सुन—उह फिर बरसने को तैयार होजाता है।  
 कवि ही उसके दुःख को समझ सकता है, क्योंकि जिस तरह  
 बादल के हृदय में बिजली रहती है, वैसे ही कवि के हृदय में  
 प्रतिभा-रूपी बिजली रहती है।

इस बात का उसे अभिमान है कि जहाँ उसके भयकर  
 रूप से सब लोग डरते हैं वहाँ सन्ध्या के समय लाल रंग के  
 बादल तथा चाँदनी रात के उड़ते हुए बादल पृथ्वी पर रहने  
 वालों के मन को हर लेते हैं। दुनियाँ में एक ही चीज उसका  
 साथ देती है, गूँज। जब कभी बादल का गर्जन होता है तब  
 गहाड़ियों की गुफाओं में गूँज जरूर पैदा होती है।

३०

### वृष्टि ( बरसात )

पृ० २४३  
 बुढ़-छोटा  
 भयुक्तों-अरथों  
 पृ० २४४, २४५

नवीनमेघमाला-नये और नील,  
 बादलों की पंक्ति  
 दिग्मण्डलव्यापिनी-चारों दिशा  
 ओ में फैलने वाली

सूर्यतेजसहासिणी-सूर्य के तेज का	पराग-मृत्तों की धृति
नष्ट करने वाला	कूलज्वायनी-फितार को धो
मौद्रामिती-विजली	हालने वाली
वृष्टिचिन्दुकुल-परमात की वृद्धा	आंतरंगसंकुजा-अत्यधिक
का समूह	तरंगों का भीड़ वाली ;
गतीर-एक छोटी जाति का फल	संहार-नाश
तरकारी आदि वचता है,	

### मक्षेप

इस गद्य काव्य में कवि दिव्याना चाहता है कि एकता में ही चल है। छोटी छोटी वृद्धें जिनकी दुनिया में कोई हस्ती नहीं जिनसे छोटा कोई नहीं, वे ही जब एका कर लेती हैं तब वे सारी पृथिवी को जलमय कर देती हैं। तेज वायु भी उनसे नहीं लड़ सकती। वह तो उलटी उन सबल वृद्धों की सहायक होती है, वह तो उनकी गुलाम है। वायु की महायता से तो वे बड़े बड़े घरों को ढा देने की शक्ति रखती हैं। एका ही उनका बल है नहीं तो वे कुठ भी नहीं। एका होने के कारण ही वे खेतों में अन्न उपजाती हैं, ससार की रक्षा करती हैं, वृण, लता, वृक्ष, पशु, पक्षी सब को जीवन देती हैं। ये क्षुद्र वृद्धें फिर भी अपने जैसी क्षुद्र चीजों का ध्यान रखती हैं और विजली से निषेधन करती हैं कि गिरना है तो अभिमान से उठे हुए सिरों पर गिरना, गरीब छोटे-मोटे पौधों पर न गिरना। ये वृष्टि की वृद्धें रसिक भी बड़ी हैं। छेड़खानी इनको प्रिय है। एका होने पर वे किसी देश के मनुष्यों की रक्षा करती हैं तो किसी देश को बाढ़ से डुबा देती हैं। उन जैसा क्षुद्र कोई नहीं, पर एका होने पर उन जैसा बलवान कोई नहीं।

## राजपूतनी का बदला

१० १५० से १५६

निरीह-असहाय, जिसे किसी  
घात की इच्छा नहीं।

भूकम्प-भूचाल

अनुकरण-नकल

यत्रणा-पोडा दर्द

रक्षरक्षित-खून से रगी हुई

वेदना-पीड़ा

यथेष्ट-काफी, पर्याप्त

सम्राज्ञी-महारानी, सम्राट् की स्त्री

विप का दाँत नहीं हुई-जैसे

सोंप का विप का दाँत चरपाड़

देने पर भी उसकी पुफकार

कम नहीं होती, जैसे ही दूरे

दिना में भी ऐंठ न जाने पर

यह उक्ति कही जाती है।

विस्मय-आश्चर्य

यत्रनिका पवन-नाटक के परदे

का गिरना।

संक्षेप



फौज को चीरती फाड़ती दिल्ली से निकल मेवाड़ में राणा राजसिंह के यहाँ पहुँच गई। राह में उसकी लड़की मर गई, पर बच्चे को दुर्गादास का विश्वास पात्र मुसलमान सेनाक क़ासिम बधा कर ल गया। महामाया ने राणा राजसिंह से बच्चे की रक्षा करने को कहा। राणा ने महामाया को उसके लिए निश्चिन्त कर दिया और रानी को बख़टके मेवाड़ में रहने को कहा, पर महामाया स्वर्गीय पति के घर को छोड़ भाई के यहाँ रहने को तैयार न हुई। राणा ने पत्र लिखकर औरंगज़ेब का ध्यान इस अत्याचार की ओर दिलाया। पर औरंगज़ेब ने बड़ी भारी सेना ले मेवाड़ पर बढाई कर दी। इधर रानी ने भी गाँव गाँव में घूमकर मोते हुए राजपूतों को जगा दिया था। मेवाड़ और मारवाड़ की सम्मिलित फौज ने दुर्गादास के सेनापतित्व में मुग़लों का मुकाबला किया। इसमें मुग़लों की बड़ी भारी हार हुई। बेगम गुलनार को दुर्गादास ने कैद कर लिया। राणा राजसिंह ने उसी समय बेगम को छोड़ देने के लिए कहा पर कोषाघ और बदले की आग में जलती हुई रानी अपना सत्यानाश करने वाली गुलनार को कठोर से कठोर दण्ड देने चाहती थी। राजपूत राणा किसी स्त्री पर यह अत्याचार न देख सकते थे और उन्होंने दुर्गादास से कहा कि वह सम्मान के साथ बेगम को बादशाह के पास पहुँचाये।

दुर्गादास ने रानी को बताया कि बेगम आज मेवाड़ के राणा के यहाँ कैद है, मारवाड़ की रानी के यहाँ नहीं और राणा ने उसी के लिए युद्ध किया है अतः उनकी आज्ञा मानना भी रानी का धर्म है। इस बात ने महामाया की आँखें खोल दीं।

और उसने राणा राजसिंह से क्षमा याचना की। राणा ने कहा कि जो क्षमा तुम मुझने माँग रही हो वह क्षमा तुम बेगम को दिखलाओ, और वे रानी की दया पर बेगम को छोड़कर स्वयं वहाँ से चले गये। बेगम महामाया के सामने पेश की गई। चक्र पलटा हुआ था। जिस बेगम ने महामाया को दूध देना था, आज वह स्वयं कटघरे में थी। पर उसकी एठ न गई थी। महामाया ने उसमें पूछा कि यदि वह कैद कर ली जाती तो बेगम उसके साथ क्या करती। बेगम ने कहा कि वह महामाया को पैर का धोवन पिछाती और मार डालती। महामाया ने कहा-- बेगम, आज तुम मेरे यहाँ कैद हो, चाहूँ तो तुम्हारी हत्या कर सकती हूँ, तुम्हें पैर का धोवन पिला सकती हूँ, पर मैं तुम्हें छोड़े देती हूँ। गुलनाग विस्मय से देखने लगी। रानी बोली-- राजपूता का यही पदला है।

३२

## हिन्दू जाति की पाचन-शक्ति

( लेखक—श्री भागीरथप्रसाद दक्षिण )

पृ २६०, २६१

आदि—जिसका आदि १६०,

महान् प्रार्थना काल से

कमबद्ध-मिलमित्तवार

मिथीय-मिथ दूध के निवामी,

मोका के उत्तर

मुद्र के तट पर।

पि, जा बहुत प्राचीनकाल में

सभ्यता और उन्नति के लिए

बहुत प्रियता था। यह दश

तय रोग और भारत के परावर

मध्य समझा जाता था। पर

बाव भारतका पतन ही मुका है।

यहाँ के निवासी अब मुस  
हामान हैं और आनकल वे  
अंगरेजों के मंत्राण म हैं।

वैथिलोनिया--वैथालान क  
निवासी। वैरातीन चगदाद  
से ६० मील दूर प्राचाग नगर  
है। वहाँ का साम्राज्य इराक  
और फारस क प्राचान साम्रा  
ज्यों मे से था। इसकी सभ्यता  
बहुत पुरानी मानी जाती है।  
सीरियन-एशियाटिक टर्की म  
भूमध्यसागर क किनारे बस  
हुए साम्राज्य के निवासी। कहते  
हैं, भूमध्यसागर के किनारे ही  
पहले पहल सभ्यता का प्रसार  
हुआ था।

सीथियन-सीथिया क निवासी,  
काला समुद्र के उत्तर और पूर्व  
में अराल की खाड़ी के पास  
पाम एशिया तुर्किस्तान का  
प्राचीन साम्राज्य सीथिया  
कहलाता था, यह सभ्यता का  
कन्द्र था शक जाति यहीं की  
रहने वाली थी।

स्पार्टन-ग्रीस (यूनान) क पुराने  
प्रदेश क निवासी। यूरोप म  
सबसे पहले यहाँ सभ्यता का  
प्रचार हुआ।

रेडइंडियन-अमेरिका के सबसे  
पहले निवासी।

द्वार मुक्त करने-द्वार रोल्लेन,  
अन्दर आन दे।

अंगोशर-स्वोशर मजूर  
जात्युन्नति-जाति की उन्नति  
समयोचित-समय के अनुसार  
ठीक

पृ० २६२, २६३

दस्यु-मज्जु, अनार्य, भारत के  
प्राचीन निवासी।

गविड-दक्षिण भारत की प्रसिद  
जाति।

आरण्यक-उपनिषद्, वेदों को  
शाखा का वह भाग जिसमे  
वानप्रस्था के कृत्यों का विव-  
रण और उनके लिए उपदेश  
मृति-धर्म ग्रन्थ, जो १८ माने  
जाते हैं।

यवन-मुसलमान।

तक्षशिला-रावलपिंडी के पास  
एक नगर जो प्राचीन भारत  
म शिक्षा का कन्द्र था।

पृ० २६४, २६५

साम्यवाद्-समाज के भेद भाव  
को दूर कर समानता बनाने  
के विचार

स्तम्-वर्भा, मीनार।

बुद्ध म शरणम्—मुझे बुद्ध की  
ही शरण है ।

पृष्ठ २६६ २६७

विद्वान्-विगडा हुआ ।

दरगाह—किसी सिद्ध फकीर का  
समाधि स्थान ।

पार औलिया—पहुँचा हुआ फकीर  
मदिरा—शराब

दुर्व्यसन—गराब आदत  
तात्रिक-तंत्रशास्त्र में कहे गये,

मारण, मोहन जत्र मत्र आदि  
व्यवस्था—शास्त्रों द्वारा विधान  
पृष्ठ २६८

कठी—तुलसी आदि की मनियों  
की माला जिसे वैष्णव लोग  
गले में बाँधते हैं ।

### ( संक्षेप )

ससार की सपूर्ण प्राचीन सभ्य जातियाँ मिथीय, बेबिलोनियन आदि पृथ्वी तल से मिट गयीं, साथ ही उनकी सभ्यता का नामोनिशान भी मिट गया एक हिन्दू जाति ही ऐसी है जिसकी सभ्यता अब तक बची है । हमारे त्यौहार एवं वनाश्रम व्यवस्था हमारे संगठन और जीवन के सुदृढ़ प्रमाण हैं । मारा धर्मक्षेत्र केवल हमारी ही जातियों के लिए समुचित ही रहा, इसका द्वार सब साधारण के लिए सदैव खुला रहा । वेद काल में आर्यों और दस्युओं में सघर्ष होता रहा । ऐतिहासिक काल में भी मिथ्र और मध्य एशिया में कण्व और व्यास के जाने का वर्णन मिलता है । कहते हैं कण्व अपने साथ कई हजार मिथ्र निवासियों को भारत में ले आये, जो कुछ ही वर्षों में हम में घुल मिल गये । जावा द्वीप भी दिक उपदेशकों से आगूता नहीं रहा । अमेरिका के मैक्सिको में अब सब राम का उत्सव मनाया जाता है । बौद्ध जल में तो बौद्धों ने लगभग आधे भूमण्डल में—चीन, जापान, अफगानिस्तान, अरब तुर्किस्तान आदि सभ्यताओं में बौद्ध धर्म की सुदृढ़ धरती बना दी थी । बौद्ध धर्म

धर्म की शाखा मान्य है। इन समय भी ५५ करोड़ बौद्ध हैं। यह हिन्दू जाति भी पारस शक्ति का अन्तर्गत ममान है। इसके बाद धीरे धीरे, परद्वेष, पुमान और हूण आदि जो आक्रमणकारी प्रोम, मिथिया, पैथिलोनिया, तिब्बत, और तुर्किस्तान आदि प्रांतों में आये थे, और जिन्होंने भारत को बार बार घुसल कर दिया था पीटे जा चुके भी इसी हिन्दू जाति में मिल गये। अब उक्त पहचानना भी कठिन है। बौद्धों की अवनति काल में शकराचार्य ने फिर बेशकी ध्वनि उठायी और बुद्धि के बड़े सरल नियम बनाये। इसके बाद आनुष, बहभाषार्य, चैतन्य महाप्रभु आदि भक्तों ने कई मुसलमानों को शुद्ध किया। पीछे भी अन्य कई सुधारक मुसलमानों आदि को मिलाते रहे। आनकल भी महा समान आर्यममान आदि सरथार्य मुसलमानों को शुद्ध कर हिन्दू जाति में मिला रही हैं। सारांश यह कि प्राचीन काल से अब तक हिन्दू जाति अन्य जातियों को अपने में मिलाकर उनका पाचन करती आई है। मनुष्यों की भाँति कई जातियाँ ऐसी हैं जिनके रीति रिवाज अधिकतर हिन्दू हैं उनको शुद्ध करने का प्रयत्न करना चाहिए।

३४

लाहौर में रावी नदी का उपाकालीन दृश्य -

( लेखक—श्री सतराम श्री ० )

पृ० २७२, २७३

मनोभाव—विचार

बापी—बाघड़ी

शरीरप्रज्ञान—शरीर धोना

मुख मंडल—चेहरा

पृ० २७४, २७५

जनाश्रय—आदमियों की भीड़

वाली

निरंतर—हमेशा, लगातार

ज्यादा-सुय का एक राशि से  
दूसरी राशि में प्रवेश करने  
का समय

निवृत्त-फारिंग

मौड़ खबरवा-बड़ी समर

धोप-आवाज

पृष्ठ २७७

पुश्रवसना-सफेद कपड़े वाली ।

पृ २८०

विकराल-भयंकर

काया-शरीर

किशारी-नवयुवती

भीमकाय-भयंकर शरीर वाली

आसुरी-राक्षसी

(संक्षेप)

रावी नदी के तट पर प्रातः सैर और स्नान के लिए रोज  
वैरे अनेक लोग जाते हैं, इनमें हिन्दुओं की संख्या अधिक  
ती है। क्योंकि साधारणतया हिंदू स्नान के बिना रह ही नहीं  
कते। रावी नदी अब लगभग लाहौर से दो मील की दूरी पर  
हती है। रावी को जाने वाली सड़क पर वेद मन्दिर और  
शारी भवन दो प्रसिद्ध जगह हैं। सबेरे घूमने वालों में बूढ़े  
पिसमाजी, 'ओं नमस्ते' की आवाज करते हुए जोशीले आर्थ  
माजी युवक, 'जय सीताराम' पुकारते भक्त लाला लोग, काले  
धरे पहने प्रभुभजन गाथी स्त्रियाँ और कुछ नवयुवतियाँ भी  
ती हैं। इनमें से अधिकतर नदी पर स्नान करने चले जाते  
। नदी पर कोई पक्का घाट नहीं। इन स्नानार्थियों के सिवाय  
बानू लोग पुल के ऊपर होकर रावीके दूमरे पार जाते दिखाई  
। ये अधिकतर अपने दफ्तर की चर्चा करते रहते हैं।

संक्रांति, अमावस्या या त्योहारों के दिन रावी पर स्नाना  
यों की भीड़ बहुत बढ़ जाती है। उस दिन रंग बिरंगे वस्त्र  
पने वाली नवयुवती स्त्रियों की संख्या होती है।

## काहनू जी आँत्रे

पृ० २८१

संनर्प-स्पृहा मुकाबला

पृ० २८२, २८३

नि शक-निडर

अघोरकर्मा-भयंकर काम

करनेवाला

शीघ्रगामिनी-जल्दी चलनेवाली

वेवट-मल्लाह

रक्तपिपासु-खून का प्यासा

निरत-त पर किसी काम में

लगे हुए

प्रतिद्वंद्वी-मुकाबला करने वाला

विष्वस-नाश

जुआ गने म पहनता-अधीनता

स्वीकार करना

निर्भीक-भयरहित

ओत प्रीत करना-भरना

पृ० २८४, २८५

निरूपण-ठीक २ पता लगाना।

दुखवात्ता-दुख की कहानी

दोषारोपण करना-दोष लगाना

सल्लघन-तोड़ना

निर्गता-फैसला करने वाला।

सुव्यवस्था-अच्छा प्रबन्ध

समदर्शिता सबको एकसा समझ

समरभूमि-युद्ध क्षेत्र

दैवयोग से-इत्तफाक से

मुठभेड़-सामना, लड़ाई

शौर्य-शूरता महादुरी

पृ० २८६, २८७

आखेट-शिकार

गगनभेदी-आकाश को फड़ने

वाली, धड़ो उँची आवाज

बुभुक्षु-महायुक्त सेना

विक्रान्त-बहादुर, शूरवीर

नवप्राप्त-नये पाये हुए

पृ० २८८, २८९

धनुगुमान-शक्ति, असंतुष्ट

कमारण्डर-सेनापति

खटराग-झंभट, धरोडा

प्राणहानि-प्राणोंकी हानि, मौत

पृ० २९०, २९१

काल-मौत, भय

कगल-भयंकर

अट्टहास-उँचे स्वर से हँसी

ढेर होगया-गिरकर मर गया।

दत्तक-गोद लिया हुआ

लोकप्रिय-सब का प्यारा

विष्णु-जबान  
 उपहार-भेंट  
 अजय-जो जीता न जा सके  
 अनुग्रह-कृपा  
 १० २९०, २९३  
 अमित-असीम देहद  
 मागरपरिवेष्टित-सागरसे घिरा हुआ  
 हौआ-हर की चीज  
 मानचित्र-नक्शा  
 गढ़-किला  
 पापाणभय-पत्थर वाला  
 अन्तरीप-टापू, द्वीप  
 भूनासिका-अन्तरीप  
 बालुकामय-रेतीला  
 डमरूमध्य-धरती का वह तग या  
 पतला भाग जो दो बड़े  
 भूमिरांडों को मिलाता है  
 हॉक-जहाजोंके ठहरनेकी जगह  
 सागर दस्यु-समुद्री लुटेर

पृ २६४, २९५  
 मूर-उत्तर पश्चिमी अफ्रीका के  
 रहने वाल अरब जाति के  
 मुसलमान  
 डचमेन-हौलैंड क रहने वाले  
 रक्षरजित-खून से रँगी  
 विवेकशून्य-भले बुरे का विचार  
 न करने वाला  
 दुरात्मा-पापी  
 उच्छ्व, ह्वल-स्वेच्छाचारी, मनमानी  
 करने वाला, जो कोई  
 नियम न माने  
 पादयन्दन-पैर धूना  
 धन-लोलुपता-धन का लालच  
 भयभीत-डरे हुए  
 उत्कर्ष-समृद्धि, बढ़ती  
 त्रास-डर  
 गर्वित-घमण्ड से युक्त  
 कलश-उँचे शिखर  
 घराशायी-पृथ्वी पर लेटा हुआ

(संक्षेप)

१८वीं शताब्दी में मलाबार के सागर तट पर कई  
 भयानक समुद्री लुटेरे रहते थे। उनका काम पश्चिमी सागर से  
 आने वाले व्यापारियों के जहाजों को लूटना था। उस समय  
 वे व्यापारियों में आपस में बड़ी प्रतिस्पर्धा थी। वे  
 स्वर्द्धियों—विरोधियों—को नीचा



लिए इनसे सहायता लेने थे। इन समुद्री लुटेरों में काहनू जी  
 आंम सबसे अधिक विख्यात था। कहते हैं उसका दादा शत्रुघ्नी  
 आंम एक अरबी व्यापारी जहाज में मराहों का नेता था। सन्  
 १६४८ में यह जहाज मराठों से चला था। वायु के दकेलने से  
 यह भारत में चौल के समीप एक छोटी सी खाड़ी में आ लगा।  
 रास्ते में मालिक और मराहों में विरोध हो गया। जिस जगह  
 पर जहाज लगा था, वहाँ के राजा ने जहाज के बारे में पता  
 लने के लिए आदमी भेजा, तो मराहों ने मालिक के विरुद्ध  
 और मालिक ने मराहों के विरुद्ध निकायत की। बहुमत को  
 मानकर मालिक की इत्या कर दी गई।

इधर उस राजा की मुगल-सम्राट् के साथ लड़ाई हो रही  
 थी। उस राजा ने इन मराहों को अपनी सेना में भरती कर  
 लिया और उनके साथ कुछ आदमी मिलाकर एक छोटी सी  
 सेना समरभूमि की ओर भेज दी। यह भी मुगलसेना से  
 मुठभेड़ हो गई। इस समय राजा की सेना का नेता अपने से  
 पांचगुना मुगलसेना को देखकर भाग गया। पर मराहों का  
 नेता शत्रुघ्नी आंम बड़ा साहसी था। उसने गाड़ियों और असबाब  
 के छक्कों का घरा बना उसके पीछे अपने साथियों को  
 छिपाकर शत्रुओं पर गोली चलाना शुरू किया। इस तरह  
 उसने बड़ी मुगल सेना को हरा दिया। यह खबर सुनते ही  
 राजा ने प्रसन्न हो उसे सेना में उच्च पद दे दिया। कुछ दिन  
 बाद महामंत्री की कन्या से उसका विवाह हो गया। सन् १६७७  
 में खूब मान प्रतिष्ठा प्राप्त कर वह इस दुनिया को छोड़ गया।  
 राजा भी कुछ ही दिन बाद चल बसा। उसका पुत्र नया राज्य

कर फूट गया। उसने दिल्ली दरबार से युद्ध ठान लिया।  
 तत्सूरत के नवाब ने राजा पर चढ़ाई कर दी।

शमु आँमे का पुत्र उसके जैसा ही योद्धा था। पर नये  
 राजा ने उसे सेनापति न बनाकर वह पद दूसरे को दे दिया।  
 आँमे नाराज हो नवाब से जा मिला। लड़ाई हुई।  
 राजा का सेनापति पराजित हुआ। आँमे उसे झटपट  
 हल्ल कर देना चाहता था, पर नवाब ने उस अभयदान दिया।  
 आँमे अब नवाब से भी नाराज हो गया। इतने में राजा ने  
 अपनी गलती समझी और आँमे को प्रधान मंत्री बनाने तथा  
 अपनी बहन का विवाह उससे कर देने का प्रलोभन दिया।  
 आँमे जाने से पहिले नवाब से बदला लेना चाहता था, अतः उसने  
 बहुत से सिपाहियों को अपने साथ मिला लिया और  
 नवाब को शत्रु पर हमला करने की एक उद्दिष्ट युक्ति बतलाई। नवाब  
 उसकी बात मान कर सेना सहित एक रात नाले के अंदर बढ़ता  
 गया। उस नाले के मार्ग को दूमरी ओर से राजा ने घेरा हुआ  
 था। जब नवाब ने वापिस होने की सोचो तब म्बथ आँमे के साथी  
 उस पर पिल पड़े। नवाब के ६००० मनुष्य उस युद्ध में मारे  
 गये। बदला ले चुकने के बाद आँमे फिर राजा से जा मिला।  
 राजा ने उसका साथ अपनी बहन का विवाह कर दिया, पर  
 थोड़े दिन बाद धीरे धीरे अपने पीछे दो छोटे छोटे बच्चे छोड़कर  
 युद्ध मैदान में मारा गया। राजा ने उन पुत्रों को बड़े प्रेम से  
 पाला। पर एक तो मर गया दूसरा काहूँकी आँमे आगे चल  
 कर फूला। जब वह जवान हुआ तो राजा ने उसे कुठ  
 और फोरी टापू का अजय दुर्ग उपहार में

आँप्रे ने भी मुगलों के आक्रमण होने पर राजा की बहुत सहायता की।

इधर आँप्रे ने रूस में एक शक्तिशाली नौसेना और सागर से घिरे हुए दुर्ग को मजबूत बनाकर यूरोपीय व्यापारियों के जहाजों को छुट्टा शुरू किया। उसके बाद आँप्रे ने पुतगीर्जा को हराकर बम्बई और गोआ के बीच सागर तट पर स्थित गेदिगा नामक जगह को छी लिया। यहाँ के दुर्ग पर अधिकार कर बादशाह ने विदेशियों के छुट्टे छुटा दिये। फिर पुतगीर्जा और दूसरे व्यापारियों को मगाकर उसने समुद्रतट का और भी बहुत सा भाग जी लिया। अब वह काफी बड़े भूभाग का शासक हो गया। उसके सेना में फ्रेच, पोर्चुगाल हिन्दू सब जातियों के लोग थे। अंगरेजों ने भी उसके सामने राज भक्ति की शपथ ली थी। परन्तु वह व्यापारियों के लिए हीरा और समुद्री डायमण्ड के सरदार की आँप्रे को कुछ काल के बाद ही नीचा देखना पड़ा और उसका दुर्ग सहस्र सहस्र कर दिया गया।

३६

उन्नत देश के देहाती कैसे रहते हैं

( लेखक—श्री महावीर प्रसाद श्री वास्तव श्री ए )

<p>१७०० से १८०० तक          खेती-करने वाले, किसान          जनश्रुति-अफवाह, किंवदन्ती          जिज्ञासा-श्रुति-ज्ञान प्राप्त करने का</p>	<p>आदत पूछ ताछ करने की          -वृत्ति।          वाग्विद्विनी-भाषण शक्ति को          बढ़ाने वाली</p>
---	---

कर्मव्यविमूढ—जो यह न जान  
सके कि क्या करना चाहिये  
और क्या न करना चाहिये

दिवङ्ग—तैयार

विनाशर—जीवन के आधार,  
सहार

व्यागसमिति—ऐसी समितियाँ

जो सस्ते दामों पर इकट्ठा  
माल खरीदती हैं, और फिर  
बिना मुनाफे के अपने सदस्यों  
को बेच देती हैं।

पेडिय—सामारिक दुनियाधी

हियाव—साहस, हिम्मत

### ( सक्षेप )

यूरोप में डेन्मार्क एक छोटा सा देश है। यहाँ के ग्राम  
निवासियों का जीवन आदर्श जीवन कहा जा सकता है।  
उनको सप्ताह की घटनाओं का ज्ञान तथा अपने देश के  
राजनीतिक मसलों का पूरा परिचय रहता है। उन गाँवों में  
ऐसा कोई घर और ऐसा कोई किमान नहीं जो राजनीतिक  
घटनाओं से परिचय न रखता हो। डेन्मार्क की इस सामाजिक  
राजनीतिक और आर्थिक उत्थिति का मुख्य कारण वहाँ के प्रत्येक  
गाँव में एक मिलन मन्दिर का होना है। यह मन्दिर सारे गाँव  
का सामाजिक केन्द्र होता है, जहाँ पुरुष और स्त्री सभी दिव  
बहलाने और गपशप करने को इकट्ठे होते हैं। प्रत्येक मिलन  
मन्दिर में एक सभाभवन, एक वाचनालय और पुस्तकालय होते  
हैं। जिनमें सब तरह के समाचार पत्र और पत्रिकाएँ आती हैं।  
जाड़े के दिनों में इन मिलन मन्दिरों में व्यायाम करना  
विस्तार में आता है। व्याख्यान होते हैं, वाद विवाद होते हैं,  
जिनमें विश्वविद्यालय के विद्यार्थी भी आते हैं। कभी  
व्याख्याताओं को पुरस्कार भी दिया जाता है। पर

अधिकतर वे अपना कतव्य समझ कर ही व्याख्यान देते हैं।

प्रत्येक गाँव में गवर्नमेंट के काम पर विचार करने के लिए एक राजनीतिक सस्था, अन्न शस्त्र चलाने की शिक्षा देने वाली सस्था, तथा भूमि की उपज बढ़ाने के उपायों पर विचार करने के लिए कृषि सुधारिणी सस्था होती है। इसके अतिरिक्त खरीदने और बेचने की सुविधा के लिए सहयोग-समितियाँ भी होती हैं। इन सस्थाओं के अतिरिक्त राजनीति, इतिहास, अर्थशास्त्र, कृषि आदि सिखाने के लिए स्कूल तथा कृषि विद्यालय भी हैं। जाइँ में जब कुछ काम नहीं होता तब इनमें कई कृषक और खेती करने वाले मजदूर दाखिल हो जाते हैं, और शिक्षा प्राप्त कर अपने साथियों को भी सिखाते हैं।

डेन्मार्क का भी हमेशा से ऐसी दशा नहीं चली आई। १८६५ ईसवी में इसकी हालत बहुत खराब हो गयी थी। परन्तु उसके बाद कुछ देशभक्तों की मदद से देश भर में घूम कर एकता और जाग्रति का मंत्र फूँका। किसानों की दशा को उन्नत करने के लिए देशभक्त कृषि विद्या विशारद उन्हें खेती की वैज्ञानिक रीतियाँ बताते, खरीदने बेचने के लिए सहयोग समितियों की स्थापना करने में सहायता देते, और एक दूसरे से मिलकर काम करना सिखाते थे। घमोंपदेशकों ने छोटे छोटे गाँव के गिर्जाघरों में उपदेशों द्वारा, राजनीतिज्ञों ने गाँव निवासियों में अपने व्याख्यानों द्वारा और गायकों और नाटक मडलियों ने देशभक्ति की कविताओं द्वारा सारे देश में फिर जाग्रति पैदा कर दी। जिससे सप्ताह में एकदिन गाँव

इसे सब आपस में मिलकर बैठने लगे। मिल्न-मन्दिर बने।  
 शिवमन्दिर और पुस्तकालयों की स्थापना हुई। फलत आधुनिक  
 सभ्यता से डेन्मार्क की यह दशा हो सकी। इससे भारतीय भी  
 अनुकूलतया जान सकते हैं।

३७

## कृष्ण चरित

( प्रो० शिवाधार पाठेय )

२० ३०८, ३०६

धनपौर घटा-गहरी काली घटा

मंगल-कल्याण

सीण-कमजोर

मनु-ब्रह्मा के पुत्र जो मनुष्यों के

मूल पुरुष माने जाते हैं, इन्होंने

ही मनुस्मृति बनाई, जिस

में मनुष्य मात्र क सब धर्मों

का विधान है।

पृथ्वीनाथ-पृथ्वी के भ्रातृ

पृथु-इन्द्राक्षर्यश के पंचवें राजा

का नाम जो त्रिशंकु का पिता

था। पुराणानुसार इसके राज्य

काज म पृथ्वी पर अन्न उत्पन्न

होना बंद हो गया था। तब

इसने पृथ्वी पर चलाने के

लिए पर मीर बढ़ाया

गौ का रूप

घर कर भागने लगी, और

थकने के बाद फिर इसकी

शरण म आई, और धोली

आप मुझे दुहकर औपधियाँ

अन्न आदि उत्पन्न कीजिए।

इस पर इसने मनु को बहड़ा

बनाकर उस गौ को दुहा।

और फिर अन्न आदि होना

प्रारम्भ हुआ।

अक्षयि याशवल्क्य-ये राजा जनक

क दरबार में रहने थे। और

यह ब्रह्मज्ञानी थे, मंत्रेयी और

गार्गी इन्हीं की पत्नियाँ थीं।

प्रेरणा-उत्तेजना

प्रकृति-स्वभाव

२० ३१०, ३११

अब्रह्मा-विधास और आदर

न होना।

शौद्धत्व-अस्त्ररूपन, वज्ररूपन  
 पर्यट-जगली आतिशय देश फारम  
 अक्षौहिणी-पद्मी भारी सना जिस  
 में पैदल, घोड़े रथ और हाथी  
 की नियत संख्या होती थी ।

प्रहार-चोट

कर्मकाण्ड-यश आदि काम

पृ० ३१२ ३१३

जागृत्यमान-तेजवाला, काम्ति  
 वाली

व्योति-प्रकाश, परमात्मा

आविर्भाव-उत्पत्ति, प्रकट होना

राजसुय यज्ञ-यह यज्ञ जिमके

करने का अधिकार केवल

उसी राजा को होता था जो

सम्राट् (राजाओं का राजा)

पद का अधिकारी हो ।

अर्घ्य-पूजा

तिल का ताड़ करना-किसी छोटी

घात को बहुत बढ़ा देना

मृतप्राय-लगभग मरा हुआ

पृ० ३१४, ३१५

केशी-एक राक्षस

तामसिक-अंधेरे वाला

विह्वल-व्याकुल, घबराया हुआ

आवेश-प्रवेश

परमहंस-परमज्ञानी

सुवर्ण-स्वर्ण, सोना

ईचील-इमाइयों की धर्म पुस्तक

पृ० ३१६, ३१७

मुचंग-साँप

सत्राजित-एक यादव था । इसने

मूर्य की तपस्या कर स्व-

मन्त्र मणि प्राप्त की थी ।

एक दिन वसका भाई प्रसेन

मणि लेकर शिकार को गया

वहाँ शेर ने प्रसेन को मार

कर मणि छीन ली । शेर को

मारकर वह मणि जाम्बवन्त

ले गया । मणि खोजने और

भाई के मारे जान पर

सत्राजित ने यह दोष श्री

कृष्ण पर लगाया । पीछे भी

कृष्ण ने यह मणि ढूँढ कर

ला दी, तब सत्राजित बहुत

लजित हुआ और उसने

श्रीकृष्ण को अपनी कन्या

सत्यभामा द्याह दी ।

सत्यभामा से शतघन्वा,

शुतवर्मा और अक्र भी विवाह

करना चाहते थे । जब उन्हें

यह पता लगा तो शतघन्वा

ने सत्राजित को मार मणि

छीन ली । इस पर बलराम

और कृष्ण शतघन्वा से

ले जाने गये, तो शतघन्वा मणि  
अक्रूर को दे स्वयं भाग गया,  
कृष्ण ने उसका पीछा कर  
उस मार दिया पर उसके  
पास मणि न मिली। कृष्ण  
ने आकर बलराम से कहा,  
पर बलराम ने समझा कि  
कृष्ण मूठ बोलता है, अतः  
बलराम द्वारका छोड़ गये।  
पीछे कृष्ण ने अक्रूर से कहा  
कि तू केशव मणि दिव्या दे  
हम रखेंगे नहीं। तब अक्रूर  
ने दिया ही और कृष्ण पर  
से दोष हटा।

गणप-पराक्रम

पृ० ३१८, ३१९

उरुवृद्ध-बुरुकुल में पृष्ठ

दाक्षिण्य-चतुरता

श्रुति-वेद

वीर्य-बल

कीर्ति-यश

श्री-शोभा

धृति-धैर्य

तुष्टि-सन्तोष

पुष्टि-दृढ़ता

अच्युत-कृष्ण

कृष्णने काली

इसथन किया था।

नाथ कर-नकेल डालकर, बल

पूर्वक वश में करके

लाङ्घन-कलंक, दोष

अनन्य-जिसके समान दूसरा न हो

पृ० ३२०, ३२१

अधिकृत-अधिकारमें आया हुआ

ससर्गदोष-बुरी छंगत के दोष से

अधीश्वर-राजा

पृ० ३२२, ३२३

तेजोऽग्नि-तेज रूपी आग

कपट धृत-छल से जुधा खेलना

विश्वधिजयी-ससारकी जीतनेवाला

दूषित-तराब

रुधिर-खून

उद्दण्ड कुटुम्ब का नाश कराया-

कहा जाता है कि महाभारत के

अंतमें यादव शराब पीकर बहुत

उद्वेग हुए। उन्होंने ऋषियों

से मर्याद की, इस पर ऋषियों

ने उन्हें आप दिया। कृष्ण ने

आप को शत न कराया,

अपितु उन उद्दण्ड व्यक्तियों

के नाश में सहयोग दिया।

दौर्यव्य-दुर्बलता

पृ० ३२४, ३२५

सरलातिसरल-अत्यन्त सरल

कर्ममार्ग-'बिना फल की इच्छा

कर्म करते जाना' यह।



नर का नारायण का मन्देश-भय	कमल-जल लोपन—
प्य का भगवान का सदेश	पंशुद्वियों के मसान का
१० २३० २३१	दुहित दुःस्योचन-पाप
अभ्युदय-यदती	दू-पों से सुदो बाने
सृजता हूँ-पैदा करता हूँ	भाष भयकारी-भय के भय
	रू करने बाने ।

### संक्षेप

जब भारत आधिय दृष्टि से बहुत दसत था, उस में  
 बह राज्य समृद्धिसाली गगर तथा अनेक वीर और प  
 योद्धा बतमान थे परन्तु कही ऐक्य का नाम नहीं था,  
 जगह अनाचार, अधर्म और अत्याचार का राज्य  
 परमात्मा पर स विश्वास उठा जा रहा था, ऐसे समय भ  
 कृष्ण का अवतार हुआ । कृष्ण के जीवन से कइयों ने  
 करने का प्रयत्न किया है, कइयों ने उनके जीवन पर  
 दोष लगाये हैं, परन्तु हम देखते हैं कि राजसूय का  
 जब शिशुपाल उनकी निन्दा कर रहा था, तब भी उसने  
 चरित्र पर दोष नहीं लगाया । इसके बाद हम देखते हैं  
 जब भगवान ने मृतप्राय परीक्षित को जिलाया, तब उ  
 यही कहा कि यदि मैंने कभी मूठ न खोला हो  
 पाप न किया हो तो यह मालक जीवित होजाय । तब  
 तेज की शक्ति से यह जीवित हो गया । भगवान इ  
 सपूर्ण जीवन ही आश्चर्यमय है । यह भागवत  
 महाभारत से पता लगता है । भागवत में वर्णित कृष्ण  
 अन्त तक पवित्रता के भाव से भरा हुआ है । परन्तु कवि

का शोष नहीं ।

कृष्ण के चरित्र जैसा दूसरा चरित्र मिलना कठिन है। कृष्ण क्या नहीं थे, यह कहना कठिन है। कृष्ण राजनीतिज्ञ थे, शुक्राचार्य उन्हें अद्वितीय राजनीतिज्ञ मानता है। अद्भुत वीर थे, अद्वितीय धनुर्धर भीष्म भी उनकी प्रशंसा करते थे। इतने पर भी बड़े नम्र थे। राजसूययज्ञ में उन्होंने सब के पैर धोने का काम लिया। सारांश यह कि दान, चतुरता, वेदज्ञता, बल, प्रशंसा, बुद्धि, शोभा, धैर्य, मतोप, दृढ़ता, सब गुण कृष्ण में विद्यमान थे। सगीत और कविता में ये अद्वितीय थे। उनको अर्ध तक नटवर नाम से पुकारा जाता है। गीता उनकी कविता का सर्वोत्तम नमूना है। उन्होंने ब्रह्मपन वृन्दावन की आनन्दमयी भूमि में नागों को नाथ कर, पहाड़ों को हटार कर बिताया। जीवन में प्रवेश करते ही कंस को मारकर उपसेन को राजा बनाया। समुद्र तट पर द्वारिका बसायी। भारत से अनाथों का नाश करने के लिए उन्होंने प्राग्ज्योतिष के राजा नरक, दक्षिण देश के वाण और मायावी शत्रु आदि अत्याचारियों को नीचा दिखाया, या उनका वध किया। पर उस समय अनाथों से अधिक अत्याचारी आर्य राजाओं से डर था। इनमें से जरासंध उस समय बड़ा प्रभावशाली था। उसका शत्रुता हाथ शिशुपाल था, जो कि स्वयं कृष्ण की युष्मा का शत्रु था। उसके प्रयत्न से सब प्रभावशाली जरासंध मानने लगे थे। ऐसी अवस्था में

को राजसूययज्ञ करने का आदेश किया । उस समय कृष्ण ने कौशल से जरामुच का विनाश कराया, उसी प्रकार शिशुपाल स्वयं उाकी क्रोधाग्नि में जल गया । इसके बाद कौरवों का अत्याचार बढ़ते देख कृष्ण ने उनका वध कराया । उसी प्रकार उन्होंने अपने उद्वल कुटुंब ( यादव वंश ) का भी नाश कराया ।

कहा जाता है कि कृष्ण ने महाभारत करवा कर भारत के पौरुष का नाश करवा दिया । पर यह सत्य नहीं । कृष्ण ने तो केवल दूषित रुधिर की तरह अत्याचारियों का नाश किया था । महाभारत के बाद भी क्षत्रिय उंचे रहे, परन्तु उनमें एकता की कमी थी, अतएव भारत फिर उन्नत न हो सका । कृष्ण ने धर्मराज्य स्थापित कर सरल धर्म मार्ग बता दिया, परन्तु यदि उससे लाभ नहीं उठाया गया तो उसमें देश का दोष है, कृष्ण का नहीं । श्री कृष्ण ने धर्म का जो मार्ग बताया वह उनके उपदेश गीता में वर्णित है । युद्ध के लिए तैयार अट्टारह अक्षौहिणियों को देखकर किंकर्तव्य विमूढ़ अर्जुन को युद्धक्षेत्र में गीता का यह उपदेश दिया गया था । अर्जुन की तरह ही अन्य मनुष्य भी कई अवसरों पर अपना कर्त्तव्य निश्चित नहीं कर सकता, उस समय गीता उसका उत्तर देती है । गीता का ज्ञान अनंत है, कई विद्वानों ने गीता की टीका की है । गीता का सार है—जीव अनित्य है, आत्मा कभी नहीं मरती, अत अमर है । माया के कारण मनुष्य, झूठे ससार को सच मान बैठा है । यह माया कर्म-जाल से पैदा होती है । मनुष्य जो कर्म करता है उसका फल होता है । उन फलों को भोगता हुआ वह दुःख-सुख

अनुभव कर इस ससार में खकर काटता फिरता है । यदि  
माया छूट जाय तो मनुष्य को छुटकारा मिल जाय ।

माया कर्मों से ही पैदा होती है, और छूटती भी है कर्मों  
से ही—पर निष्काम कर्मों से । यही गीता का उपदेश है । काम  
तो पर फल की इच्छा से नहीं । जो कर्म फल की इच्छा से न  
किये जायेंगे, उन कर्मों का कुछ फल न होगा, अतः माया से  
छुटकारा और ऐसे ही दुःख सुख से छुटकारा मिल जायगा,  
माया के नाश के लिए भक्ति और ज्ञान दो और मार्ग भी हैं ।  
गीता में उनकी विवेचना की है । पर अन्त में कम के ही मार्गको  
अच्छा माना है । इसके अतिरिक्त गीता सब मनुष्यों को समान  
समझती है । स्थान स्थान पर उसमें समता का उपदेश है । जैसे—  
“कोई बड़ा दुराचारी भी यदि मेरी अनन्य रूप से सेवा करे तो  
उसे साधु मानना चाहिए ।” आज ससार गीता के द्वारा अपने  
सबसे जीवन को जान रहा है । यूरोप और अमेरिका सब ओर  
इस अमूल्य रत्न का प्रकाश फैल रहा है ।

३८

भरत

( अनुवादक—श्री भगवान दास हालना और बदरीगाम शर्मा )

पृ ३३२, ३३३

त्याज्यपुत्र—वह पुत्र जिसको छोड़  
गया हो, जिसको  
अधिकारों से वंचित  
गया हो ।

अन्त्येष्टि किया—अन्तिम संस्कार  
दितएडावाद—व्यर्थ का भगड़ा,  
या फहा-सुनी  
आर्त्त गाद करना—पीड़ामें निकलने  
वाली । न । न ।

विनाश-पाप क, गरीबी  
लाञ्छित-निस पर दोष लगाया  
गया हो यशाम

पृ ३३४ ३३५

कृद्विपुण-समृद्धि से युक्त, बढ़ती  
बाना

विघटित खंखल ।

परम्परागत-परम्परामे आया हुआ

जैसे पहल करके आये हैं यैसा

धार्मिकप्रणाल्य-धार्मिक म श्रेष्ठ

मार्जनीय-समा के योग्य

विकार-विगतता, ग्लपरंग आदि

वदलना ।

अमार्पनाय-जो समा के योग्य न हो

अश्रुद्ध-आँसुओं से रुके हुए

राजावलोकन-कमत क समा

आँसुओं वाला

परोक्ष-गुप्त रूप से

अनुमादन-समर्थन

आशंका-डर

रुद्धकठ-रुके हुए गल से

पृ ३३६, ३३७

दैव-किस्मत भाग्य

सन्देहभाजन-सन्देह का पात्र जिस

पर सत्र सन्देह करें

निष्पाप-जिसने पाप न किया हो

प्राणकंठगत होना-प्राण निकलने

पर होना, अत्यन्त तग होना

विन-भाण-शब्द का बाण  
जम्बिन-अत्यन्त कठिन, जो हम  
न जाये ।

अधि-रका-ऊँचा पहाड़ी मैदान

अविष्टित-शिवत, ठहरा हुआ

क्षपति-पति पत्नी

मर्मोन्तिक-मा में चुभने वाली

मर्मभेदी

पूरा-दुमला

विवर्ण-वर्णहीन चतरा हुआ

विपत्रतापूर्ण-दुख से भरा

नर्तकियाँ-नाचने वाली

प्रमोद-प्रसन्नता

सखा-मित्र

व्यग्रचित्त-धरे (पक्षराये हुए)

भीड़ी-काठि (मुन्दरता)में ध

रग चतरा हुआ

विपम-भयकर

पूराभास-पहले के संकेत (शा

पृ ३३८, ३३९

दुश्चिन्ता-बुरी चिन्ता

चिरश्यामल-सदा हरी

चिरश्रुत-हमेशा सुनाई देने वाल

तुमुल शब्द-कोलाहल, लोगों व

कोलाहल या शोर

कठक्कर-गले की आवाज

वितरण कर-घाँट कर

अंगद-बाजूबंद, बाजू पर पहनने का एक गहना  
 मृषि-आदि  
 वरुण-वि-सुवर्ण क रग के  
 विवादन-प्रणाम  
 कठिन-चाप से भरे हुए  
 विधवा-नई विधवा हुई  
 विधातिनी-पति को मारने वाली  
 वा-आगे होनेवाले  
 ४०, ३४१  
 क्लृप्तकर्मा-कठिन से कठिन  
 काम जिसके लिए सहज हैं  
 वाण-धर्म ही हैं प्राण जिसके  
 धार्मिक  
 वस्त-विश्वास करने योग्य  
 त्सल-धर्म को प्यार करनेवाले  
 र-ज्याकुल  
 क्ली-दुबले शरीर वाली  
 वेद होकर-हृदय में घोट  
 खाकर  
 १२, ३४३  
 मा-माँ  
 धर्मभीरु-जिसे धर्म का भय हो,  
 जो अधर्म करने में बड़ा डरता  
 हो।  
 ताड़ना-छाँट, फटकार, भर्त्सना  
 नशों में जल

शोकविमूढ-शोक से जिसका होश  
 मारा गया है  
 साक्षात्कार-भेंट मुलाकात  
 इगुदी-मारामगनी का पेड़  
 तृणशय्या-तिनवों की सेज  
 संज्ञाशून्य-बड़ाश, चेतनारहित  
 आराशस्पर्शी-आकाशको छूनेवाले  
 राजप्रासाद-राजमहल  
 चर्चित-पाते हुए  
 नृत्यशील-गाचनेवाले  
 विहार भूमि-रेजने की जगह  
 पुररहित-गूजता हुआ  
 पृ ३४४, ३४५  
 जटाबल्कल-जटाऔर पृथ्वी छाल  
 प वरुण जो तपस्वी पहनते हैं  
 सर्वज्ञ-सब कुछ जानने वाल  
 निर्णयानुसार-कदने क अनुसार  
 निरापार-अपमान  
 क्षीणपद्-दुबले शरीर वाली  
 मौम्य-शांत  
 अमज-बड़े भाई  
 वणिशर पुष्प-कनेर का फूल  
 शार्णाङ्गा-मुरगाये हुए शरीरवाली  
 प्रज्ञामानिनी-अपना बुद्धि का अ  
 भिमान करने वाली  
 राजकामुका-राज की इच्छा करने  
 वाली  
 अर्क-आफ

कतरी-कवचा  
 गात्र-श्रंग  
 शैलशिखर-पहाड़ की चोटी  
 मन्दाकिनी-गंगा  
 आभा-फाति  
 विलुप्त-टुपे  
 पर्वता-पहाड़ा  
 मुडदिरह-मित्रा की जुदाई  
 पृष्ठ ३४६ ३४७  
 पस्त-हर हण, हंगार  
 निकतन-जग, घर  
 दीर्घपुष्पित-बहुत फूला हुआ  
 कोरिदारयुक्त-कचारा म युक्त  
 अभिषेक-तिलक, राज्य मिलना  
 मनोरथ-मन की इच्छा  
 अनर्थ का मूल-बुराई का जड़  
 म्नेहार्द्र-प्रेम भरे  
 धर्मशील-धमात्मा  
 जावत-जीती जागता  
 देवापम-देवताओं के समान  
 स्वर्णद्रुम-सोने का द्रुम  
 राजश्री-राजलक्ष्मी  
 अगार-अगरु एक पेड़ जिसकी  
 लकड़ी चन्दन की तरह सुग  
 धित होती है

माञ्जिन-पोता जाता था, लप  
 जाता था  
 शङ्कराग-चन्दन आदि का  
 घुलिधूसरित-घृत में मरा हुआ  
 विश्व-मैसार  
 आराधना-पूजा  
 लोचगहित-लोगों द्वारा निन्दित  
 लागों म विस्कारे गय  
 नृशंस-भूर, पालिम  
 पृष्ठ ३४८, ३४९  
 दासानुशाम-नौकर का भी नौ  
 तर्पितर्ष-घात विषाद  
 अनशनगत-भूखा रहने का प्र  
 पादुका-पडाऊँ  
 पररज-पर की धूलि  
 हाम देगे-स्नाहा कर देग  
 जटावलकलवारा-जटा और घृत्सं  
 की छाल के कपडे पहननवा  
 फलमुलाहारी-फल और कदरवा  
 वाले  
 शपाय-गेरुआ  
 सचिषवृन्द-मन्त्रीगण  
 पृष्ठ ३५०  
 दुविनीत-उद्धत, अक्वड

### सघेप

रामायण के चरित्रों में सघसे अधिक उच्च पर सबसे

निन्दा और सदेह का पात्र भरत का चरित्र है। स्वयं शत्रु ही घम की दृष्टि से भरत को राम से भी ऊँचा समझते थे, पर जब भरत की माता ने दो विष्णु वर माँगे, तब दशरथ तब भरत को आभास भी नहीं गा, तब दशरथ ने उसे अपनी अत्येष्टि क्रिया के भी अयोग्य करार दिया। जो की मृत्यु के बाद जो दूत भरत को बुलाने गये वे भी न से कहने हैं कि आप जिनकी कुशल पृच्छते हैं वे सकुशल। रामचन्द्र के वनवास क समय प्रजा बहती है—इम लोग आई के निकट पशुओं की तरह भरत के सामने गड़ हैं। मन्त्राज रामचन्द्र ने भी एक दो बार भरत पर सदेह किया, रात्र दशरथ तो यहाँ तक सदेह करते थे कि भरत की अनुपस्थिति में ही वे रामचन्द्र को राज्य दे देना चाहते थे। लक्ष्मण तो बारबार भरत को मारने पर उतारू रहते थे। परन्तु भरत लक्ष्मण को धन्य समझते थे, क्योंकि वे रात दिन राम के साथ रहते थे। कौशल्या ने भरत को कटु-वचन कहे, निपाटराज गुह और सर्वज्ञ महर्षि भरद्वाज ने भी रामचन्द्र को वन से लौटाने का प्रयत्न करने के लिए जाते हुए भरत पर सदेह किया था। इम तरह सारे समार का भरत पर जो सदेह और निन्दा का विष याग गिरता था, उसका मूल कारण उनकी माता कैकेयी थी अतएव भरत उसे माता के रूप में बड़ा भारी शत्रु कहा करते थे। भरत जब ननिहाल स वापिस लौटे और उन्होंने श्री द्वीन अयोध्यापुरी देखी और उन्हें वास्तविकता का पता लगा तो वे कैकेयी को धिक्कारन लगे, कौशल्या ने भरत का एसे सम्बोधन कहे, पर भरत ने अनेक शपथों



द्वारा कौशल्या के मदेह को दूर किया। पिता की अन्त्येष्टि क्रिया कर भरत रामचन्द्र को वापिस लौटाने के लिए चम पड़े। रास्त में भरद्वाज मुनि मिले, तब उनके सामने भी उन्होंने कैकेयी की निंदा की। दूर से ही भरत की सेना को देखकर लक्ष्मण ने यह सदेह किया कि वे वाको मारने आ रहे हैं और वे भरत के वध के लिए तैयार होगये, पर भरत तो उन्हें वापिस लाने आ रहे थे। जब भरत रामचन्द्र जी के पास पहुँचे तब रामचन्द्र दुःख से दुःखल हुए भरत को पहचान भी न सके। रामचन्द्र वापिस लौटने को तैयार न थे, भरत ने अनशनव्रत कर दिया। अतः रामचन्द्रजी की पादुका ले वापिस लौटे, और रामचन्द्र जी ने कह दिया कि चौदह वर्ष तक वे उनकी पादुका सिंहासन पर रख राज्य करेंगे, पर यदि इतने समय तक वे न लौटे तो वे अपना जीवन होम दगे। चौदह वर्ष तक उस त्यागी ने अयोध्या के बाहर नन्दिग्राम में तपस्वी जीवन बिताते हुए राज्य किया और अकस्मिक के बीतने पर रामचन्द्र को राज्य सौंप वे निश्चित हुए। रामायण में यदि कोई चरित्र ठीक आश समझ कर लिया जा सकता है तो वह भरत का है। सीता ने लक्ष्मण से कटुवचन कहे थे, रामचन्द्र ने बालिवध आदि निन्दित काय किये, लक्ष्मण तो अकस्मिक थे ही, कौशल्या ने भी पति की निंदा की थी, किन्तु भरत के चरित्र में एक भी दोष नहीं। वह भरत सचमुच धन्य है जो बिना यज्ञ से आए हुए राज्य को भी छोड़ देता है, और उसको गर्भ में धारण करने के कारण कैकेयी जैसी दुष्टा नारी भी धन्य हो गई।

## रक्षा-बन्धन

( लेखक—श्रीयुक्त विश्वम्भर नाथ कौशिक )

पृ० ३५३

घाँटनी कर रहे हैं—रुपया कूमा  
रहे हैं ।

प्रेषोध-नादान

इठलाकर-मटक कर

पृ० ३५४, ३५५

अप्रतिभ-लज्जित, आवास

उद्यत-तैयार

अश्रुपूर्ण—आसुओं भरी हुई

पृ० ३५७, ३६८

चितासागर-चिता का समुद्र,

भारी चिता

विरक्त-अप्रसन्न, अनमना

सूर्यास्त-सूर्य डूबना

लक्ष्मीदपा-लक्ष्मी के समान

हृदयवेधी-हृदय को वेधने वाली

ज्ञानशून्य-ब्रह्मोश

काष्ठवत्-तम्बू की तरह

पूर्णवन्धक-बौधन की पुरी

अवस्था को पहुँची हुई, युवती,

१६ बरस के लगभग उमर की

विमर्जा-किण-झाड़े, बह्मण

महोत्सव-बड़ा उत्सव त्यौहार

## ( संक्षेप )

धनश्याम छुटपन में ही अपनी विधवा माता और छोटी सी बहन को छोड़ कर धन कमाने दक्षिण की ओर चला गया । वहाँ वह धन कमाने में इतना व्यस्त रहा कि उसने घर-बार की कुछ रोज़ रखर न ली । जब वह पर्याप्त धन कमा चुका, तब वह फिर वापिस लौटा और गाँव का पता लगाते लगा । उसने उन्नाव जाकर माता को बहुत बूँडा पर वहाँ केवल इतना ही पता लगा कि वे उन्नाव छोड़ गई हैं । वहाँ गई हैं, इसका कुछ पता नहीं । फिर वह लगनऊ में रहने लगा पर उसने वह बूँडने में कोई कसर न छोड़ी ।

इधर उमका माँ भी बड़ी चिन्ता में थी। छोटी बहन में राखी बाले तिन, अपनी उमर की साथ लड़कियों को राखी बाँधना देना किमी के हाथ में राखी बाँधना चाहनी थी, प उमका भाइ वहाँ वहाँ था। माँ ने उमे डाँट दिया, साथ य हाथ में लाल डोरा ल पर क दरतान पर रखी होगई, औ वहाँ से किमी के हाथ में राखी बाँधना की सोचने लगी दरवाजा के पास से बड़े पुनय गये पर मध्य भागे बढ़ गये किमी ने उमसे राखी ने बाँधवाइ। अनोध लड़की उदास है भीतर जान लगी इतन में घनश्याम वहाँ से गुजर रहा था लड़की को आँसू भरे देखते ही घट गढा ही उमसे पूटने लगा बालिका न कुठ न बट कर राखी उसक हाथ में बाँध दी राखी बाँधी जाने पर घनश्याम न दो रुपये देने चाडे, प बालिका ने कुठ पैसे लेने पर ही इठ किया। इतने में उसक माँ न भीतर से पुकारा उद चली गई।

इस घटना की बीने पाँच साल हो गए पर बीच बीच में घनश्याम को राखी बाँधने की याद आ जाती थी। घनश्याम अभी अविवाहित था, उसका दोस्त अमरनाथ उसके लिए लगनऊ में एक गरीब लड़की देख कर आया। दोनो दोस्त लड़की देखने गये। दोनो जब एक दलान पर बैठ गये और बिठाने वाली रानी दीया जला कर लाई नब उसने घनश्याम को देखा, तो पहचान गइ और बेहोश हो गइ। उसे चेतना में लाया गया माँ पुत्र का विचित्र मेल हुआ। घनश्याम ने देखा यह लड़की वही है जिसने पाँच साल पहले उसे राखी बाँधी थी। फिर राखी का त्योंदार आया। घनश्याम की बहन

सरस्वती ने बड़े धाव से राखी बाँधी । प्रकट्याम ने जो अशर्कियाँ दीं और मुस्कराकर पूछा क्या पैसे भी देने होंगे ।

सरस्वती ने हँस कर कहा— 'जहाँ भैया, ये अशर्कियाँ पैसों से अच्छी हैं, इन से बहुत से पैसे आवेंगे ।'

४०

सुधा

( कलक—श्री चडीप्रसाद हृदयेश )

प्र० ३६९  
 गीरव-शात  
 निशा-रात  
 निशाकर-चर्चिद  
 रजत किरण-चामी की रंग की  
 किरणें  
 नीलाकाश-नीला आकाश  
 ऋतुराज-वसंत  
 दिगन्त-दिशाओं के अन्त तक  
 चतुर्दिग्-चारों दिशाओं  
 दुसुमसुगंध-फूलों की सुगंध  
 निजा-एकान्त  
 गृहकोण-घर का कोना  
 प्र० ३७०, ३७१  
 पर्यन्त-तक  
 आनन्ददायिनी-आनन्द देने वाली  
 अधिष्ठात्री-प्रायश्चय करने वाली  
 पूज्य

ज्योत्स्ना-चाँदनी  
 देदीप्यमान-उज्ज्वल  
 अनिद्य-बहुत उत्तम, जिसकी  
 निन्दा न की जा सके  
 सुपमामयी-अत्यंत मुन्दरता समुक्त  
 कुटुम्ब-बसर, रोली  
 उध्व आनन्द-उपर बैठा हुई  
 दुःखमनीय-प्रथम जिसका दमन  
 करना कठिन हो  
 हृदय पटल-हृदय के परदे पर  
 प्र० ३७०, ३७१  
 जनगशि-आश्चर्या की मोड़  
 कलेधर-शरीर  
 आख्यादित-ढका हुआ ।  
 पुण्यपीयूषवाहिनी-अमृत के  
 समान सफेद जल बहानेवाली  
 जाह्नवी-गंगा  
 संगम-मेला  
 पुत्रकित-हर्ष से गदगद

षट्प्रिभि-षट्प्रकार य  
 नान्त इतर-उपर  
 परिभ्रमण भूमना  
 समक्ष सामन  
 हाभागिनी-पत्नी किम्मत वाली  
 द्रव्य-वस्तु  
 नयनमार्गित-आँखा स धी हुई  
 वासयन्त-झाती  
 मुद्रावर्षण-अमृतवर्षा  
 तुत्पिपारा-भूय और प्यास  
 पृ० ३७४ ३७५  
 दन्तता-शरार  
 निर्जीव-विना जान का  
 श्री गोविन्द-भगवान् कृष्ण  
 पादपद्म-चरण कमल  
 आनन्दलहरी-आनन्द की तरंग  
 निविह-घार-गहरी  
 नीलमल्लिका-नील जल वाली  
 गृह-वासिनी-घर में रहने वाली  
 तप्त-गरम  
 तमालवन-तमाल वृक्षा का जगल  
 पर्णकुटी-पत्तों की कुटिया  
 कर्मयोग-करने योग्य (कर्तव्य)  
 कामा को विना फल की  
 इच्छा से करना।  
 ज्ञानयोग-ज्ञान की प्राप्ति द्वारा  
 मोक्ष प्राप्त करना  
 नयन-आँख

पुत्र-पुत्रासुरा पुत्र शोकमे व्याकुल  
 पथ रास्ता  
 निहारना-देखना  
 पतिगतप्राणा-पति में ही पिय  
 गी के प्राण रहते हा  
 धामना-इच्छा  
 ध्यास्तिमितलाघन-ध्यान क  
 कारण स्थिर हैं श्रीग्रे जिसकी  
 पृ० ३७६, ३७७  
 नयनाभ्रश्रौ-आँख क आँसुओं  
 जन्माद्-पागलपन  
 ज्ञान्त-थकावट  
 अन्ध-गायक, आँसों से शोकल  
 पद्मुगल-दोनों पैर  
 पद्मज-पैर के तों में  
 अवरप्रवाप-उपर की तेजी  
 उत्तरात्तर-तागातार बराबर  
 आध्य-विदश  
 अहनिशि-दिन रात  
 आहारविद्रा-ग्यास और माना  
 पृ० ३७८, ३७९  
 धा माध्य-श्री भगवान्  
 चरणारविन्द-चरण कमल  
 रजनियौ-रात  
 शोकयातना-शोक की पीड़ा  
 मरणोपरान्त-मरने के पीछे  
 निरर-चुप  
 रोकथमाना-राती हुई

पनरागविलष्ट-भूय से पीडित

नेत्रैर्वि-प्राय-वैजान सी

पंजरमुक्त-पिंजरे से छूटा हुआ

। ३८०

वेदाख्य-गुरुण, कठिन

राक्षस हो जाता है-खिच जाता

है, लग जाता है

पाथिव-पृथिवी का, दुनियाधी

हेमाङ्ग-सोन के रंग का शरीर

वैराग्योत्पन्नकारी-वैराग्य उत्पन्न

करने वाला

अविनश्यत्-नष्ट न होने वाला,

स्थायी

शेष-ममाप्त

### ( सक्षेप )

शशिशेखर अपनी पहली पत्नी शैलमाला से बहुत प्रेम करते थे। शैलमाला की मृत्यु के बहुत दिन बाद तक वे पुनर्विवाह को तैयार न हुए। परन्तु माता ने हठकर सुधा नामक नवयुवती से उनका पुनर्विवाह करा दिया। परन्तु शशिशेखर के हृदय में शैलमाला का प्रेम इतना प्रबल था, कि सुधा उनके हृदय में तिलमात्र भी स्थान न पा सकी। शैलमाला के तैलचित्र के सामने सदैव होकर शशिशेखर सोचते कि उन्होंने पुनर्विवाह कर शैल के प्रति बड़ा भारी अपराध किया है, परन्तु समझते थे कि यह उनका दोष नहीं, अपितु माँ की जबरदस्ती थी। जिस समय वे इन विचारों में मग्न थे, उस समय सुधा वहाँ आई और पति के चरणकमलों की पूजा कर चली गई, पर शशिशेखर उपर शैल के तैलचित्र की ओर ही देखते रहे।

इस घटना को बीते कई दिन हो गए। शशिशेखर के हृदय की हलचल किसी तरह शांत न हुई। शैल की चिंता से उनकी देह दुर्बल होने लगी। अन्त में जब वह पीड़ा शांत न हुई तो एक रात वे चुपचाप प्रयाग की ओर निकल पड़े।

दिन तो नये लक्ष्यों व ननक भन को आकर्षित कर रमा, पर यह शान्ति अधिक जिन तक व रह सकी ।

इधर सुधा विचारी पति के विरह म मरणा पीना भी छोड़ बैठी थी, अतः नमदा सुन्दर शरीर एक दम दुर्बल हो गया । एक दिन उमे पता लगा कि शशिशेखर वृन्दावन म हैं, तब सुधा, उसकी सास, दवर और जनद सब उनको लेने वृन्दावन को चल पड़े ।

किसी तरह शान्ति व पाकर शशिशेखर अच्युतानन्द गोस्वामी के शिष्य होकर मयासी हो गये । गोस्वामी ने उन्हें बहुत समझाया कि तुम्ह वारिण गृहस्थ में चले जाना चाहिये, तभी तुम शान्ति लाभ करोगे । पर शशिशेखर माने नहीं और उन्हें शान्ति न मिली, अपितु उमाद हो गया । वे दिन रात स्वप्न देखते रहते । एक बार व होने स्वप्न म देखा कि शैल उन्हें कह रही है कि तुम सुधा को अपनाकर खुशी से रहो । फिर उन्होंने देखा कि शैल गायब होगई और कोई उनके पैर अपने आँसुओं से धो रहा है, इस चिन्ता में उन्हें विषम-ज्वर हो गया । स्वामी अच्युतानन्द ने उनके घरवालों को बुला लिया । सुधा ने रात दिन जाग कर उनकी सेवा की पर एक दिन शशिशेखर का प्राणपण्येक उड़ गया । तब उनकी माता वही वृन्दावन में रहकर श्रीकृष्ण की सेवा में दिनरात बिता अपन पुत्र वियोग को मुछाने का प्रयत्न करने लगी, और सुधा वही रह कर अपने जीवन की समाप्ति की प्रतीक्षा करती रही ।

## मध्य एशिया के खंडहरों की खुदाई का फल

( लेखक—श्रीयुत पुराणपाठी )

१० ३११ स ३१९

विजितावस्था—शक्तिशाली अवस्था

बदती की हालत

आवागमन—आने जाने का

मेलान्तर—कुछ काल के बाद

तूप—बड़ मीनार जिसके नीचे बुद्ध

या किसी बौद्ध महात्मा का

हड्डी, दाँत या ऐसा ही कोई

अन्य स्मृतिचिह्न सुरक्षित हो

वर्षोंदोड़—जिस चीजको गिरा कर

खमान के बराबर कर दिया

गया हो

भूतलवर्तिनी—जमीन के भीतर  
घनी हुई

पुरातत्व—पुराने समय से संबन्ध  
रखने वाली विद्या

ध्रमावशेष—बचे हुए खंडहर

रत्नराशि—पुस्तक रूपों रत्नों का  
ढेर

पुरातत्व विशारद—पुरातत्व को  
जानने वाला

युथ—समूह

अप्राप्य—जो न मिल सके

### संक्षेप

जिस समय बौद्ध धर्म अपनी वृद्ध अवस्था में था उस समय यूनान, रूम, मिश्र आदि की तो घात ही नहीं, मध्य एशिया की राह उसके आचार्य चीन तक धर्म का प्रचार करने जाते थे। अफगानिस्थान उस समय भारतीय साम्राज्य का एक अंग ही था। चीन और भारत के बीच आवागमन का मार्ग उस प्रांत से था जिसे इस समय पूर्वी तुर्किस्तान कहते हैं। चीनियों की इतिहास प्रसिद्ध दीवार का कुछ अंग इस पूर्वी प्रांत में ही था। यह प्रांत बिहारों और मठों से सर्वत्र



मरा हुआ था। इन मठों में बड़े बड़े बौद्ध विद्वान रहते थे, चीन और भारत के यात्री इन्हीं मठों में ठहरते थे। चीनी परिभाषक हेनसांग और इत्सिंग आदि इसी मार्ग से भारत में आए थे।

कुछ काल बाद मुसलमानों ने इन सब मठों को तोड़ दिया। बौद्धों के लिए प्राण बचाव कठिन हो गया। तब बौद्धों ने अपने प्रथम जमीन की कोठरियों के नीचे बंद कर लिपा दिये। उन में से कुछ प्रथम तो नष्ट हो गए। बाकी आज कल खोज-खोजकर निकाले जा रहे हैं। इसका श्रेय अधिकतर यूरोप निवासियों को है। वे अनेक कष्ट उठाकर पर्याप्त पैसा खर्च कर उन कागज पत्रों की जमीन से निकाल रहे हैं और उन प्रथमों को टीका, टिप्पणी और पूरे विवरण सहित प्रकाशित कर रहे हैं। १८०६ ईसवी में जर्मन विद्वान डाक्टर रेञ्जल चीनी तुर्किस्तान के खंडहरों को देखने गए। उसके बाद रूस और फिनलैंड के पुरातत्व विशारद वहाँ पहुँचे। सन् १८९९ में रूसी विद्वान रैडल्फ के प्रस्ताव पर पुरातत्व विशारदों की एक सभा में मध्यएशिया के खंडहरों की बाकायदा जाँच करने का प्रस्ताव पास हुआ। उसके बाद कुछ के कुछ लोग वहाँ पहुँचे।

१८९१ में ब्रिटिश गवर्नमेंट के दूत कप्तान थावर को भोजपत्र पर लिखा प्रथम प्राप्त हुआ। जो अनुमानत ईसा की चौथी सताब्दी में लिखा गया है। उसकी रचना उस से भी पहले हुई होगी। इससे पुरानी शायद एक दो ही हस्तलिखित पुस्तकें अब तक मिली हों। डा० थावर के बाद कलकत्ता यूनिवर्सिटी के अध्यापक आरल स्टीन को ब्रिटिश गवर्नमेंट ने इस काम के लिए

नियुक्त किया। वहाँ उन्होंने खुतान की जाँच कर प्राचीन खुतान नामक एक पुस्तक लिखी। इसके बाद डा० स्टीन दो तीन बार वहाँ गये। तब उन्हें एक बड़ कोठरी में बहुत सी पुस्तक मिलीं, और बहुत सी पुस्तकें वहाँ से एम० पोलियो नामक फ्रच विद्वान ले गए। डा० स्टीन ने इस बड़ाई का वर्णन मेरेडिया नामक पुस्तक में किया है। १९०६ में फ्रांस सरकार से धन की सहायता पा कर एम० पोलियो की अध्यक्षता में एक दल मारको और साशकद होते हुए पामीर के उत्तर काश्गर तक पहुँच गया। वहाँ तुनहॉग नामक स्थान में एक चीनी बौद्ध धैंगताउ के अवशेषानुसार पोलियो ने एक ऐसी गुफा खोली जिसमें ईसाई सन् की दसवीं शताब्दी में मुसलमानों से बचान के लिए बौद्धों ने अपना सारा साहित्य बंद कर दिया था। इस गुफा के भीतर १६ हजार पुस्तकें भिन्न भिन्न भाषाओं और भिन्न भिन्न लिपियों में मिलीं। उनमें से कितनी ही पाहली लिपि में हैं। इस से स्पष्ट है कि प्राचीन भारत ने मध्यएशिया की राह चीन, सीस्तान आदि को विद्यादान का कितना काम किया था।

४१

हमीर

लेखक—डॉ० परमरायण सिह

पृ० ३८९ से ३६८  
मान-आदत

भूमि भारत-भारतवर्ष की भूमि  
सदा स अच्छे गुणों की ग्यान

है, अपन धर्म की रक्षा तथा  
धर्म में लागे रहना ही यहाँ प  
ओगो की आदत है। दीन  
दुष्टियों पर दया करना यहाँ

की शाप है । इसी कारण  
आज तक मध्य जगह भारत  
का मान है ।

शरणागत बत्सल-शरणा म शाप  
हुओं की रक्षा करने वाले  
कृपाण-तलवार

ना काका कश्यप-ना काका  
कान्ह ने कश्यप ग दिया था  
वही रणधार ने छान के दर म  
क्रिया । कहते हैं कि जब  
पथोरान संयोगिता का हरण  
कर ले जा रहे थे, तब कागह  
ने प्रतिज्ञा की थी जब तक  
महाराज प्रधीराज दिल्ली न  
पहुँच जायगे तब तक वध  
बन्नौज का पीज को रोक  
रखेगा और अत म यह  
अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने रहा ।

अकृतज्ञ-मित्र को न मानने  
वाला, कृतत्र

अवान्-विस्मित, हीरान चुप  
जौहर-युद्ध के समय में जब  
राजपूत निराश हो जाते थे,

तब उनकी स्त्रियाँ बिता पर  
चढ़ जाती थीं और राजपूत  
जायन का मोह छोड़ मरने के  
लिए केमरियायाता पहन कर  
मैदान म निकल आते थे ।  
इस हा 'जौहर' कहते हैं ।

सिंह गमा-सिंह सिंहनी के  
पाम एक बार ही सभाग क  
लिए जाता है सत्पुरुषों का  
वचन एक बार ही कहा जाता  
है व दुधारा उस नदी बद्गते,  
केला भी एक बार ही फलता  
है त्वारा उस काट देना  
पड़ता है, एक ही स्त्रिया का  
तेल और हमीर का हठ दूमरी  
धार नहीं चढ़ता । दूमरी वार  
नहीं बदले जाते । विवाह से  
दा या चार पाँच दिन पहले  
वर को धधू का नाम लेकर  
आर वधू को वर का नाम  
लेकर हल्दी मिला तेल लगाया  
जाता है, इस रस्म के उपरान्त  
प्राय विवाह सम्बन्ध नहीं  
छूटता ।

( सलेप )

अलाउद्दीन बादशाह का गैहमाशाह नामक एक अपराधी  
दरबारी जिसे बादशाह ने प्राण दंड की आज्ञा दी थी,  
प्रसिद्ध गढ़ रणथम्भौर के अधिपति वीर-वर हमीर राव की  
शरण में आया । शरणागत बत्सल हमीर ने उसे अपने दुर्ग में

भेज दिया। इस पर यादशाह ने हमीर को कहना भेजा कि या  
 तो मैं यादशाह को मेरे पास भेज दो, नहीं तो तुम्हें उचित दंड  
 दूँ। हमीर ने उत्तर दिया कि जब तक मेरे हाथ में तलवार  
 है तब तक चाहे सारे सप्ताह की शक्तिगँ भी मिलकर लड़ें, तो  
 भी मैं शरणार्थक को न छोड़ूँगा। यह सुन यादशाह ने एक बड़ी  
 सेना लेकर रणथम्भौर को घेर लिया। लगभग दस मील तक  
 घेरे की छावनी थी। यादशाह न समझा या कि इतनी बड़ी  
 सेना देकर हमीर डर जायगा, पर वहाँ तो मरने में पहले  
 पाच-रस होरहा था। इतने में मैदशाह के भाई गोरशावर  
 जो यादशाह की सेना में था, एक थोड़ा तीर हमीर के किले  
 की नाचने वाली चट्टान की पड़ी में मारा जिससे यह घड़ाम से  
 गिर पड़ी। इस पर मैदशाह ने एक ऐसा तोर चलाया जिससे  
 यादशाह की टोपी बड़ गई। दूसरे दिन छान के दर में  
 राजपूतों और मुसलमानों में बड़ा भयकर-युद्ध शुरू हुआ।  
 हमीर के चाचा रणधीर ने वहाँ बड़ा पराक्रम दिखाया।  
 पर राजपूत जीत न सके। छान के दर की विजय कर यादशाह  
 की फौज किले की ओर बढ़ी। परन्तु किला विजय करने में  
 जलाउद्दीन का एक भी दाँव न चला। अन्त में विश्वासघाती  
 दुष्ट सुरजन नामक हमीर का दीवाने राज्य के लोह में आकर  
 यादशाह से जा मिला। दुष्ट सुरजन ने हमीरसे कहा कि किले  
 की भोज्य सामग्री खत्म हो गई है। यह सुन भूखों मरने के बजाय  
 राजपूतों ने जीत कर लेनी। मैदशाह ने हमीर को  
 बहुत समझाया कि मुझ यादशाह के पास जान दीजिए पर  
 हमीर को छोड़ नहीं सकता था। रानी से विदा हो

सम शिष्यों को जाँहर का उपदेश दे रातपूत तलवार हाथ में लेकर निकल पड़े। उस समय रातपूतों की भयानक वीरता से मुमलमान भाग पड़े हुए। हमीर मुसलमानों के जीते हुए निशानों की मेना को आग किये हुए लौटे। इसे देखकर किले के रातपूतों को भ्रम हुआ कि मुमलमान आ रहे हैं। यह देख अगणित लाशप्यमयी ललनाएँ चिता में जल गईं। इस कठणा-जनक दृश्य को देख कर हमीर ने तलवार से अपना मस्तक काट दिया। सुरजन ने यह स्वपर यादशाह को दी। इसके सुनते ही वह लौट आया। याकी रातपूतों ने और मेहमाशाह ने वीरता से मुकाबला करते करते अपने प्राण त्याग। अन्त में मनुष्य रहित दुग पर यादशाह ने अपना अधिकार जमाया। इस तरह हमीर अपनी शरणागत वत्सलता से अपना नाम अमर कर गये।

४०

## हिन्दी-साहित्य और मुसलमान कवि

—यह छेत्त सरस्वती के भूतपूर्व सपादक श्रीयुक्त पदुमलाल पुष्पालाल कशी का है। पता नहीं गद्य-यात्रिका के सपादक ने इसे श्री हरिचल्लभ जोशी का किस प्रकार लिख दिया है।

पृ० ३९९

समर्पण-प्रतिद्वितीया, म्पधा  
विरोध

पृ० ४०० से ४०१

व्यष्टि-भिन्न भिन्न पदार्थ या  
व्यक्तिसमष्टि-भिन्न भिन्न पदार्थों या  
व्यक्तियों का समूहजातिगत-एक जाति का दूसरी  
जाति सेकृष्णकाय-कातो शरीर के  
आग्नि-पहले के

प्रशीभूत-वश में करके

वृहत-बड़े, विस्तृत

अवलंबन किया-सहारा लिया

वमेशी-ससार भर समिप्रता

व्यगु के ग्रहण करना-

भगवान के प्रेम में भगवान के

पुत्र के नाते सभी मनुष्यों को

माई समझना ।

४०४०० से ४००३

शामनयुग-राज्य का समय

साधक-साधना करने वाला,

तपस्वी

बलीफा-बगदाद का बादशाह

रुक-नुक़िस्तान का रहने

वाला । साधारणतया मुसल

मान

जा-जिसमें हिन्दू इस मनुष्य

सृष्टि की उत्पत्ति मानते हैं ।

आदम-इशरानी और अरबी

लक्षकों के अनुसार मनुष्यों

का सबसे पहला प्रजापति

जिससे आदमी पैदा हुआ ।

जोश-कितार्थ, कुरान

कोई हिन्दू-कोई हिन्दू कहाता

है, और कोई मुसलमान, पर

सब एक जमीन पर रहते हैं ।

वही महादेव है और वही

मुहम्मद है, वही प्रजा है और

वही आदम कहा जाता है ।

वे वेद पढ़ते हैं और वे कुरान

पढ़ते हैं । वे पाठ कहाते हैं

और वे मौलाना, इस तरह

अलग अलग नाग रम्ये हुए हैं

पर हे सब एक ही मिट्टी के

वस्तुन । अथान् जिम तरह

एकही मिट्टी के वस्तुओं में से

कोई घडा कहाता है और कोई

चाटी बने ही सब मनुष्य

एक ही परमात्मा के पुत्र हैं

केवल नाम का भेद है ।

मूढता-मूर्खता

धर्मान्धना-धर्म के पीछे अन्धा

होकर चलना

विरोधाग्नि-विरोध (लड़ाई) की

आग

बौराना-पागल हो गया है

पतियाना-विश्वास करता है

मूए-मरे

मरम-मर्म रहस्य भेद

मेहर-दया

घर-मन

माधो-हे माधु पुरुषो दुखो

संसार पागल होगया है । यदि

सब कडा जाय तो मारने को

दौड़ता है और भूटे का सब

विश्वास कर लेते हैं । हिन्दू

कहते हैं हमारा राम है

और मुसलमान रहीम का

अपना कहते हैं । दोनों ही

आपस में लड़-लड़ कर मर

गये हैं, पर किसी ने भी भेद

(रहस्य) नहा समझा ।  
 हिन्दुओं ने दया और मुमल  
 माओं ने मेहर (दया) अपने  
 मन म से निकाल दी है । वे  
 हलाल मारते हैं और ब भटका  
 मारते हैं और दोनों ही घरों  
 में आग लगी है, दोनों ही  
 पाप कर रहे हैं । इस तरह  
 हम पर दोनों ही हँसते जाते  
 हैं, और अपने आपको  
 समझदार कहते हैं । कबीर  
 कहते हैं हे साधुओ, इन म  
 कौन पागल है, अर्थात् दोनों  
 ही पागल हैं ।

प्र० ४०४४०५

कल्याण कामना—कल्याण की  
 इच्छा  
 आत्मोन्नति—अपनी उन्नति  
 अर-अर इन दोनों ( हिन्दुओं  
 और मुसलमानों ) ने ठीक  
 रास्ता नहीं पाया । हिन्दुओं  
 का हिन्दूपना और मुसलमानों  
 का मुस्लिमपना देय लिया ।  
 कबीर दास कहते हैं, अरे  
 साधु तुम कौन से रास्ते में  
 होकर जाओगे ।

हिन्दू कहूँ-हिन्दू कहो तो वह भी

नहीं हूँ और मुसलमान भी  
 मैं नहीं हूँ ।

भरम-संदेह

साहेब-परमात्मा

दीदार-दर्शन

लखे-देखे

समदृष्टि-मुझे सतगुरु ने सबको  
 समान देवता वाला बना  
 दिया है, और मेरे संदेह और  
 पाप मिटा दिये हैं । अब मैं  
 जहाँ देखता हूँ, वहाँ एक ही  
 परमात्मा का दर्शन पाता हूँ ।  
 मनुष्य को समदृष्टि तथा  
 समझना चाहिये जब उसमें  
 शीतलता और बगवरी का  
 भाव हा और जब वह सब  
 जीवों की आत्मा को एक सा  
 देखता हो ।

प्रयास-कोशिश

सम्मिलन-मेल

अमसर हुण-आगे बढ़े

मूचर-पता देने वाले

तुरकी-तुरका, अरबी, हिन्दी  
 आदि जितनी भी भाषाएँ हैं,  
 उनमें से जिसमें भी प्रेम का  
 रास्ता दिखाया गया हो सभी  
 उसी की प्रशंसा करते हैं ।

आभास-पता

अविचल-स्थिर

ईश्वरप्रदत्त-ईश्वरका दिया हुआ

उपराजा-पैदा हुआ

नीन-मत, मजहब

तिन्ह-उसकी सन्तान में भाँति

भाँति के कुलीन पैदा हुए,

और अपने अपने मत

(विश्वास) के कारण हिन्दू

और मुसलमान दोनों हागए

जमतन-जैसे शरीर में बँम ही

घरती में, जैसे मन में, वैसे ही

आकाश में सब जगह वह

परम पुरुष परमात्मा ऐम

फैला हुआ है, जैसे फूल में

गंध-अर्थात् आँखों से न

दिखाई देने हुए भी इश्वर

सर्वव्यापक है ।

पृ० ४०६, ४०७

तनदरपन-शरीर रूपी शीशे को

सजाकर जो प्रभु का दर्शन

करना चाहते हैं उनको

अपना मन पवित्र कर लेना

चाहिये । महम्मद ने पवित्र

हवन-तुराईयों का हवन

किया, अतएव वह प्रभुदर्शन

पा सका ।

एकत्ववाद-एक ईश्वर ही सब  
कुछ है ।

एक कहत दुई-कुछ लोग यह कहते

हैं कि जीव और परमात्मा

दो चीजे हैं, पर दो से राज

नहीं चल सकता । इसी

कारण बीच में से अपना

आपा ग्योकर-अपनी सत्ता

ग्योकर-परमात्मा में लीन

होकर-मुहम्मद ध्यान में

मरा हुआ रहना है ।

भोग्य-भोगने योग्य, काम म

लाने योग्य

भाक्ता-भोगने वाला, जीव

सयई जगत-यह सारा ही संसार

शीशे के समान है । वह

आपही शीशा है और आप

ही देखने वाला है । अपने

आप ही वह जगल है, और

अपने आपही (उसमें रहने

वाला) पक्षी है । आपही

सउजा (शिकार) आपही

अहेरु (शिकारी) है । अपने

आप ही फूल है और अपने

आप उस फूल को देखकर

प्रमन्न होता है और आपही

भौरा है जो उस फूल पर



सुगांधव वस में भूना हुआ ५० ५८८ ८८६  
 है। अपना आप ही फल है उद्धार-मन व म को का प्रकाशन  
 और अपने आप ही रहना का गुराहम-बदों की आशा  
 है और अपने आप ही इस साहि-कठिन  
 का अपने वाला है। अपने अनुभव-गुरुजनों की आशा पढे  
 आप ही जीव जीव को प्यार रिचों की कठिना क्यों न हो यदि  
 करता है और अपने आप ही वह अनुचित हो तो न मानना  
 अपना रूपकी प्रशंसा करता चाहिये। राम पिता का  
 है। आप ही का गण्य है बेटा मात वन का गुरु और  
 और आप ही रखा ही है भरत न गुरुजनों की  
 आप ही लिगत वाला है, आशा न मात राज न लिदा  
 और अपने आप ही कलम है फिर भी भगत जी का यश  
 अपने आप ही अंतर है और रामजी के यश से अरिह है।  
 अपने आप ही उनका पढ़ा पुरातन पुरुष-विष्णु भगवान, यून  
 वाला यह अपार पंडित है। आदर्श  
 अर्थात् यह एक प्रश्न ही है, कमला-रहात कहते हैं कि कमला  
 यह स्वयं पाप करता वाला (लक्ष्मी धरा) मिथर नहीं यह  
 और स्वयं ही उमरु फल सभी जानते हैं। लक्ष्मी पुरा-  
 पान वाला है। तान पुरुष ( विष्णु ) की स्त्रा  
 हो ता है अतः चल क्यों न हो ? क्योंकि पुरातन पुरुष  
 [ बुद्धे ] की सुधती स्त्री प्राय  
 चलती है।

पुत्रि-दृढ़ता

गिरिधर-नीरिचत

वाण्डव-व्यापार

व्यवधान-बाधा, भद्र

उत्कीर्णकराया सुदयाया, लिम्बवाया

रिखप्रक्षवा-अद्वैतवाद, ससारकी

सय वस्तुओं को प्रथ ही

सममता ( देखिये पृ० ५६

अद्वैत )

गति सरना-राम की शरणरूपा

गौका लेकर ससाररूपी माग

से पार उतर जा। रहीम कहते

हैं कि संसार स पार होने का

और काइ उपाय नहीं है।

सभी देशों के इतिहास में भिन्न भिन्न जातियों के पारस्परिक सम्बन्ध को देखने पर पता लगता है कि सम्पर्क में सभ्यता का विकास होता है। भिन्न भिन्न देशों में भिन्न भिन्न अवस्थाओं के कारण भिन्न भिन्न जातियों में भिन्न भिन्न आदर्श होते हैं। परन्तु जब दो जातियों को एक ही स्थान में रहना पड़ता है तब विवश होकर उन्हें कोई एक ऐसा सम्बन्ध-सूत्र खोजना पड़ता है जिसमें भिन्नता में भी एकता हो जाय।

अन्य देशों में विशेष कर यूरोप में जिन जातियों का सम्मिलन हुआ, उनमें उत्पत्ति, वर्ण, शारीरिक गठन और आदर्श की इतनी भिन्नता नहीं, अतः उनका एक दूसरे से मेल जल्दी होगया। पर भारत में श्वेतांग आर्यों का पहले यहाँ के काले रंग के आदिनिवासियों से और फिर सभ्य द्रविड़ जाति से सम्पर्क हुआ। परन्तु यहाँ विषमता दूर करने के लिए अमेरिका के रेड इंडियनों की तरह उनको नष्ट नहीं कर दिया गया। और न ही उन्हें गुलाम बनाकर उनकी सभ्यता पर अपनी सभ्यता का रंग जमाया गया। अपितु भगवान् बुद्ध जैसे नेताओं ने विश्व मैत्री की शिक्षा देकर भारत के राष्ट्रीय जीवन में एकता का प्रचार किया। जब भारत पर मुसलमानों का आक्रमण हुआ तब पारस्परिक विद्वेष को शान्त करने के लिए एक ऐसा आन्दोलन चला जिसके चलाने वाले कहते थे हम मनुष्य मात्र परमात्मा के पुत्र हैं, अतः सब भाई हैं और सब एक से हैं अतः हमें आपस का धार्मिक विरोध मुला देना चाहिए। हिन्दी साहित्य पर भी इस आन्दोलन का खूब प्रभाव पड़ा।

पदा की शालों में बसरा करों  
( जिनके नीचे भगवान् तृष्ण  
आराम करते थे, या जिनका  
हाला पर वे चढ़कर ग्रेत्रने थे )  
दिलजानी-प्राणप्यार

हम्म-नाम

निवान-नमाज

कलमा-बह वाक्य जो मुसलमान

धर्म का मूलमंत्र है-"ला इलाह,

इल्लिल्लाह मुहम्मद वर् रम्  
इल्लिल्लाह'

कुल्नेदार-जुल्फा वाला, लटों वाला

तेह-प्रम

दाग-चलन, ताप

निदाघ-गरमी ताप

ताशा-तरी

सुनो दिलजानी-=" स्यार तुम मेर

दिल की कहानी-घात-सुनो

कि तुम्हारे नाम पर बिकी

हुई मैं निदा भी सह लूँगी।

मन देवताया की पूजा शुरू

करनी है, नमाज तक मुलादी

है और कलमा पुरान पढ़ना

मैंने सब छोड़ दिया है और

शेष सब तुम्हारे पसन्द

गुणों का भी अपना

लूँगी। हे सिरताज और सिर

पर जुल्फा बाड़े साँवले

सजोने, तेरे प्रेम की जलन में  
मैं प्रीष्मश्रुतु हाकर जलूँगी,  
अर्थात् जैसे प्रीष्म श्रुतु  
तपती है, वैसे ही मैं तपूँगी।  
ह नन् कं कुमार, तेरी सुरा  
पर मैं सुरघान हूँ और ह प्यारे  
तेरे साथ मैं हिन्दुवानी होकर  
रूँगी।

चिरतन-पुरान

ऐक्यमूलक-एकताही जिसका मूल

भित्ति-दीवार

धाह्य-बाहर का

कात्रिम-बनावटी, जा असली न है

पाल्पनिक-मनगन्त

समुचित-घाटी, तंग

आत्मवत् सर्वभूतेषु-अपने समा

ही सब जीवों को समझना

मद-भरती

उपहासास्पद-हँसने योग्य

धीमस-गृणित, घृणा के योग्य

विन्दु यों-यह एक जल का बिन्दु

ही समुद्र के समान हो गया

है, यह क्या आश्चर्य है

और किसस का? रहीम

कहते हैं कि देखने वाल

स्वय ही उसको देख लेते हैं।

( १३५ )

( मक्षेप )

सभी देशों के इतिहास में भिन्न भिन्न जातियों के पारस्परिक सवन्ध को देखने पर पता लगता है कि सघर्षण से सभ्यता का विकास होता है। भिन्न भिन्न देशों में भिन्न भिन्न अवस्थाओं के कारण भिन्न भिन्न जातियों में भिन्न भिन्न आदर्श होते हैं। परन्तु जब दो जातियों को एक ही स्थान में रहना पड़ता है तब विवश होकर उन्हें कोई एक ऐसा सवन्ध-सूत्र खोजना पड़ता है जिससे भिन्नता में भी एकता हो जाय।

अन्य देशों में विशेष कर यूरोप में जिन जातियों का सम्मिलन हुआ, उन में उत्पत्ति, वर्ण, शारीरिक गठन और आदर्श की इतनी भिन्नता न थी, अतः उनका एक दूसरे में मेल जल्दी हो गया। पर भारत में श्वेतांग आर्यों का पहले यहाँ के काले रंग के आदिनिवासियों से और फिर सभ्य द्रविड़ जाति से सघर्ष हुआ। परन्तु यहाँ विषमता दूर करने के लिए अमेरिका के रेड इन्डियन्स की तरह उनको नष्ट नहीं कर दिया गया। और न ही उन्हें गुलाम बनाकर उनकी सभ्यता पर अपनी सभ्यता का रंग जमाया गया। अपितु भगवान् बुद्ध जैसे नेताओं ने विश्व मैत्री की शिक्षा देकर भारत के राष्ट्रीय जीवन में एकता का प्रचार किया। जब भारत पर मुसलमानों का आक्रमण हुआ तब पारस्परिक विद्वेष को शान्त करने के लिए एक ऐसा आन्दोलन चला जिसे चलाते चाले कहते थे हम मनुष्य मात्र परमात्मा के पुत्र हैं, अतः सब भाइ हैं और सब एक से हैं अतः हमें आपस का धार्मिक विरोध भुला देना चाहिए। हिन्दी साहित्य पर भी इस आन्दोलन का सूत्र प्रभाव पड़ा।

भारत पर मुसलमानों का आधिपत्य सहसा स्थापित नहीं होगया अपितु उनका पहला आक्रमण सन् ६६४ म हुआ था, और सन् ११९३ से मुसलमानों का शासन युग प्रारम्भ होता है। परन्तु इससे पहले मुसलमान साधक और फकीर भारत में आते थे, और कितने ही भारतीय विद्वान बगदाद के खलीफा के दरबार में जाते थे। भारत में मुसलमानों के राज्य के साथ-साथ मुसलमानी धर्म का भी प्रचार हुआ और तभी विरोध प्रारम्भ हुआ। महात्मा कबीरदास ने देखा कि मुसलमानों और हिन्दुओं का विरोध अस्वाभाविक है, दोनों ही एक ही मिट्टी के भाँडे हैं, केवळ नाम-नाम का भेद है। और दोनों ही धार्मिकता में पागल हो एक-सा पाप कर रहे हैं, अतः उन्होंने ने समष्टि का प्रचार किया। कबीर का यह प्रयास व्यर्थ न हुआ। उनके बाद जायसी ने इसकी पुष्टि की। उन्होंने कहा कि कोई भी भाषा हो पर जिस में प्रेम का मर्म है वही भाषा श्रेष्ठ है और उस एक परमात्मा की ही सब सन्तान हैं केवल अपने विश्वास में भेद होने के कारण वे अलग-अलग हिन्दू मुसलमान होगए हैं। आगे चल कर हम देखते हैं इस मिथ्या-त का स्वप्न प्रचार हुआ। मनाट्ट अकबर के महामन्त्री अबुलफजल ने एक हिन्दू मन्दिर पर छेद खुदवाते हुए यही उद्गार प्रकट किया था कि वह परमात्मा एक है, केवल नाम-नाम का भेद है। इसी भावना से प्रेरित हो सूरदास और तुलसीदास ने अपनी कविता में भक्ति की लहर बहाई, और हम देखते हैं कि उस लहर में ही रहीम रसगान आदि मुसलमान कवि बह गये। रहीम कहते थे—राम की शरण रूपी नौका लेकर मसार को पार

करो और कोई उपाय नहीं है। रसखान कृष्ण की गाय बनने में ही अपना सौभाग्य समझता था। मुसलमान रोजी कवि ताज तो बदनामी सह करके भी उसी दिलजानी कृष्ण पर कुर्बान होने को तैयार है। इस तरह हम देखते हैं कि यद्यपि राजनीतिक क्षेत्र में हिन्दू मुस्लिम विरोध दूर नहीं हुआ तो भी साहित्य के क्षेत्र में दोनों ने सत्य को ग्रहण करने में सकोच नहीं किया और आध्यात्मिक आदर्श की भित्ति पर और इस अनन्त सत्य सिद्धान्त पर कि मनुष्य मात्र से प्रेम करके ही मनुष्यों के पिता परमात्मा को पाया जा सकता है, और नर, उसी नारायण का ही रूप है, दोनों का सम्मिलन हुआ। इस में दीक्षित होने के लिए हिन्दुओं को अपना हिन्दुत्व और मुसलमानों को अपना मुसलमानीपन नहीं छोड़ना पड़ता, क्योंकि बाहरी आचार व्यवहार इस णेक्य में बाधक नहीं होत। यह श्रुति धनावटी नहीं है अपितु सच्ची है।

आजकल जातिविरोध की समस्या अवश्य बहुत बढ़ गई है। इसका कारण यह है कि सबल जाति निर्धर पर अत्याचार करने में सबाध नहीं करती, पर जब मनुष्य को जातिविद्वेष और स्वाधमिद्धि का भयकर रूप दिग्गई देगा तब वह समझेगा कि मनुष्य मात्र को ही परमात्मा का रूप समझने में ही उसकी मुक्ति है।

## महाभारत

( अश्वत्थ—श्रीयुत सूर्य कुमार वमा )

पृ० ४१२, ४१३

शिविर—डेरा छावनी

केश-बाल

पृ० ४१४, ४१५

सतीधनीमुखा-बिलाने वाला

अमृत

पुण्यभूमि-पवित्र भूमि

स्वप्नराज्य-सपना का राज्य

कौर-किनारा, सिरा

नाचरलय-नाचन वाली जगह

वृहन्नला-अर्जुन का वह रूप जिस

ममय वह अज्ञात वास में

स्त्री कवच में रहकर उत्तरा

का नाच गान सिखात थे ।

उत्तरगोप्रहण-जब कौरव विराट

राजा की गौएँ चुरा ल गये

थ, तब विराट का पुत्र उत्तर

वृहन्नला का साथी बना गौएँ

छीनन गयाथा और वृहन्नला

के पौरुष से उत्तर गौएँ

चापिस ल आया था ।

शोकानल-शोक की आग

प्रदीप्त होगया-जल गया

संताप-दुःख जलन

वनमाता-वनकी अविष्ठात्रा देवी

मनोराज्य-मानसिक कल्पना

प्रतिभूति-प्रतिभा तस्वीर

गृह भूमि-घर का भूमि

पृ० ४१६, ४१७

नलिनी-रुमलिनी

आश्रयभूत-चिसरा महारा लिया

हो ।

पादमूल-पैरका निचला भाग, जड़

धीयानल-बल रूपी आग

दिया गुल होगया-दीया जुफ्त गय

नाश हो गया

पृ० ४१८, ४१९

योगस्थ-ध्यान में बैठकर

आशावृत्त-आशा रूपी वृत्त

आधारस्तम्भ-सहारा दा वाला

स्तम्भ ।

पतिपद-पति के पैर

नरमेध-बह उज्ज जिसम मनुष्य

की बलि दी जाती थी ।

पृ० ४२०, ४२१

शकुनि-गिद्ध पक्षी ।

शृगाल-गोदड

कर्कश-कठोर, कड़वा

चितानल-चिता की आग  
 बालकिरणों-नईनिशली हुई किरणों  
 पुण्यवती-पुण्यवाली  
 कमलनयन-कमल से नेत्र बाल  
 देवत्व-देवताओं के गुण  
 पार्थ-अर्जुन  
 भ्रमप्रस्वर्ग-स्वर्गों का स्वर्ग  
 पृ० ४२२, ४२३  
 सचारित कर-जन्म देकर  
 प्रसर-पैना  
 प्रशिक्षणा-पेरे डालना, चारों तरफ  
 घुमना  
 पाषाणमृत्ति-पत्थर की मृत्ति  
 धर्मामृत-धर्मरूपी अमृत  
 विश्वकूट-संसार भर के आदमियों  
 के मुँह ( गले ) से  
 शिविराभिमुख-शिविर की आर  
 पृ० ४२४, ४२५  
 निमिषकाल-पल भर, नितने समय

में आँस की पलक नीचे  
 गिरती है ।

बालू की भीत-रेत की दीवार  
 रक्तस्राव-खून का बहना  
 नभोमण्डल-आकाश  
 प्रतिभान्वित-कान्ति से युक्त  
 अर्धेन्दु-आधे चाँद की शकल क  
 क्रिरीट-मुकुट  
 पाशाकुश-पाश और अकुश  
 त्रिकाल-तीनोंकाल, भूत, वर्तमान  
 और भविष्यत्  
 द्वैपायन-व्यास  
 पूर्वगगनाभिमुख-पूर्व दिशा के  
 आकाश की ओर मुँह करके  
 पृ० ४२६  
 धननय-अर्जुन  
 पार्थिव-पृथ्वी से उत्पन्न  
 सुत्र-डोरा  
 नामामृत-नाम रूपी अमृत

( सक्षेप )

अभिमन्यु वध को हुए छ दिन हुए, महाभारत के युद्ध  
 की भी समाप्ति होगई, अँधेरी रात में एक शिविर में  
 वनमाता शैलजा और पति की मृत्यु के कारण हुए से दुखित  
 मूर्छित उत्तरा उमकी गोद में पड़ी है । उत्तरा धीच-धीच में  
 पागल व्यक्ति की तरह प्रलाप कर रही है । छ दिन के कारण  
 शोक से ही उस युवती उत्तरा के बाल सफेद हो गए थे ।  
 आँस अन्दर को धँस गई थी । धीरे धीरे उस क मन के



परदे पर पिता का घर, नाट्यालय में अर्जुन से नाच सीखना, फिर उत्तर का गौ लकर आना, पादुकों के अज्ञातवास की समाप्ति, विवाह, छ महीने तक पति के साथ भोगे हुए सुखों का समय, कुरुक्षेत्र का भयकर युद्ध, चक्रव्यूह, मृतपति को देखना आदि सब घटनाएँ फिर गईं। उसकी आँसों का आग अँधेरा छागया। वह पति की ही चिंता पर चढ़ कर स्वयं मरना चाहती है। उस की इस दयनीय दशा को देखकर शैलजा के दो आँसू टपक पड़े। और शैलजा उसे समझान लगी कि तुम्हें गर्भ है, उसकी रक्षा करना तुम्हारा कर्तव्य है। जब तुम्हारा पुत्र राज्यसिंहासन पर बैठेगा तब तुम्हें सब दुःख भूल जायगा। परन्तु उत्तरा अपने पुत्र को माता सुभद्रा और शैलजा को देखकर अपने पतिरूपी वृक्ष के पाद मूल में अपना भी जीवन समाप्त कर देने का निश्चय करती है। फिर सोचती है कि पता नहीं इस महा युद्ध में कितनी स्त्रियाँ उसकी तरह ही अनाथ होगईं दोगी। शैलजा ने उसे बतलाया कि महाभारत का युद्ध समाप्त हो गया। कौरवों में से केवल कृप, कृतवर्मा और द्रोण पुत्र बाकी बचे हैं और पादुकों की ओर से भी, सात्यकि और कृष्ण इनके सिवाय और फोड़ नहीं बचा, उत्तरा के पिता और भाई भी सब नष्ट हो गए। उत्तरा हैरान थी कि वह ६ दिन तक बेहोश रही, फिर भी उसके प्राण नहीं निकले। शैलजा ने बताया कि उसको कृष्ण ने योगस्थ होकर पुनर्जन्म दिया है। उत्तरा विस्मित थी और बठ कर पति की चिंता की ओर चल दी। उस पनी अँधेरी रात में अचानक जलती हुई चिताएँ देखकर

और गीघों और गीदड़ों की कर्कश ध्वनि सुन कर उत्तरा का हृदय काँप उठा। शैलजा सहित उत्तरा पति की चिता के पास पहुँची। कृष्ण भी वहीं उपस्थित थे। पर उत्तरा ने उन्हें देखा नहीं और वह कृष्ण व शरण देने के लिए प्रार्थना करने लगी और मृत पति को मन्त्रोचन कर कहने लगी कि प्रसव के बाद वह भी उसी जगह प्राण समर्पण करेगी। उसके बाद शैलजा ने चिता भस्म अपने और उसके माथ पर लगाई और दोनों चिता की प्रवक्षिणा कर वहाँ से विदा हुई। कृष्ण यही परधर की मूर्ति की तरह खड़े रहे। इतने में अजुन तथा सुभद्रा भी वहाँ पहुँचे। अजुन शोक से व्याकुल थे, सुभद्रा ने छन्द दिलाना दकर कहा—अथ तुम्हारा धीर व्रत समाप्त हुआ। अथ श्रेष्ठतर धर्म व्रत को स्वीकार कर पुत्र भस्म को हृदय में लगाकर कम क्षेत्र में अग्रसर हो। जय पृथ्वी में यह नवीन धर्म प्रचलित हो जायगा तभी हम अभिमन्यु के योग्य माता पिता कहलाएँगे। तदनन्तर चिता की भस्म को हृदय से लगाकर वे भी शिविर को चल दिए। तब कृष्ण चिता भस्म हृदय से लगाकर उपर की ओर देर कर कहने लगे—यदि मनुष्य की मुक्ति का मार्ग रक्त के सागर से है तो हे देव ! तुमने एक ही क्षण में कृष्ण क रक्त से पृथ्वी को क्यों न भर दिया। अठारह दिन तक जा यह भयानक रक्त पात हुआ उसमें का प्रत्येक बिन्दु कृष्ण क तप्त रक्त से निकला हुआ था। प्रत्येक अनाथ स्त्री के हाहाकार, उत्तरा और अर्जुन के शोक और सुभद्रा के वैराग्य ने भी तो मेरे हृदय पर छोट की है। रक्तमय पक्ष द्वारा घमराय स्थापित करने के बाद भी ज

पापाचार पूरा न हुआ तब इस दूषित खून का बहाना आवश्यक समझा, और इसीलिए देव ! आपकी इच्छा जान कर अठारह दिन तक अपना हृदय फोड़कर पृथ्वी पर रक्त की नदी बहा दी और प्राणों से भी अधिक प्यारे अभिमन्यु की बलि दी । अब आप पृथ्वी पर धमराज्य की स्थापना कीजिए । इतने में वह चिता पुनः प्रज्वलित हो उठी और उममें से त्रिभुवन की प्रकाशित करण वाली महाभारत की मूर्ति ध्यान मग्न राज राजेश्वरी माता आये और अनार्यों का सम्मेलन करने और नवीन धर्म की स्थापना करने के लिए दिसाइ पड़ी । उसके तीनों नेत्रों में तीनों लोकों का ज्ञान था । वह िष्काम काम करने का उपदेश दे रही थी और कृष्ण नाम का जाप कर रही थी । कृष्ण मा माँ पुकारते हुए वहीं चिता के पास मूर्डित होकर गिर पड़े । सवरे के प्रकाश के साथ अनंत मंगल बाजे बजने लगे और सुभद्रा, अर्जुन, शैलजा, तथा व्यास वहाँ पहुँचे । कृष्ण उठ कर कुमार की चिता के सामने ध्यान मग्न हो गये । उनके पाम धनचय खड़े थे और बीच में सुभद्रा देवी । ज्ञान का अवतार कृष्ण, बल के स्वरूप अर्जुन और भक्ति की मूर्ति सुभद्रा और उनके सामने चिता रूपी आत्मन्याग को देख महर्षि व्यास ने अपने को धर य समझा और उन्होंने ने देवताओं और ऋषियों को उस त्रिमूर्ति का दर्शन के लिए कहा, साथ ही नारायण से महाभारत के गीत गाने की शक्ति माँगी, जिससे मनुष्य कृष्ण के नामामृत को पान कर मुक्ति लाभ करे । शैलजा ने गुरुदेव के पैरों की घूलि सिंग धर भगवान से अनार्यों को भी अपने पद कमल

में शरण देने तथा भारतवासियों को ज्ञान, भक्ति, बल और आत्म बलिदान की शिक्षा देने के लिए प्रार्थना की ।

४४

जर्मन देश पर एक ऐतिहासिक दृष्टि

( लेखक—डा० गुरुमण्डल स्वर्ण एम० ए०, डी० लि० )

पृष्ठ ४२८, ४२९  
 विस्मयोत्पादन-हैरानी पैदा करने वाली, हैरान करने वाली  
 अनुसंधान-गोज  
 दर्शनानुशीलन-दर्शनों का मनन करना, दर्शनों का विचार करना ।  
 पतदेश-इस देश में अपत्र हुए प्रादाणों स प्रथिथी के सब मनुष्य अपने अपना चरित्र की शिक्षा लेने थे ।  
 गौरधारण-इच्छत का काम

प्रवर्तक-मचालक, कामको शुरू करने वाले ।  
 मानव प्रकृति-मनुष्य का स्वभाव  
 सशयमोचक-सदेह को दूर करने वाला ।  
 पृ० ४३०, ४३१  
 उपलब्धि-प्राप्ति  
 नितान्त-बिलकुल  
 पृ० ४३२ ४३३  
 लोकाचार-समार का व्यवहार  
 मनागध मिथि-इच्छा पूरी करना

( सचेत )

सभ्य ससार में आज जर्मनी समय अधिक आदर पारदा है । विज्ञान, कलाकौशल, नये आविष्कार तथा साहित्यिक अनुसंधान आदि सब तरफ की गई जर्मनी आधुनिक ज्ञान की आदर्श-जनक है । परन्तु आज से दो सौ वर्ष पूर्व जर्मनी की कोई ताकत नहीं थी । तब जर्मनी में एकता नहीं थी, शान्ति विरचन तो

पापाचार पूरा ७ हुआ तब इम दूषित खून का बहाना आवश्यक समझा, और उसीलिण देव ! आपकी इच्छा जान कर अठारह दिन तक अपना हृदय फोड़कर पृथ्वी पर रक्त की नदी बहा दी और प्राणों में भी अधिक धारे अभिमन्यु की बलि दी । अब आप पृथ्वी पर धमराज्य की स्थापना कीजिए । इतने में वह चिता पुन प्रज्वलित हो उठी और उममे से त्रिभुवन को प्रकाशित करत वाली महाभारत की मूर्ति ध्यानमग्न राज राजेश्वरी माता आया और अनार्या का सम्मेलन करने और नवीन धर्म की स्थापना करने के लिए दिग्माई पडी । उसके तीनों तैत्रो म तीनों लोकों का ज्ञान था । वह निष्काम काम करने का उपदेश द्रही थी और कृष्ण नाम का जाप कर रही थी । कृष्ण सा माँ पुकारते हुए वहीं चिता के पास मूर्तित होकर गिर पड़ । सारे वे प्रकाश के साथ अनंत मंगल बाजे बजने लगे और सुभद्रा, अर्जुन, शैलजा, तथा व्यास वहाँ पहुँचे । कृष्ण उठ कर कुमार की चिता के सामने ध्यान में मग्न हो गय । उनके पास धनजय खड्ग थे और बीच में सुभद्रा बैठी । ज्ञान क अवतार कृष्ण, बल क स्वरूप अर्जुन और भक्ति की मूर्ति सुभद्रा और उनके सामने चिता रूपी आत्मत्याग को देख महर्षि व्यास ने अपने को ध य समझा और उन्हों ने देवताओं और ऋषियों को उस त्रिमूर्ति क दर्शन के लिण कहा, साथ ही नारायण से महाभारत के गीत गाने की शक्ति माँगी, जिससे मनुष्य कृष्ण के तामामृत को पान कर मुक्ति लाभ करें । शैलजा ने गुरुद्वय के पैरों की चित्त सिर धर भगवान से अनाया को भी अपने पद-कमल

अधिक से अधिक खर्च करने को तैयार था । कहते हैं उसने एक साढ़े छ पुट लंबे आदमी को आयलैंड से बुलाने के लिए १३५०० रुपये खर्च कर दिये । इस तरह चौधस सौ लख मनुष्यों की एक बड़ी सेना उसने तैयार की । उस सेना की रक्षा वह पिता की तरह करता था । इसी शारीरिक बल को पाकर उसके बेटे फ्रेडरिक ने सारे यूरोप के मुकाबले में विजय प्राप्त की । इस तरह उसने अपनी जाति को वीर और कार्यशील बना दिया ।

४५

## त्रिमूर्ति

( लखक—श्रीयुत पदुमलाल पुनालाल रत्नगी )

पृ० ४३७	विशद—स्पष्ट, स्पन्द
अवलम्बन—सहारा	अभिनव—नया
सूर्योदय—सूर्य का उगना	पृ० ४४०, ४४१
विराट्—बहुत बड़ा	मधुपूर्णा—रसम भरी हुई
पवन—हवा	विश्वात्मा—ससार की आत्मा
उनीयमान—उगते हुए	संचरण करती है—संचार करती है, विद्यमान रहती है ।
प्रभा—ज्ञान्ति	अनवच्छिन्न रहते हैं—अटूट रहते हैं । दश और काल इनकी सीमा नहीं बाँधते, दश और समय का प्रभाव उन्हें सीमित नहीं कर नेता ।
पृ० ४३८, ४३६	विद्य कवि—सत्तार भर क कवि
विद्य क विपम साधप—ममार के अत्यधिक दुःख	सम्प्र—सारा
प्रामादिक—प्रसाद गुणवाला	कृति—रचना, काव्य
अर्थात् ऐसी भाषा जो	
स्वच्छ और साफ हो और	
मुनने क साथ ही जिसका	
भाव समझ में आ जाय ।	

दूर रहा, उस समय यहाँ की अपनी भाषा भी न थी। उस समय यहाँ फ्राँसीसी भाषा पढ़ने में गौरव समझा जाता था। साराग यह कि उस समय जर्मन जाति ही मौजूद न थी। इतिहास हमें बताना है कि नती ने किस प्रकार यह उन्नति की है। सन् १६६१ में प्रशिया और प्रेण्टाबग इन दो छोटे छोटे राज्यों के मेल में प्रशिया राज्य की स्थापना हुई। उस प्रशिया ने जर्मनी के छोटे-छोटे राजवाड़ों को सगठित कर जर्मनी को एक राष्ट्र बनाया। सन् १६८८ में फ्रेडरिक मृतीय प्रशिया के मिश्रासन पर बैठा। सन् १७०१ में उसने सघाट की एक युद्ध में सहायता कर उससे राजा की स्वाधि प्राप्त की। सन् १७१३ में उसका पुत्र पहला विलियम गद्दी पर बैठा। वह साहित्य, सभ्यता, कला और शिक्षा सब का यिरोवी था, परन्तु शरीर में थड़ा बलवान था। उसका पिता विद्या और कला का प्रेमी था और रभिक था। पर यह थड़ा कजूम था। कपिता आदि पढ़ने को बह विजुड तथा समय खराब करण समझता था। किसी को खाली बैठे देख लेता तो सीप चार छड़ी लगाकर काम पर भेज देता।

उसने एक ऐसी मभा बताई जिसमें राज्य विषयक सभी प्रकार के विचार होते थे पर जिसके हर एक सदस्य को समाजू और जराय पीना आवश्यक था। वह शारीरिक उन्नति को सब से अधिक महत्त्व देता था। लंबे कद के आदमिया को मेना में भरती करने का थड़ा शौकीन था। एक लंबे कद के आदमी को पाने के लिये

पुरुषोत्तम-श्रेष्ठ पुरुष  
 देवदुर्लभ-देवताओं में भी कठि-  
 नता से मिला घाले  
 भव्यता-सुन्दरता  
 विस्मयविमुग्ध-हैरान  
 पृ० ४४८, ४४९  
 भक्तिभावना-भक्ति के विचार  
 दामिद्र्य व्रत-गरीबी का व्रत  
 विलापोद्गार-विलाप करना  
 दूधीभूत-पिघला हुआ

विश्वरूप-विराट् रूप, परमात्मा  
 का रूप  
 हृदयरपन्न-हृदय की फड़कन  
 औत्सुक्य-उत्सुकता  
 अंकित-चित्रित  
 ध्वनित हो रहा है-गूँन रहा है  
 पृ० ४५०  
 व्यथघात-भेद, बाधा  
 उद्भव-उत्पत्ति

## ( सक्षेप )

मनुष्यमात्र अपने ज्ञान को सीमित नहीं रखना चाहता  
 जहाँ उसकी बुद्धि काम नहीं देती, वहाँ वह कल्पना के घोंघे  
 दौड़ाता है। तभी काव्य की सृष्टि होती है। सूर्य का उगना  
 और अस्त होना रोचक की घटना है। परन्तु कवि सूर्योदय  
 म उपा देवी के मधुर हास की और अस्त होते समय वियोग  
 के कारण रात के मलिन वेश की कल्पना करता है। ज्यों ज्यों  
 सभ्यता की वृद्धि होती जाती है, ज्यों ज्यों ज्ञान बढ़ता जाता है  
 त्यों त्यों मनुष्य कल्पना शक्ति में काम लेना छोड़ता जाता  
 और त्यों त्यों कवित्व का दाम होता जाता है। जीवन के प्रभा  
 काल में—युवपन में—मनुष्य बरसात के जल में डूबते, नाच  
 और खेचत फिरते हैं, परन्तु उयो उयो वे बढ़े होमे जाते हैं, त्यों  
 त्यों उस गँदले पानी और कीचड़ में घबराते लगते हैं। इस  
 प्रभाव हमारी कल्पना शक्ति पर पड़ना है। यान्मोहि अ



गिरिगान-पर्वतों का राजा  
 चालवी—गंगा  
 पुरीत—पवित्र  
 समरुत्त-बराबर की श्रेणी के  
 किदन्तियाँ—तंत कथाएँ, मन  
 गदन्त कहानियाँ ।  
 चम्पैप-प्रकाश, रिलना, थोडा  
 प्रकाश ।  
 पापाणहृदय-पत्थर की तरह  
 कठोर हृदय ।  
 द्रवित—विघला हुआ  
 पृ० ४४२, ४४३  
 मर्त्यलोक-मनुष्यों का लोक  
 निदारुण निशा-भयंकर रात  
 मर्माहत-अत्यधिक चोट खाकर  
 बदना—पीडा  
 our -thoughts-हमारे सच  
 स मधुर गीत बनीं हैं जो  
 सबस अधिक मानसिक दुःख  
 के भावों को प्रकट करते हैं ।  
 लालायित ह्या-उत्तुरु हा  
 अवहेलना-याग न देना तिर-  
 स्कार करना ।  
 चर्म चनु-चमडे का आरें  
 बाहरों आरें ।  
 आन्ति करि-सबस पहला कवि  
 कविर्मनाथो परिभू स्वयम्भू—  
 परमात्मा करि, मनन

करने वाला, सबके ऊपर  
 विराजमान, और आपही  
 होने वाला है  
 सौष्ठव-अच्छाई  
 मोपान-मीठी  
 पृ० ४४४, ४४५  
 पराकाष्ठा-हृद, चरममीमा  
 निस्सारता-अर्थ  
 विभूति-ऐश्वर्य  
 अवतरण कर-पैदा कर  
 विश्लेषण कर-अलग अलग  
 गिनाकर  
 प्रवर्जित कर दी-चला दी  
 अध्यात्म शक्ति विहीन-आ मा  
 सर्वधी ज्ञान से रहित  
 पार्थिवत्री-पृथिवी की शोभा  
 क्रिया शक्ति-नाम करने की शक्ति  
 पृ० ४४६ ४४७  
 त्रिशुद्धि-पवित्रता  
 नैपुण्य-पिपुणता, चतुरता  
 उच्छ्वाम-श्वास, प्राण  
 निरकुशता-बन्धन का न होना  
 गिरिनयैर-पहाड का भरना  
 छन्दोयोचना-छन्दों की बनायट  
 विवाच-विना रुद, विना किसी  
 विन के  
 चरिताङ्कण-चरित्र दिखाना,  
 चरित्र चित्रण करना ।

पुरुषोत्तम-भ्रष्ट पुरुष  
 देवदुर्लभ-देवताओं में भी कठि  
 नता से मिलने वाले  
 भन्यता-सुन्दरता  
 विस्मयचिमुग्ध-ईरान  
 पृ० ४४८, ४४६  
 भक्तिभावना-भक्ति के विचार  
 दारिद्र्य व्रत-गरीबी का व्रत  
 विलापोद्गार-विलाप करना  
 द्रवीभूत-पिघला हुआ

विश्वरूप-विराट् रूप, परमात्मा  
 का रूप  
 हृदयस्पन्दन-हृदय की फड़का  
 औत्सुक्य-उत्सुकता  
 अंकित-चित्रित  
 ध्वनित हो रहा है-गँज रहा है  
 पृ० ४५०  
 व्यवधान-भेद, बाधा  
 उद्भव-उत्पत्ति

### ( सक्षेप )

मनुष्यमात्र अपने ज्ञान को सीमित नहीं करना चाहता, जहाँ उसकी बुद्धि काम नहीं देती, वहाँ वह कल्पना के घोंटे दौड़ाता है। तभी काव्य की सृष्टि होती है। सूर्य का उगना और अस्त होना रोज की घटना है। परन्तु कवि सूर्योदय में उपा देवी के मधुर हास की और अस्त होते समय वियोग के कारण रात के मलिन बेश की कल्पना करता है। ज्यों ज्यों मन्यता की वृद्धि होती जाती है, ज्यों ज्यों ज्ञान बढ़ता जाता है, त्यों-त्यों मनुष्य कल्पना शक्ति से काम लेना छोड़ता जाता है और त्यों त्यों कवित्व का हास होता जाता है। जीवन के प्रभात पाल में—यचपन में—मनुष्य परमात्मा के जल में हँसते, नाचते और गलते फिरते हैं, परन्तु ज्यों ज्यों वे बड़े होते जाते हैं, त्यों त्यों उस गँदले पानी और कीचड़ से घबराने लगते हैं। इसका प्रभाव हमारी कल्पना शक्ति पर पड़ता है। वाल्मीकि और

तुलसीदास दोनों ही कवि रामायण की कथा कहकर अमर हो गये हैं पर दोनों व यथा प्रणम को दमकर यह भेद स्पष्ट हो जाता है। तुलसीदास की कविता में दम स्थान स्थान में साक्षात् रिक्त कुम्हिलता का परिचय पाते हैं, जैसे—

‘निहित नम घन गगनोत्थिराजा, ननु रमिनि कर जुरा समाना  
महाघृष्टि चलि कूटि स्त्रिचारी विमि स्वतत्र भये विगारहि नारी’

इसका कारण यह है कि वाल्मीकि ने रामायण तपोवन में बैठकर लिखी थी और तुलसीदास ने किसी नगर में। इस तरह कवि पर देश काल का बड़ा प्रभाव पड़ता है और उसकी कल्पना भी उसी तरह की हो जाती है। सभ्यता के आदिकाल में जो कवि हुए हैं, उनकी कविता भाषा के आदम्बर से रहित स्वच्छ और सुबोध है, परन्तु उपरोक्त घन और ऐश्वर्य बढ़ता जाता है क्योंकि कविता में घाड़ी सजावट बढ़ती जाती है। इसी कारण साहित्य के युग को प्राचीन काल, मध्य काल और उच्च काल इन तीन भागों में बाँटा जाता है। प्राचीन काल में कवि वाह्य के समार को अन्तर्गत में मिलाकर एक गयी ही मूर्ष्टि करते थे, उस समय की कविता में अन्तर्गत और वाह्य के समार में भेद नहीं रहता। उस समय के प्रधान कवि वाल्मीकि, व्यास और होमर हैं।

काव्य दो प्रकार के होते हैं, कुछ में कवि अपने अनुभवों के ही द्वारा सारी मनुष्य जाति के गूढ़ भावों को स्पष्ट करता है, परन्तु कुछ काव्य ऐस होते हैं, जो देश और काल के हित में पूरे होते हैं। इन में कवि अपने समार की आकांक्षा का

कर्ता विश्वकवि कहलाते हैं। इन काव्यों को पढ़ने से अनन्तकाल तक लोग आनन्द और पवित्रता पाते रहते हैं। भारत में रामायण और महाभारत और प्राचीन ग्रीस के इलियड और ओडिसी इसी तरह के महाकाव्य हैं। उन काव्यों के कता भारत के वाल्मीकि और व्यास और योरोप का होमर तीनों ही एक समान अमर हैं।

इन दिव्य शक्ति-समन रचिया के बार में अनेक किंवदन्तियाँ प्रसिद्ध हैं, उनमें इनकी असाधारण बातों का ही उल्लेख है, पर वे किंवदन्तियाँ उनकी कविता के रूपों का बहुत मा परिचय देती हैं। कहा जाता है कि पहले वाल्मीकि क्रूर डाकू थे, पीछे राम नाम के प्रभाव से साधु होगये। उनकी कविता में भी करुणरस का ऐसा उद्गार है कि वह पत्थर को भी पिघला देती है। ऐसे ही उनके विषय में प्रसिद्ध है कि क्रौंच पक्षी के पंख में पीड़ित होकर एक दम उनके मुँह में श्लोक निकल पड़ा। ( कहानी के लिए श्री केशव प्रसाद शुक्ल लिखित हिन्दी विलास चन्द्रिका, अथवा हिन्दी विलास का कुञ्जी का पृष्ठ ३१२ देखिये ) इस किंवदन्ती से प्रकट होता है कि जिस कविता में कोई पीड़ा नहीं दिखाई देती उस कविता में मधुरता भी नहीं होती। व्यास की महाभारत हिन्दू समाज को धर्म और नीति की शिक्षा देने के कारण पंचम वेद समझा जाता है, परन्तु उनके जन्म के विषय में जो किंवदन्तियाँ हैं उनसे सिद्ध होता है जन्म किसी मनुष्यका भविष्य निश्चित नहीं कर देता। होमर अभा था। आँसू से पृथ्वी की धातु ही देखी जाती है, पर होमर ने नेत्र हीन होकर पृथ्वी पर स्वर्ग के दर्शन किये।

बान्सीवि भारत के सबसे पहले कवि और महर्षि माने जाते हैं। हिन्दू समाज में ऋषि का स्थान बहुत ऊँचा है। आदि कवि को महर्षि कहा जाता था ताकि वे कवि को यह स्थान प्राप्त है जो एक ऋषि को है। उपनिषद् में परमात्मा को भी कवि कहा गया है। एक ऋषि के धर्म के समान कवि के कवन भी गुरुओं में स्वर्गीय भाव भरने वाले होने चाहिए। अष्टांग आदि जो वाक्य के माध्यम गुण हैं, पर ऋषि का कवन तो हमारी सब कामनाओं का अन्त कर सकता है, और रामायण के पद्यन में फिर कोई वाक्य नहीं है। इसलिए उसे स्वर्ग की सीढ़ी भी कहा है। रामायण में एक आदर्श समाज का चित्र है। इसलिए कुछ लोगों को यह अमर्ष हीवता है। पर तु रामायण यह बताती है कि मनुष्य समाज आदर्श किम प्रकार हो सकता है। व्यास जी ने महा भारत में दुनिया की ताकत का फोकस बताया है। उन्होंने धर्म और अधर्म का बड़ा सूक्ष्म निष्कर्ष दिया है और यह बताया है कि अपने धर्म में बलि होना ही धर्म की पराकाष्ठा है। होमर के इलियड काव्य में बताया गया है कि एशिया के समृद्धिशीली देश ट्राय के राजा प्रायूम का पुत्र पेरिस स्पार्टानरेश मनेलास की स्त्री हलेन को भगा लाया। इसपर मनेलास ने प्रोक राजाओं को ले ट्राय पर आक्रमण कर उसे जीत लिया। ओडेसी में यूलीसिस नामक प्रोक-नरेश की यात्रा का वर्णन है। यद्यपि महाकाव्य में कहानी की ओर प्रधानता दी जाती है, पर तु होमर के महाकाव्य में शैक्सपियर के नाटकों की तरह चरित्र चित्रण पर और मानसिक भावों को प्रकट करने पर भी काफी

जोर दिया गया है। रामायण और महाभारत की तरह होमर ने भी योरप में सद्बिचार फैलाये हैं। जिस तरह द्रौपदी कार्य-शीलता की और सीता पवित्रता की मूर्ति है वैसे ही होमर की हेलेन पृथ्वी के मौन्दर्य की मूर्ति है।

कविता में अलंकार आवश्यक हैं। होमर ने उपमाएँ किसी बात को विशेष प्रभावशाली बनाने के लिए प्रयुक्त की हैं। वाल्मीकि की उपमाएँ यही सरल होती हैं, परन्तु व्यासजी की उपमाओं में एक प्रकार की निरकुशता है। इन तीनों कवियों की कविता में स्वाभाविक प्रवाह, प्रसादगुण (स्वच्छता और सुबोधता) तथा स्वर्गीय भाव कूटकूट कर भरे हैं।

कवि का प्रधान गुण आदर्श चरित्र की सृष्टि करना है। होमर की हेलेन, वाल्मीकि की सीता तथा व्यास की द्रौपदी तीनों ही अद्वितीय हैं, पर दिव्यता की दृष्टि से सीता का चरित्र अनुपम है।

रामायण में रामचन्द्र और सीता का ही चरित्र प्रधान है और सब गौण हैं। रामचन्द्र में सब देव दुर्लभ गुण हैं। उनका चरित्र एक बार मनुष्य मात्र को विस्मित कर देता है। मनुष्य उन को ईश्वर समझता है, परन्तु यह भक्ति उनके किसी अस्वाभाविक चरित्र के कारण नहीं परन्तु सासारिक चरित्र के कारण है। रामचन्द्र ईश्वर हो सकते हैं, परन्तु वाल्मीकि के रामचन्द्र सदा मनुष्य रूप में दिखाई देते हैं। वे आदर्श पुत्र थे, स्नेही भाई थे और प्रेमी पति थे। उन्होंने राज्यसिंहासन छोड़ कर दरिद्रता में जीवन बिताया, माता और लक्ष्मण के लिए विलाप किया। पाठक इन स्थलों को पढ़कर विपल जाते हैं। परन्तु तुलसीदास

धर्म शब्दों में जब यह कह दते हैं कि रामचन्द्र तो परमात्मा हैं  
 तब केवल मानवलीला कर रहे हैं, तब काव्य का सारा आनंद  
 मारा जाता है, परन्तु वाल्मीकि ने ऐसे स्थानों पर कहीं  
 उह दृष्टि नहीं उताया। उन्होंने उह मनुष्य रूप में ही  
 लिखाया है। सीता का चित्र चित्रण तो बहुत मफल हुआ है।  
 सभी कारण आज दृष्टारों धरम बाद भी पाठक उसम उतना  
 ही आनंद लेते हैं।

देग फाल के कारण मनुष्य जाति में कई नद हो गये हैं।  
 धर्म और साहित्य दोनों इन भेदों को हटाना चाहते हैं, परन्तु  
 धर्म हम काम में मफल नहीं हुआ। प्रत्येक धर्म मवकी मिलाने के  
 लिए पैदा हुआ, पर थोड़े दिन बाद नये नये मतों की सृष्टि हो  
 गई, और आज ये पारस्परिक घृणा और विद्वेष फैला रह हैं,  
 परन्तु यह माग साहित्य मसार का साहित्य है और मनुष्य  
 जाति के भले के लिए ही यह उना है। वाल्मीकि, व्यास  
 और होमर कहीं भी पैदा हुए ही परन्तु उनकी काव्यधारण  
 सारे मसार का उपकार कर रही हैं।

## हेनरी फेवर

पृ० ४५२, ४५३

रहस्यपूर्ण-गुप्त भेदों से युक्त  
विचरण करता है-धूमता है

शृंगमाला-चोटियाँ

कौतुक-आश्चर्य

आह्लाददायिनी-प्रसन्नता देनेवाली

पृ० ४५४, ४५५

चौगान-खेलने के मैदान

किञ्चिन्मात्र-कुट्ट भी

अनुराग-प्रेम

विद्याभिरुचि-विद्या पढनेकी अत्य

धिक रुचि, विद्या प्रेम

भूमिति शास्त्र-ज्यामिति शास्त्र,

बहु गणित विद्या जिमने

भूमि के परिमाण भिन्न भिन्न

सूत्रों के अंग आदि के पर

स्पर सबध तथा रेखा कोण

आदिका विचार कियाजाताहै

पृ० ४५६, ४५७

घोषि-शंख की तरह का एककीडा

शाश्वतिप्सा-ज्ञान प्राप्त करने कालोभ

फलीभूत-सफल

गुहरीला-एक प्रकार का कीडा

पृ० ४५८, ४६०

अमशोची-भाग्य की सोचने वाली

दूरदर्श

कीट संसार-कीड़ों का ससार  
पदन्युत हा जाना-अधिकार से  
हट जाना

पृ० ४६०, ४६१

उदारचता-उत्तर मिल वाले

सूक्ष्मदर्शक कांच-एक प्रकार का

शीशा जिमसे देखने पर

सूक्ष्म पदार्थ बड़े दिखाई

देते हैं।

इहलीला मधरणा की-इस लोक

का जीवन समाप्त किया।

परलोक मिथार गये।

पृ० ४६४, ४६५

प्रेमालाप-प्रेम की बातें

घंटाघृति-घंटे की शकल का

आगंतुक-आन वाला

ईश्वर-एक प्रकार की बहुत सूक्ष्म

और लचीली चीज जो सारे

खाली आकाश में फैली हुई है

गाथा-कहानी

पृ० ४६६, ४६७

स्तुत्य-प्रशंसा के योग्य

अंडाघृति-अंड की शकल का,

वृत्ताकार-गोल

कंपास-परकार



## ( मक्षेप )

हररी फेवर का स्थान प्राणिशास्त्र के विद्वानों में बहुत ऊँचा है। उनका जन्म काम के मेटलिथो-म नामक ग्राम में मन् १८२३ इस्वी में हुआ था। उनका पिता होटल में दरबान में। अश्वीर बचपन के घोर दृष्टिता के दिन छोटे छोटे कीड़े मकोड़ों के साथ तेज कर मज्ज में घाट दिया। मात वर्ष की अवस्था में वह एक पाठशाला में पढ़ने गये। उनका शिक्षक एक नाई था। वह अपना व्यवसाय के बाद गिरिजापुर में घटा भी प्रजाया करता था। पाठशाला की अवस्था बढ़ी मर्राय थी, पर यहाँ से हररी के हृदय में पढ़न का प्रेम पैदा होगया। वहाँ के पिता के साथ वह रोहेज चले गये। शरीरी के कारण उन्हें अपनी आजीविका की चिंता थी। पशु-पक्षी तथा कीड़ों का ज्ञान तो पट भरन में मदद न दे सकता था, अतः पढ़न के साथ ही साथ वे देहातों में गिबू भी बेचते रहे। पढ़ाई में तेज होने के कारण उन्हें छात्र-वृत्ति मिल गयी, और फिर तीन साल की पढ़ाई उद्द साल में सतत कर प्रथम श्रेणी में पास हो उन्होंने अपनी योग्यता का परिचय दिया। इसके बाद वे ३० मार्सक पर एक ग्राम पाठशाला में अध्यापक हो गये। इसी समय उनका विवाह होगया। वहीं दिनों गणित तथा विज्ञानशास्त्र की उच्च परीक्षा पास करते ही वे कार्सिका द्वीप के एजीकियो बालिज में अध्यापक हो गये। अब एक प्रोफेसर के सहयोग से वे भिन्न भिन्न प्रकार के प्राणियों को एकत्र करने और चीर काढ़कर उनकी जाँच करने लगे। इस विषय में अत्यधिक काम करने से उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया। और वे बदली करा कर

पह्लिनगनोन की पाठशाला में अध्यापक हुए। यहाँ भी वे बाहर रेतों में घूमकर अपना समय प्रकृति के इन रहस्यों की खोज में लगाने लगे।

एक दिन उन्होंने एक लेग में पढ़ा कि बरैया अपने छत्ते में जिन गुबरीलों को मारकर इकट्ठा करती हैं, वे मृत शरीर बरैये के डक स निकले हुए विष की किसी विशेष शक्ति के कारण दो दो महीने तक पड़े रहकर भी नहीं सड़त। परन्तु फेवर साहय इस परिणाम पर पहुँचे थे कि बरैया जिन गुबरीलों को इकट्ठा करती है, वे यहाँ दो महीने तक कैद रहने पर भी नहीं मरते, केवल उनके चलने फिरने की शक्ति मारी जाती है जिससे बरैया के अडों में बच्चे निकलन तक व जीवित रहे और बच्चों को यथासमय ताजा भोजन मिल सके। फेवर साहय ने इस खोज को पुस्तक रूप में प्रकाशित किया। जिसको प्रशसा डारविन तक ने की। इसी समय फेवर साहय ने मजीठ में रग निकालने की विधि निकालकर जीविका से मुक्त होना चाहा, पर अपने भोलेपन के कारण वे इसे गुप्त न रख सके अतएव इससे दूसरे फायदा उठा गये। उन्होंने बहुत सी प्राकृतिक ज्ञानविषयक बालोपयोगी पुस्तकें लिगीं। इन पुस्तकों को देख कर फ्रांस के शिक्षामंत्री उन पर मोहित हो गए, उन्होंने उन्हें उपाधि दी, और उनकी भेंट राजा से कराई। इसी समय उनकी मित्रता जान स्टुआर्ट मिल से हो गई। इन्हीं दिनों उनके हित चिंतक मन्त्री के पदच्युत होजाने से उनकी नौकरी छूट गई और पुस्तकों पर रायल्टी मिलनी भी बंद हो गई, सब मिल से कुछ रुपये छिपे जो बाद में वापिस कर दिये।

फिर ये मेरिमान की शान्ति कुटीर में चले आये। कुछ दिन बाद उन्होंने "नि मार भूमि ग्वड" नामक पुस्तकें प्रकाशित की, जिसकी अच्छी फट्ट हुई। उसमें इन्होंने कीट पतंगों का जीवन वृत्तान्त लिखा। और कीड़ों के संबंध में ऐसी बातें बताई जिन्हें पहले मनुष्य न जानते थे। इनके रोज करने का ढंग साधारण था, और एक सूक्ष्म दर्शक काँच और नमूने के लिए दियासलाई की राली डिब्बियों आदि के सिवा इनके पास रोज का छोड़ सामान न था। फर साहब की सफलता का श्रेय उनके धैर्य और दृढ़ निश्चय को था। अन्त में १९१५ इसवी को ये परलोक सिधारे। इनकी कुल प्राणिशास्त्र विषयक ११ पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। इनकी विचित्र देश की गाथा नामक पुस्तक बहुत मनोरंजक है। उसमें उन्होंने बताया है कि रेशम के कीड़े के खोल में से निकले हुए मोर पक्षी के पैदा होते ही उसकी गंध पाकर किस तरह दूर दूर से पतंगे उसके आस पास आ जुटते हैं। यहाँ तक कि उस के आस पास यदि तेज सुशबू वाला लवैण्डर भी रखा दे तो भी उसकी ओर ध्यान न दे पतंग मोर पक्षी के कैदगाने के आस पास ही चक्कर काटने लगते हैं।

फेर साहब ने यह जानने के लिए कि मोर परंगी की गंधर उन पतंगों को त्रिजली या चुंबक शक्ति अथवा वेतार की सार द्वारा या अन्य किसी तरह पहुँचती है, उस मार परंगी को एक एसी जगह बंद कर दिया जहाँ हवा न पहुँच सकती थी, तब वहाँ कोई पतंगा न पहुँचा, पर खरा सा सूरख होते ही वहाँ पतंगों का भीड़ लग गयी। अतः यह पता लग गया कि जहाँ थोड़ी भी हवा पहुँचती है वहाँ गंध के साथ पतंगों को भी खबर पहुँच जाती है।

अभी यह परीक्षण पूरा नहीं हुआ था कि वह मोरपंखी मर गया। फिर तीन साल की लगातार तलाश के बाद एक दूसरा पतंगा उम्मी जाति का मिला। उस पर भी परीक्षण किया तो यह निश्चित हो गया कि मोरपंखी की रखर गंध द्वारा ही पतंगों को मिला जाती है और यह भी कि जिस वस्तु को यह पतंगा छू धार छू देता है उसमें भी ऐसी ही गंध बस जाती है। और वह सूदम गंध किसी दूसरी गंध से नहीं दबती।

उनकी 'भूमि की गाथा' नामक पुस्तक में मधुमक्खी की चतुरता का वर्णन है। वह घनाया और गुलाब के फूलों के गोल और अठारार टुकड़े काटती है। उन अठारार टुकड़ों में वह धैली बनती है और गोल टुकड़ों से टकन। १०-१२ टुकड़ों से बाहर का ढाँचा बनता है। धैली के मोर पतंगों में वह वनों के लिए पालना भी बनाती है। इनके भीतर मुलायम पत्तों का अस्तर होता है और नमी के रखर दबना ऐसा फिट धैलाया जाता है कि जिससे धैली के अस्तर का गुण भी नहीं लगने पाता।

फोवर की पुस्तक में काड़े-पतंगों के मधुमक्खी-पतंगों का जिक्र है जो हमारे घर के आस-पास गंध होती है पर जिन पर हम ध्यान तक नहीं देते।

## आकाश-गंगा

(लपक—श्रीलाउ शालग्राम पट्ट्या)

पृ० ४६२, ४६२

तेजस्व-प्रकाशमय

मालिका-माला

खगोलज्ञ-आकाश क नक्षत्रों, ग्रहों

आदि का ज्ञान रखने वाल

शुभ उष्ण-सफेद और गरम

रक्त उष्ण-लाल और गरम

पृ० ४७०, ४७१

अप्रतिम-अद्वितीय, अनुपम

अव्यवस्थित-गठिफान क, इधर

उधर बिम्बर हुए

अरण्या-जंगलों

अगम्य-जहाँ कोई जा न सके

मनोदेश-मन

पृ० ४७२ से ४७७

प्रवास-विदेश म वास, यात्रा

भस्मीभूत-जल कर राख हो जाना

कणिकाओं-दुकड़ों

ब्रह्माण्ड-चौदह भुवनों का एक

समूह

मायासम्भूत-माया से उत्पन्न

अनवधि-असीम, नेहद

## सक्षेप

आकाश में रात के समय एक सिर से दूसरे सिर तक चार हाथ चौड़ा एक प्रकाशमय पथ दिखाई देता है, इसे ही आकाश गंगा कहते हैं। बड़े से बड़े दूरदर्शक यंत्र से इस आकाशगंगा का जितना भाग एक क्षण दिखाई देता है उसका एक चित्र एक विद्वान् ने तैयार किया है। आकाशगंगा का यह चित्र उन्नीसवीं शताब्दी का एक आश्चर्य जनक आविष्कार है। इस चित्र में कोई हजार छोटे छोटे बिंदु दिखाई देते हैं, प्रत्येक बिंदु एक सूर्य का चित्र है, चन्द्रमा और पृथ्वी के पाम के पाँच ग्रहों के सिवा आकाश में रात को जितने तारे दिखाई पड़ते

हैं, वे सब सूर्य हैं। हमारा सूर्य पृथ्वी से १३,१०,००० गुना बड़ा है। यह भी एक तारा ही है। आकाशगंगा के कई तारे हमारे सूर्य से भी बड़े हैं। इनकी आपस की दूरा करोड़ों मील की है, पर पृथिवी से बहुत दूर होने के कारण २ पास पास दिखाई देते हैं। एक कमरे में काली मखमल के पर्ण पर जो मन हीरे मोती बखेर लिये जायें, और फिर कमरे में सैकड़ों बिजली के दीपक लगा दिये जायें, उस समय कमरे की जो शोभा होगी, उससे कई गुना अधिक सुन्दर नश्य दूरबीन द्वारा आकाशगंगा का दिखाई देता है।

फोटोग्राफी द्वारा सपूर्ण नभोमंडल के चित्र २५ हजार भिन्न भिन्न खेटों पर उतारे गए हैं। उनके द्वारा आकाश के जो अद्भुत चमत्कार पता लगे हैं उनका वर्णन नहीं हो सकता।

आकाशगंगा हम से कितना दूर है इसका अनुमान इससे लग सकता है कि यदि एक मिनट में एक मील चलने वाली रेलगाड़ी पर निरंतर चलत जायें तो एक शताब्दी में आधा रास्ता तय होगा। उस आधे रास्ते में ठहरकर यदि आकाशगंगा का चित्र ले तो वह वैसा ही होगा जैसा पृथिवी पर का लिया हुआ चित्र था। वहाँ से तेज दूरदर्शक यंत्र द्वारा देखने से हमारा सूर्य भी एक तारे के समान दिखाई देगा, और असंख्य तारों में इसको पहचानना भी कठिन होगा। फिर वहाँ से चलना शुरू कर तो एक शताब्दी और चलकर हम आकाशगंगा की बाहरी सीमा के किसी भाग में पहुँच जायेंगे। पर आकाशगंगा के भीतर आ पहुँचे, यह बात हम तब भी नहीं कह सकते क्योंकि उस समय आकाशपथ असंख्य तारों

स युक्त दिग्गद्द दृष्टा है । उर है कि यात्रा में हमारी गाडी क्रिसा सूर्य के पास चली गइ तो जल का रास हो जायगी ।

आकाशगंगा के अनेक नक्षत्र हम न इतनी दूर हैं कि वहाँ स पृथ्वी तक उनका प्रकाश आने में ३००० से १५००० वर्ष तक का समय लगता है, और प्रकाश का वग एक सैकण्ड में १८६००० मील है । इससे दूरी का अनुमान हो सकता है । आकाश गंगा के सूर्य ता दूरबीन द्वारा देखे जा सकते हैं, पर जिन पृथिव्या का य प्रकाशित करते हैं उन्हें देखना किसी भा यत्र स संभव नहा । जिस प्रकार हमारे सूर्य के आस पास आठ ग्रह प्रदक्षिणा करते हैं, तो यदि आकाश गंगा में एक अरब सूर्य मान लिये जायें वास्तव में उनकी संख्या इस से भी अधिक है तो उनके आस पास असीम आकाश में आठ अरब ग्रह तो ऐसे टिपे पडे हें, जो हमें किसी तरह दिखाइ नहीं देते ।

इस महान आकाश में चमकती हुई असंख्य पृथिव्यों, अगणित सूर्य और तारकाओं का एक ब्रह्माण्ड है, ऐसे २१ और ब्रह्माण्ड हमारे शास्त्र मानते हैं ये सब इश्वरीय माया के प्रदेश के जिस भाग में है उससे कई गुना अधिक भाग वाला एक और माया प्रदेश है । यह सारा प्रदेश परमात्मा के साठे तीन करोड रोमों में से किसी एक रोम की तरह कोने में पडा है । इसमें मनुष्य का, उसकी पृथिवी का उसका सूर्य का कोई हिसाब ही नहीं अत एसे अनंत परमात्मा की शरण में जाना ही कल्याण का एक मार्ग है ।

## ४८ बर्लिन

(लेखक—भीयुत कृपा नाथ मिश्र एम ० ए ०)

० ४५८ से ४८६ तक  
वितृष्णा—उदासीनता, घृणा  
उल्लास—हर्ष, आनन्द  
मध्यवयस्वा—अधेड उमर की,  
जवानी और बुढ़ापे के बीच  
की अज्ञातवाली  
चर्म—चमड़ा  
कुंचन—सिनुडन, झुर्री  
क्षतविक्षत—घायल  
एक्सचेंज—वह स्थान जहाँ नगर  
के व्यापारी और महाजन  
परस्पर लेनदेन के लिए इकट्ठे  
होते हैं।  
ओपेरा—तमाशों का घर  
आवरण—परदा

मुद्रस्थ—कठस्थ, याद  
अवयव—हिस्सा, अंग  
व्यंग्य कर—ताना मारकर  
परिमार्जित—साफ, मैजी हुई  
मारात्मक—मारने वाला, नष्ट  
करने वाले  
पल्लव—पत्ते  
सिहर उठती है—काँप उठती है  
द्विविध—दोनों तरह के  
विपाद—दुःख  
मादकता—नशीलापना, नशा  
अनुकरणीय—नकल करने के  
लायक  
अपव्यय—फिजलमर्ची  
सोम—क्रोध

### संक्षेप

महायुद्ध के बाद यूरोप का असल रूप जर्मनी में ही  
दिखाई देता है। वहाँ सब तरफ आनन्द के दृश्य हैं, हार का  
कहीं निशान भी नहीं। दुनियाधी उन्नति इह दर्जे तक पहुँच  
गई है। बर्लिन के सामने लंदन और पेरिस गाँव से मालम होते  
हैं। वहाँ केम्पिन्स की वाटरलैंड नामक भोजनालय में संसार  
के सब देशों का खाना मिलता है, खाना खिलाने वाली उसी



दश का वय पचास उभो दश की बानो और गानों से शाने पल  
 का स्वागत करण। फिर गरी भी बहूत था। चार पाँच रुपये  
 स चार पाँच दशा हा गता मिलत मरणा हे। इतने रुपयें में  
 पेरिस और लॉन्डन मारुमा भागतातर में प्रवेश भी तहाँ कर  
 मरत। विद्या का उन्नत म उन्नित उ अथवा रूप लूक सजाग।  
 बालक वाणिजात न बमरत म शरार पुष्ट बिण तो प्रशिया  
 ग वाश्यों द्वारा प्रपत्ति गुरियाँ हटाड। पर यह मय किस  
 लिए हुआ अन्या उत्तर नहाँ मिला। बाहरी व्यक्ति मे यहाँ  
 ह्य माध नहाँ दता।

जर्मन ही मचमुच अमर गुरापीय हें। अंगरज उसक  
 सामने पीटा हें। फ्रामीमा का ह्य बदा मशुचित होता है।  
 अंगरजों का भाग्य ज्ञान बहूत कम है यहाँ तक कि निम भारत  
 पर वे शासक करते हैं, उनकी महान भाषा के बारे में उन्हें कुछ  
 पता नहीं पर जर्मनी वाले सहृदय पढ़ते हैं, गाँगी का जीवना  
 पढ़ते हैं और टैंगीर की कथिताएँ याद करते हैं। उनमें ज्ञान की  
 लुप्ता बहुत अधिक है इतना ज्ञान प्राप्त करन पर भी वे कुछ  
 रहस्य न समझ सक। ज्ञान की दौड़ का अन्त कहाँ है, यह उनके  
 लिए एक पहेला ?

अंगरज भारत के अपद घामोण की तरह मस्ती में दिन  
 बिता देता है। फ्रॉसीसिया की रुचि थोड़ी परिष्कृत है परन्तु  
 जमन असाधारण ग्योज में लगा रहता है, परन्तु दुर्भाग्य से  
 उसकी अब तक की ग्योज के फल अनेक क्षेत्रों में मारात्मक हो  
 चुक है। यही उनका दुर्भाग्य है। जर्मनी क भावुक लोग  
 बहुत दिन से प्रेम की मीमासा कर रहे थ। उन्होंने यह सिद्ध

किया कि प्रेम मस्तक की एक नस का प्रवाह है। वस जर्मनी की युवक-युवतियों ने सतीत्व पर हँस दिया और खुब गुलछर्रे उड़ाये। पर अब थक कर जर्मन पूछते हैं कि आगे किधर बढ़ना है। इसका उत्तर ज्ञानवान जर्मन स्वयं न दे सक। वे आजकल प्रेम को जलाकर घाहरी सजावट में लगे हैं, वे पाप और पुण्य के भावों को मुलाकर असीम शक्ति पान में फिर लगे हैं। उन्हें अपनी आत्मा की कोई सुख नहीं। उनका आधुनिक इतिहास वेश्या की दुःखपूर्ण गाथा की तरह जटिल है। वे लक्ष्य नहीं पा रहे, दुःख नहीं मिटता और व्याकुलता बढ़ती जाती है।

एक विदेशी मेरे देश के बारे में क्या समझेगा, यह सोच कर वे यात्रियों की सुरिधा का जितना रज्याल करते हैं, उतना शायद कोई और यूरोपीय नहीं करता। पहले प्रत्येक जर्मन अपने को कैसर का सिपाही समझता था पर अब वह अपने को एक वैज्ञानिक समझता है। और यह एक बड़े साम्राज्य का स्वप्न देख रहा है, जर्मनों की शक्ति यूरोप की अन्धी शक्ति में सबसे उच्च है, वे नशे में चूर होकर बढ़ते ही चले जाते हैं, पर उस शक्ति से ईर्ष्या नही होती अपितु दुःख होता है, क्योंकि उसमें आध्यात्मिकता का नाम भी नहीं।

---

दश का उप पहन उमा ष्ठ की बाली और गानों में खाने वाले का स्वागत करगा । फिर गर्व भी बहुत कम । चार पाँच रुपये में चार पाँच शो का खाना मिल सकता है । इतने रुपये में परिम और तन्द में किसी भाजनालय में प्रवेश भी नहीं कर सकते । विज्ञान का उपात्त में यत्नित न अपना रूप खूब सजाया । बालक बानिशाया १ बसरत में शरीर पुष्ट किण तो घृष्टियों ने न्याया द्वारा अपनी सुरिर्ता हटाई । पर यह मद्य किस लिए हुआ, इसका उत्तर नहीं मिलता । बाहरी उपात्त में यहाँ हृष्य साथ रहा दता ।

जर्मनी ही सचमुच अमल यूरोपीय है । अंगरेज उसका सामने चीटा है । फ्रांसीसी का हृष्य बड़ा मकुचित होता है । अंगरेजों का बाहरी ज्ञान बहुत कम है, यहाँ तक कि जिस भारत पर वे शासन कर रहे हैं, उसकी संस्कृत भाषा के बारे में उन्हें कुछ पता नहीं पर जर्मनी वाला संस्कृत पढ़ते हैं, गाँधी का जीवन पढ़ते हैं और टैगोर की कविताएँ याद करने हैं । उनमें ज्ञान की तृष्णा बहुत अधिक है इतना ज्ञान प्राप्त करने पर भी वे कुछ रहस्य में समझ मरे । ज्ञान की दौड़ का अन्त कहाँ है, यह उनमें लिए एक प्रश्नी है ।

अंगरेज भारत के अपद मामाण की तरह मस्ती में दिन बिता देता है । प्रॉसीसियों की रुचि थोड़ी परिष्कृत है परन्तु जमन अमाधारण रोज में लगा रहता है परन्तु दुर्भाग्य उसकी अथ तक की रोज के फल अनेक क्षेत्रों में मारात्मक है चुक ह । यही उनका दुर्भाग्य है । जर्मनी के भावुक लोग बहुत दिन से प्रेम की मीमासा कर रहे थे । उन्होंने यह सि

हे प्रतिनिधि चन्द्रावत ने उनसे राज मुकुट ले वीर प्रताप को पहनाया था, जिससे कि वे मेवाड़ को स्वाधीन कर सकें। प्रताप ने प्रतिज्ञा की थी कि जब तक चित्तौड़ स्वतन्त्र न होगा तब तक महलों में न घुसूँगा। इन्हीं दिनों में अकबर का सेनापति मानसिंह प्रताप के यहाँ पहुँचा, प्रताप ने उस देशद्रोही के साथ खाना खाने में इनकार कर दिया। इस पर मानसिंह ने अपना अपमान समझा। फलतः हल्दीघाटी का युद्ध हुआ। अकबर ने बड़ी भारी सेना के साथ सलीम, मानसिंह और प्रताप का भाई शक्तिसिंह—जो जवानी के घमण्ड में आकर एक छोटी सी बात पर प्रताप से लड़कर अकबर से जा मिला था—को भेजा। भयकर युद्ध हुआ। लड़ते लड़ते प्रताप मुगल सेना में चारों ओर घिर गये। वीर चन्द्रावत ने इस समय प्रताप को बचाने का एक ही साधन समझा कि वे प्रताप के सिर से राज मुकुट लेकर अपने सिर पर रखले, जिससे मुसलमान उनको ही राजा समझ मार लेंगे, और प्रताप बच जाएँगे। फलतः उन्होंने प्रताप से वह राजमुकुट जो उन्होंने स्वयं प्रताप को पहनाया था, वापिस माँगा। प्रताप मुकुट देने को तैयार थे, पर रणभूमि छोड़ने को तैयार न थे। चन्द्रावत ने आग्रह किया कि यदि आप प्राण त्याग देंगे तो फिर मेवाड़ का भाग्य भी हमेशा के लिए बूझ जायगा। पर प्रताप फिर भी तैयार न हुए। इतने में चन्द्रावत ने राजसिंह अपने सिर पर ले लिये और मुगलों ने उन्हें प्रताप समझ कर मार डाला। इसी समय शक्तिसिंह मैदान में आया। वे यह त्याग देकर अचम्भे में आगये, और उन्हें अपनी भूल पता लगी। इधर प्रताप का घोड़ा चेतक उन्हें युद्ध से भगा ले गया।

## राजपूतों की अद्भुत देशभक्ति

(संस्कृत-संग्रह-नाथप्रसाद मिलिन्द)

पृ० १८७ स १९४ तट  
 नर-मुण्डों-मनुष्या ३ मिग  
 पाट २ना-नर २ना  
 भग्नावस्था-गैडडग  
 इगित-इशाग  
 गिगता-बनान बाला  
 निधियाँ-ग्यजाने अमूल्य वस्तुएँ  
 भाप गया-ताट गगा  
 दाजग्द-नरक  
 उद्दाम-थान-निरकुश जवानों  
 जावन चाहता है प्रानम जावन  
 बिना कुङ्क प्रर रा में आए,  
 ठुगियाँ की औरों स परे रहकर  
 ममाप्त हो जान, चाहता है ।

वन कुमुम-वगल क फूल  
 साधना-उपासना  
 भीलों के धन-पुत्र  
 सिर क तान-मणि (पति)  
 भाल-भरतक  
 आज-आज भित्तारी दरवाजे पर

आया है और हाथ पसार कर  
 नांग रहा है। ऐ माताओ बहनों,  
 बहूओ और बेटियों, अपने देश  
 का कर्ण पुकार सुन और युद्ध  
 क लिए अपने पुत्र तथा पति  
 दे दा इस तरह अपनी माता की  
 लाज रख लो ।

ओ जौहर व्रत करने वाली  
 हमेशा बलिदान करने वाली  
 बहनों, अपने उत्तम हृदय खोल  
 ने और अपने पुत्र लाइल  
 भाइ, पति और पिताओं को  
 लुटा दो और जन्मभूमि की  
 लाज रखलो ।

आज वन वन में स्वतन्त्रता के  
 पुजारी माँ के प्यारे बेटे, पागल  
 से फिरते हैं। बलिनेदी प्रतीक्षा  
 कर रही है। तुम अपने प्राणों  
 की आहुतियाँ भेजो, जिससे  
 फिर माँ का मस्तक ऊँचा हो

(संक्षेप)

महाराणा उदयसिंह अपनी मृत्यु के बाद अपने विलासी  
 पुत्र जगमल को अपना उत्तराधिकारी बना गये थे, पर प्रजा

त्वचा-चमड़ी	:	निशान छाड़ जाँय । उन
छोर-फिनारा	:	पैरों के निशाना का देखकर
सज्जन-सज्जन	ऐसा चमित्र :	हमार भाई भी—जिनकी
	दियाते हैं जिन्हें देखकर :	संसार सागर की चट्टानों
	हम अपना चरित्र भी उजल :	से नौका टकरा गई है—
	बना सके और जाते समय	जिनपर विपत्ति आ गई
	में अपने पैरों के पवित्र ।	है—उत्साही हो जायँ ।

## ( सक्षेप )

यह अमेरिका महाद्वीप जो आज बड़ा समृद्ध और शिक्षित रहा जाता है, आज से ४०० साल पहले दुनियाँ को उसका पता भी न था । अमेरिका को खोज निकालने का श्रेय हिन्दू, चीनी, तुर्क, रोमन आदि कइ जातियाँ ने लेना चाहा पर आधुनिक यूरोप को उसका पता कोलम्बस ने दिया था । कोलम्बस इटली के जिनोआ नगर में एक गरीब के घर पैदा हुआ था । वह बचपन से ही पढ़ना लिखना छोड़ समुद्रचर्या में लग गया । फिर उसका विवाह बार्टोलोमियो नामक विख्यात जलयात्री की कन्या में हो गया । अपने समुद्र के नक्शों से कोलम्बस का ज्ञान गूँथ बढ़ गया ।

पंद्रहवीं शताब्दी से यूरोपवासियों के दिल में समुद्र द्वारा भारत पहुँचने की प्रबल अभिलाषा थी । कोलम्बस भी हिन्दुस्तान पहुँचने का स्वप्न देखता था, और उसने एटलांटिक महासागर को पार कर एशिया पहुँचने का विचार ठाना । उसने पुर्तगाल,

इस बात का मैं मुनगागारों तथा शिवा । उन्होंने प्रताप  
का पीछा किया पर जकिमिह का बला काम तमाम कर दिया  
और मैं इस अपन पिता का व निष्पत्तियाँ मीठी ।

उपर प्रताप मुगल का मैं मंगल आपर करवली के पहारों  
पर का मय उधर जकिमिह का कापर पिदुल्ले जापर पर  
पभागाव था । उधर साइम लुहाई कर जो देग डोह किया  
या यजुई उमर निष्पत्तियाँ उधर कामा कर दिया था पर उनका  
अपना हत्य उमर कामा का पाप का पराव प्रायश्चित्त नहीं सम  
झना था । जल उसा मृत्यु पर्यंत मन्थ्याम प्रव धारण कर तथा  
अपना व्यक्ति-ध्विषा कर पर पर स मौनिक इच्छे करने का प्रव  
धारण किया ।

५०

## अमेरिका की रोज

(लालक—भी रामप्रसाद विभाठी पम० ए०)

पृ० ४९५—५०३

अनात-गिसका पता तथा

जाशुन्य-गिर्जन, जहाँ कोई

आदमी न हो

पुराता-पुराने

न्यूनाधिक-उल्लुखुद्ध, घोड़ा-बहुत

कटिबंध गरमी सरदीके विचारसे

किये हुए पृथ्वी के विभाग

परिधि-घरा

द्वितीयाद्ध-दूमरा आधा भाग

अर्द्धांश-आधा टुकड़ा

अस्तव्यस्त-द्रिन्न भिन्न

गिता-सर्षथा, एकदम

उपहासजनक है सो न जाने लायक

गटार्ड में पढ गया-बुद्ध निरपय

न हुआ

शैवाल-सँवार, काई

सहर-साधी

जहाँ उसका बड़ा आदर हुआ। तब इसकी खबर दूसरे देशों को लगी, तब फ्रान्स, पुर्तगाल, इंग्लैण्ड और हालैंड देश स खोजक दौड़ पड़े। उसके बाद जान कंबट नामक व्यापारी इंग्लैंड के राजा सप्तम हेनरी की आज्ञा लेकर रवाना हुआ। फलस्वरूप उत्तरीय अमेरिका का भी पता लग गया। धीरे धीरे वहाँ यूरोपियन उपनिवेश स्थापित हो गये। आज अमेरिका संसार के समृद्धिशाली देशों में से है, इसका श्रेय कोलम्बस और उसके अनुयायियों को है।

## दीर्घ जीवन

पृ० ५०४--५१०

लघन-उपवास, न खाना

अक्षय-कभी न नष्ट न होनेवाली । सर्वरोगमलाश्रये-सब रोग मल  
दीर्घजीवी-जन्मी उमर वाला के सहारे हाँ रहते हैं।

युक्ताहार विहार-जिसका खाना

पीना और रहना समुचित है।

## संक्षेप

जीवन की सुखमय बनाने का सबसे उत्तम उपाय सादा जीवन और उच्च विचार है। आजकल पाश्चात्य सभ्यता आवश्यकताओं को बढ़ाना अपना लक्ष्य समझती है, पर प्राचीन ऋषियों का आदर्श आवश्यकताओं को कम करना था, अतएव उनका जीवन सुखमय था। यही आदर्श है जिससे हम भी सुखी और दीर्घजीवी हो सकते हैं।



इंग्लैंड और जिगाश्वा सरकार में बातचीत की, पर कोई सहायता देने का राजी न हुआ। धार धीरे-धीरे यह गवर्नर स्पेन की महारानी के पास पहुँची और उमन कोलम्बस का प्रस्ताव विद्वत्सभा के पास विचार कराने के लिए भेजा गया। उस समय के समुचित विचारों के कारण विद्वत्सभा ने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया। इसी समय स्पेन में युद्ध शुरू हो गया। पर कोलम्बस रानी की महानुभूति पर धरती वहीं टहल रहा। युद्ध समाप्त होने पर उसकी सभ्य शक्ति मानकर राजा ने तीन जहाज उसके हवाले कर दिए। सन् १४९२ में उसने अपना यात्रा प्रारम्भ की, और दिन रात अज्ञात समुद्र की यात्रा के कारण घबराये साधियों को पुमलाकर, समझाकर डगडग कर काम लता रहा। अन्त में उसे जमीन का किनारा देख गया। उस द्वीप का नाम कोलम्बस ने सान सेल्वाडोर रखा। उस द्वीप में निवासी असभ्य थे, वे कपड़े नहीं पहनते थे, खिगाँ भी प्रायः नहीं रहती थी। द्वीप के निकट जहाजों को देख कर वहाँ के निवासी भौचक्के रह गये, वे कोलम्बस और उसके साथियों की गारी चमड़ी देख उन्हें स्वर्ग से आया समझ उन्हें नमस्कार करने लगे।

कोलम्बस हिन्दुस्तान की गोज में निकला था, इसलिए उसने वहाँ के निवासियों को रेड इण्डियन कहना शुरू किया। स्पेन वालों को रेड इण्डियनों की दरिद्रता देख कर निराशा हुई पर उनके सोने के गहने देखकर कुछ आश्वासन भी हुआ। उन्हें शीश के मनके आदि देकर उनसे उन्होंने सोने के गहने ले लिये। फिर सोने की आशा में कोलम्बस प्राग्वदा, डम धार उसे क्यूबा और हैस्पिनोला द्वीपों का पता लगा। दिसम्बर मास में उसका जहाज सतमेरिया चट्टान से टकराकर टूट गया। तब वह दूसरे जहाज पर वापिस स्पेन आ गया।

## हरिद्वार

(लक्ष—श्री गिरी व नारायण सिंह)

प्र० ५११—५२०

भ्रान्त-उन्मत्त, भूला हुआ

द्विन्नमस्तक-कटा हुआ सिर

संरक्षण करना-रोकना

विशुचिका-हैजा

रुचिर-सुन्दर

उर्ध्व-उपजाऊ

कलकलानिनादनी-कलकल शब्द

करना वाली

भुवन्मोहिनी-संसार को मोहने

वाली

लतागुल्म-लता और झाड़ी

पुष्प पल्लवों-फूलों और पत्तियों

शृंगार-सजावट

मनासुगमकर-मन को सुगम

करने वाली ।

कल्लोलिनी-तरंगों वाली

अट्टालिका-अटारी, कोठा

श्रुतमधुर-मधुर आवाज

सम्भ्रान्त-सम्मानित

जलबयार-पानी मिली धातु

तरगधीचियों-तरंगों, लहरों

## (संक्षेप)

हरिद्वार हिन्दुओं का बड़ा पवित्र, प्रसिद्ध और प्राचीन तीर्थ स्थान है । इसके पुराने कई नाम हैं गंगाद्वार, शिव व राजधानी, मयरा या मायापुर । ह्येनसाग ने इसका उल्लेख मायूखो नाम से किया है । अथ भी हरिद्वार और कनक के बीच मायापुर के खडहर विद्यमान हैं । हरिद्वार गंगा व दक्ष प्रजापति का यज्ञस्थान, सतीकुंड और कुम्भ क्षेत्र आदि कारण अधिक प्रसिद्ध है । कुम्भ पर यहाँ बड़ी भीड़ होती । पहले कुम्भ के अवसर पर शैवों और वैष्णवों तथा अन्य विभिन्न धर्मावलम्बियों की आपस में खूब लड़ाई होती थी,

प्रसिद्ध वैद्य निरुद्धिः २० वर्ष की आयु में काम कर मरने थे। यह शक्ति ब्रह्माण्डोत्पत्ति पूर्वजों से प्राप्त की है। उनके प्रविभागत १ मास नीचत व्यतान करना गुरु किया। असा मन्त्रान १ ब्रह्मा अनुकरण किया अतः य सप्त दीर्घ जीवा रूप।

मादा नीचत व्यतान कराने में नीचत की अवधि लम्बी होती है। कार्य कराने का शक्ति बढ़ती है। भगवान् शृंग ने मन्त्रोत्पत्ति में मनुष्य को 'सुखाहार विहार' रहने के लिए कहा है— जिमका अर्थ मादा नीचत व्यतीत कराना ही है। जो लोग मिर्च, रस्ताइ, धाय, कहना आदि फ विता नहीं रह सकते वे दीर्घजाय नहीं हो सकते। टामस पार १४९ वर्ष तक मुख्यमय रहा परन्तु उसका बाद ज्यादा वह राजपरवार में गया और वहाँ का खाने खाया जो ही एक वर्ष के भीतर ही वह मर गया, यद्यपि डाक्टरों की आशा करते थे कि वह १०-२० वर्ष और जीवगा। उसकी दीर्घ आयु का कारण मास, और शराय तथा समाप्त आदि के बिन भोजन था। मादा नीचत व्यतीत कराना मादे भोजन पर निर्भर रहता है। मादा भोजन का अर्थ यह नहीं कि भोजन निकृष्ट हो पर यह कि उसमें रस्ताइ मिर्च आदि न हो। हेनरीफोर्ड भी इस सिद्धान्त का पोषक है। अन्त्रा भोजन मिलने पर भी भूख में तथा पाचनशक्ति से अधिक नहीं खाना चाहिये भोजन स्वस्थ अन्त्रों तरह चयाया जाना चाहिये। यदि कभी पेट में मल इकट्ठा हो जाय तो उपवास कर पेशाब देना चाहिये, क्योंकि सब रोग मल के ही सहारे रहते हैं।

कनराल—हरिद्वार के पास ही है। पाच छ पैस में तगो जाते हैं। यहां के बाजार की रौनक अच्छी है। यहीं सती-कुंड और दक्ष प्रजापति का पुराना मंदिर है।

हृषिकेश—हरिद्वार के समीप ही है। यहाँ रेल या मोटर द्वारा पहुँचते हैं। यहाँ के प्राकृतिक दृश्य अद्वितीय हैं।

लक्ष्मण झूला—हृषिकेश से थोड़ी दूर आगे है। यह प्रकृति की गोद में रसा है। पहाड़ों के बीच से आती गंगा जी के आरपार जाने के लिए यह पुल बनाया गया था। पिछली बाढ़ में यह पुल बह गया है, इसे ही लक्ष्मण झूला कहते हैं। इसके दोनों ओर कई आश्रम हैं। पूजनीय स्वामी रामतीर्थ जी ने यहीं गंगा माँ की गोद में अन्त पद पाया था।

५३।

## अभिमन्यु की वीरता

(लम्बक—श्रियुत गिवपूनन सहाय)

पृ० ५२१, ५२३

आकाशगृत्ति—ऐसी आमदनी जो  
धैर्य न हो

जग आदि—जगत में प्रसिद्ध

अगदघन—लम्बातड़गा, बडा

परकाले—दुन्दे, चिनगारियाँ

आकत क परकाले—गड्य दाने

बाले

मुसराई—मुदरता

सोपडोचू न—सोपडो चूर करने

बाना

पागडोर—लगाभ

नत स्पटे करना—हराना

अमीसती है—आशीर्वाद देती

ललक—गहरी चाह

दूठी का दूध या कराना—दूध

छुडा देना, सब सुख मु

दना।

पनाले—परनाले

पृ० ५२४, ५२५

लोहे का चना—बडा मज्जत

तिलाद—गण

अब वह नहीं है। पर अब भी कुभ के दिनों में लुधो लफंगों द्वारा स्त्रियों की पर्याप्त दुर्दशा होती है, और हैजा आदि बीमारियाँ फैल जाती हैं। सरकार, सेवा समिति, तथा बाल चर मण्डल के सहयोग से इन घटनाओं को रोकने की पर्याप्त प्रयत्न हो रहा है। हरिद्वार की सबसे बड़ी शोभा गंगा जी हैं, गंगा की नहर भी यहीं से निकाली गई है। आजकल हरिद्वार एक अच्छा बड़ा शहर हो गया है पर इसके विशेष दर्शनीय स्थान निम्नलिखित हैं—

**हरकी पीड़ी**—यही मुख्य स्थान है जहाँ कुभ आदि के समय अधिक भीड़ होती है। गंगा से सट कर एक लम्बा सा प्लेटफार्म बला गया है। इसके एक ओर पक्षी अट्टालिकाएँ हैं और दूसरी ओर गंगा जी की धारा। इस प्लेटफार्म की एक छोटे से सुन्दर पुल द्वारा किनारे से मिलाया गया है। इस जगह पर स्नानार्थियों, ठयारयाताओं, भजन मण्डलियों, दर्शकों और दुकानदारों की खूब भीड़ रहती है। शाम सवेरे एक मेला सा होता है।

**ब्रह्मकुण्ड**—यह भी गंगा की धारा में ही है, इसके घाट की सीढ़ियाँ सगमरमर की बनी हैं। यहाँ रंग विरगी मछलियों के खेल दर्शनीय हैं।

**भीमगदा या भीमगोहा**—यह पाण्डु पुत्र भीम के नाम से प्रसिद्ध है। कहते हैं भीम ने गदा से यहा प्रहार किया था अत एव यहाँ पानी निकल आया। इसके पास ही एक झरना है।

**चण्डी पहाड़**—हरिद्वार के सामने दूसरी ओर है। यहाँ चण्डी देवी का पवत है।

अपने पिता के रथ पर जा ठिपा । दुर्योधन ने अपने पुत्र की हार का बदला लेने अल्पुष राक्षस को भजा पर अभिमन्यु ने उसका भी घुरा हाल कर दिया ।

दुर्योधन ने युधिष्ठिर को पकड़ने के लिए चक्रव्यूह बनाया और त्रिगर्त देश के राजा सुशर्मा द्वारा अर्जुन को युद्ध के मैदान से दूर कर दिया । अर्जुन के बिना चक्रव्यूह तोड़ना और कोई न जानता था । वीरपुत्र अभिमन्यु ने इस का बीड़ा उठाया, भीम ने भी साथ देने का वचन दिया । अभिमन्यु तो चक्रव्यूह में घुस गया पर और कोई पाण्डव उममे घुस न पाया । तब अकेले अभिमन्यु ने ही कौरवों का नाश में दम कर दिया । इस पर कर्ण ने उसके धनुष की डोरी काटदी, अश्वत्थामा ने उसका कवच छेद डाला, दुःशामन ने उसका घोड़े और सारथी को मार दिया, पर फिर भी वह टूटे रथ का चक्का उठा कर सधकी गवर लेन लगा । जब द्रोण ने उसको भी काट दिया तब उसने गदा उठायी और उधर में दुःशासन का बेटा भी गदा लेकर आगया । लड़ते लड़ते दोनों ही बेहोश होगये पर धकान के कारण अभिमन्यु की घेंशेशी दूर होने में देरी हुई इतने में अचेत पड़ अभिमन्यु को गदा की चोट से दुःशामन के लठके ने सदा के लिए मुला दिया और वह वीर अपनी वीरता की कहानी हमेशा के लिए लिख कर चला गया ।

आँसु का झंझा-दुश्मन  
 हँकड़ा हुआ हागड़े अभिमान  
 दूर होगया  
 प्र० १२६ ५ ७  
 नीमन पग करना उत्साह भंग  
 पर दत्ता

यदिग धाँजा-प्रथम करना  
 घाल धाँका न हाना-उरा भी  
 हाँ न होना  
 देदी गोर-कठिन काम  
 प्रेक्षार-गोद  
 और-तेज

### (मथेष)

अभिमन्यु वीर अर्जुन और सुभद्रा का बेटा, भीम का भतीजा और भगवान कृष्ण का भौता था। वह थाप जैसा तीर चलाने में लज्ज था और सामे जैसा सुदर था। रात दिन धीरों के साथ रहने से उस में भी कूटकूट कर धीरता भर गई थी। महाभारत के युद्ध के समय वह केवल १६ वर्ष का था। मात्रा पिता से प्यार, दादी से आजीर्वाद् और ताया चाचा से शायामी लघट युद्ध में पहुँच जाता और जो सामने आता उसके उसके छुड़ा देता। महाराज दृढ़दल ने उसे रोचना चाहा पर उसके रथ आदि सब काट कर उसे भगा दिया। पड़दादा भीष्म और कृत्तवमा को भी उसने हँरान कर दिया। जय शल्य ने उसके साले कुमार उत्तर को मार दिया तब तो उसने कौरव सेना में आदि आदि मचा दी। द्रोण तथा अश्वत्थामा भी उसने पार न पा सके, अत वह कौरवों की आँग का काँटा हो गया।

दूसरे दिन दुर्योधन का पुत्र लक्ष्मण उससे लड़ने आया, तब अभिमन्यु ने उसकी सारी हँकड़ी दूर कर दी। बेचारा

मे महाराजा वृध्वीराज और चित्तौड़ के रावल समरसिंह के दानपत्रों में मिलता है। यद्यपि १५ वीं शताब्दी से १९ वीं शताब्दी तक हिन्दी पद्य अपनी उन्नति की चरम सीमा को पहुँच चुका था। परन्तु इस काल में स्वामी विठ्ठलनाथ के 'शृंगार रस मडल' तथा गोकुलनाथजी की 'चौरासी वैष्णवों की घात्ता' आदि तीन ग्रंथों तथा कुछ भ्रष्ट और अनियंत्रित भाषा टीकाओं और फुटकर गद्य लेखों के सिवाय हिन्दी में गद्य साहित्य में अन्य कोई चीज नहीं मिलती। हिन्दी गद्य की साम्प्रतिक उत्पत्ति १९ वीं शताब्दी में हुई और हिन्दी गद्य के वास्तविक प्रारम्भिक लेखक मुश्री सदासुख लाल, मैथिल इशाअल्लाह खा, लल्लूलाल और सदल मिश्र कह जाते हैं। सदासुखलाल की भाषा बोलचाल की रखी बोली है। इशाअल्लाहखा की हिन्दी बड़ी चटकीली और मुहावरेदार है। लल्लूलाल और सदलमिश्र दोनों ने फ़ोटो लिथोग्रफ कालिज में रहकर गिल्डिस्ट साह्य की आज्ञा से हिन्दी में ग्रंथ लिखे, परन्तु लल्लूलाल का गद्य पद्यसयी ब्रजभाषा में है और सदल मिश्र की भाषा मुश्री सदासुखलाल की तरह व्यवहार में आने वाली रखी बोली है। इसके बाद फिर ६० वर्षों तक हिन्दी की प्रगति रुकी रही, क्योंकि अंग्रेज राजनीतिक दृष्टि कोण से उर्दू को अधिक अपना रहे थे। परन्तु राजा शिवप्रसाद ने उर्दू भाषा और नागरी लिपि में सन् १९०२ में 'बनारस' अखबार निकाला, उसके बाद 'सुधारक' तथा 'बुद्धि प्रकाश' आदि अखबार निकले। इतने में स्वामी दयानन्द ने अपने धर्म ग्रंथ गुजराती होते हुए भी हिन्दी में लिखे। और राजा लक्ष्मणसिंह ने उर्दू शब्दों का पूर्ण बहिष्कार कर हिन्दी में कई ग्रंथ लिखवाये और स्वयं अनुवाद किये। अब तक हिन्दी की कोई एक शैली निश्चित नहीं थी। यह काम भारतेन्दु



## परिशिष्ट क हिंदी गद्य का विकास

प्राकृत भाषाओं को उत्पत्ति मगधा से हुई अथवा मगध और प्रान्त दोनों एक साथ प्रचलित थी, विद्वान लोग इस बात पर एकमत नहीं हैं परन्तु इस बात पर सब सहमत हैं कि प्राकृत की तीन प्रमुख शाखाएँ थी—मागधी, शौरसेनी और महागण्ठी, तथा हिन्दी गूरमन दश अर्थात् प्रथम डल (मथुरा के आसपास के प्रान्त) में बोलनी जाने वाली प्राकृत की पुत्री है। इन पुरानी हिन्दी का आरम्भ विक्रम की आठवीं शताब्दी में माना जाता है।

श्रीयुक्त रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी का प्रारम्भ काल ११ वीं शताब्दी के बीच में माना है उन्होंने साहित्य के इतिहास के निम्नलिखित चार काल विभाग किये हैं।

१ आदिकाल (धीरगाथा काल) सवत् १०५०-१३७९

२ पूर्वमध्यकाल (भक्तिकाल) सवत् १३७९-१७००

३ उत्तरमध्यकाल (रीतिकाल) सवत् १७००-१९००

४ आधुनिककाल (गद्यकाल) सवत् १९०० से आजतक।

इस कालविभाग का अर्थ यह है कि इन कालों में इस तरह की रचनाओं की प्रधानता रही। जैसे आजकल पद्य भी लिखा जाता है, पर तु प्रधानता गद्य की है अतः इसे गद्य काल कहा जाता है।

हिन्दी पद्य का सब से पुराना ग्रंथ 'सुमान रासो' माना जाता है। इस का रचनाकाल सवत् ९०० के लगभग कहा जाता है। ऐसे ही हिन्दी गद्य का उदाहरण तेरहवीं शताब्दी

म महाराजा पृथ्वीराज और चित्तौड़ के रावल समरसिंह के दानपत्रों में मिलता है। यद्यपि १५ वीं शताब्दी से १९ वीं शताब्दी तक हिन्दी पद्य अपनी उन्नति की चरम सीमा को पहुँच चुका था। परन्तु इस काल म स्वामी विठ्ठलनाथ के 'शृंगार रस महल' तथा गोकुलनाथजी की 'चौरासी वैष्णवों की वात्ता' आदि तीन ग्रंथों तथा कुछ भ्रष्ट और अनियंत्रित भाषा टीकाओं और फुटकर गद्य लेखों के सिवाय हिन्दी में गद्य साहित्य में अन्य कोई चीज नहीं मिलती। हिन्दी गद्य की वास्तविक उत्पत्ति १९ वीं शताब्दी में हुई और हिन्दी गद्य के वास्तविक प्रारम्भिक लेखक मुश्री मदासुख लाल, मैयद इशाअल्लाह रा लल्लू लाल और सदल मिश्र कह जाते हैं। मदासुखलाल की भाषा बोलचाल की लड़ी बोली है। इशाअल्लाहवा की हिन्दी बड़ी चटकीली और मुहावरेदार है। लल्लू लाल और सदलमिश्र दोनों ने फोटो थिलियम कालिज में रहकर गिलक्रिस्ट माह्व की आज्ञा से हिन्दी में प्रथम लिखे, परन्तु लल्लू लाल का गद्य पद्यमयी ब्रजभाषा में है और सदल मिश्र की भाषा मुश्री मदासुखलाल की तरह व्यवहार में आने वाली लड़ी बोली है। इसके बाद फिर ६० वर्षों तक हिन्दी की प्रगति रुकी रही, क्योंकि अंग्रेज राजनीतिक दृष्टि कोण से उर्दू को अधिक अपना रहे थे। परन्तु राजा शिवप्रसाद ने उर्दू भाषा और नागरी लिपि में सन् १९०२ में 'बनारस' अखबार निकाला, उसके बाद 'सुधारक' तथा 'बुद्धि प्रकाश' आदि अखबार निकले। इतने में स्वामी दयानन्द ने अपने धर्म ग्रन्थ गुजगनी होते हुए भी हिन्दी में लिखे। और राजा लक्ष्मणसिंह ने उर्दू शब्दों का पूर्ण बहिष्कार कर हिन्दी में कई ग्रन्थ लिखवाये और स्वयं अनुवाद किये। अब तक हिन्दी की कोई एक शैली निश्चित नहीं थी। यह काम भारतेन्दु

हरिजन-पत्रिया। अतएव कइ भातुक उन्हें आधुनिक हिन्दी गद्य क पिता मानत ह । उहाँ अगसो नाटक, कई अन्य ग्रंथ तथा दो पत्र-परिभाषा निकाली। उहाँ भाषा परिमार्जित आँग गैवारूपन क परम श्रेणी। भारतके कुछ अन्य लेखकों में बालकृष्ण भट्ट प्रताप ताराय त्रिपाठी निवास राम, राधाकरण गोस्वामी, वाग्भुक्त गुप्त तथा चन्द्रशरण चौधरी प्रमुख हैं। इस काल क लम्बका श्री रघुनाथो म व्याकरण की परमाहृत की गई। हास्य रस की अधिकता थी और प्रामाण्य भाषा की पुष्ट पायी जानी थी। इस समय बँगला क कई ग्रन्थों का अनुवाद भी हुआ। व्याकरण क लेखों को दूर करने का प्रयत्न सम्भ्रता सम्पादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने किया। उन्होंने हिन्दी को गूरु माना। अद्य तो अंगरेजी और बँगला की तरह विराम चिह्नों पर भी पूरा ध्यान दिया जाना लगा ह। इस समय हिन्दी की सब ओर वृद्धि हो रही है। सब विषयों पर मौलिक ग्रंथ निकल रहे हैं। कई पत्र-परिभाषा निकल रही हैं। इस तरह हिन्दी गद्य बड़ी तेजी से बढ़ रहा रहा है।

### परिशिष्ट ख

#### भिन्न-भिन्न लेखकों की लेखन-शैली

गुसाई गाजुलगाय जी की हिन्दी प्राचीन काल की ब्रजभाषा मिली साथी माना हिन्दी का नमूना है।

सैयद इशाअल्लाह खा की हिन्दी उर्दू संस्कृत आदि के शब्दों से अद्भुत गैवारूप भाषा से भी रहित शुद्ध हिन्दी या खड़ी बोली है। उसमें चुन्नुलाहट है पर वाक्य रचना कहीं कहीं फारसी ढंग की है।

श्री लख्मलाल की भाषा पद्यमयी तथा ब्रज भाषा मिश्रित है और उर्दू शब्दों से बिलकुल अछूती है।

राजा शिवप्रसाद की भाषा यद्यपि सरल है परन्तु उसमें उर्दू और फारसी शब्दों की भरमार है ।

स्वामी दयानन्द जी की हिन्दी में संस्कृत के शब्द अधिक आये हैं, मुहावरा भी संस्कृत का है, विदेशी शब्दों से रहित है, परन्तु कहीं कहीं गुजराती की झलक पायी जाती है ।

श्री बालमुकुन्द गुप्त के लेखों में हँसी आर चोट (व्यङ्ग) दोनों हैं । भाषा बड़ी चुटीली है और उसका झुकाव अधिकतर शुद्ध हिन्दी की ओर है ।

श्री बालकृष्ण भट्ट की भाषा संस्कृत मिश्रित है, परन्तु उसमें पण्डिताऊपन नहीं पाया जाता, अपितु मुहावरों की अधिकता तथा भाव और भाषा दोनों की सुषोधता पाई जाती है ।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की हिन्दी बड़ी मँजी हुई और जोरदार होती है । वाक्य मत्त सरल और छोटे होते हैं, व्याकरण का बड़ा ध्यान रखा जाता है । ये आजकल की गद्य शैली के आचार्य माने जाते हैं ।

श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय ठेठ हिन्दी, साधारण चलती-फिरती हिन्दी तथा संस्कृत मिश्रित कठिन हिन्दी सभी प्रकार की शैलियों में लिखते हैं । ये गद्य को अपक्षा पक्ष अधिक लिखते हैं ।

प० कामता प्रसाद गुरु की भाषा सरल, व्याकरणकी दृष्टि से शुद्ध तथा भाव भरी होती है ।

श्री गदाधरसिंह की कोई विशेष शैली नहीं, परन्तु उसमें उर्दू शब्द प्रायः नहीं आते ।

बाबू श्यामसुन्दर दास की भाषा मँजी हुई शुद्ध संस्कृत-मय होती है, उसमें अन्य भाषा के शब्दों और मुहावरों का अभाव होता है ।

श्री माधवराय म. की हिंदी संस्कृत मिश्रित तथा मराठी भाषा का रंग लिए थी।

श्यामा सायदेव का भाषा जोरदार, सरल तथा रोचक होती है। ये यात्रा सम्बन्धी साहित्य व प्रमुख लेखनों में से हैं।

मुशी प्रेमचन्द का भाषा जोरदार सरल, मुहावरेदार तथा मनीष होती है उनमें उर्दू तथा संस्कृत के शब्दों का प्रयोग है। ये हिंदी व मराठी अष्ट उपन्यासकार हैं।

लाला हरप्रियाल का भाषा मेंजी हुई और जोरदार है तथा शैली तार्किक है।

श्री रामचन्द्र गुप्त का भाषा अधिकतर संस्कृतमयी है, शैली अधिक कठिन तथा आलोचनात्मक होती है और विचार बड़े गटे हुए होते हैं।

श्री रूपनारायण पाण्डेय और श्री मन्तराम अधिकतर अनुवाद के लिए प्रसिद्ध हैं।

प्राक्सर शिवाचार पाण्डे का भाषा संस्कृत मिश्रित तथा शैली तार्किक है।

श्री विश्वम्भरनाथ कौशिक का भाषा सरल सुबोध, तथा विशेष चलतापन लिए होती है।

श्री चंडीप्रसाद द्वयेरा का भाषा में संस्कृत शब्दों की भरमार है तथा शैली वर्णनात्मक है।

श्री पदुमलाल पुनालाल बट्टी का भाषा कठिन होती है उसमें संस्कृत शब्दों की अधिकता है तथा शैली आलोचनात्मक है।

श्री जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द का भाषा बहुत आज पूर्ण है, भाषा पर इनका खूब अधिकार है।

धानू शिवपूजन सहाय विषयानुकूल भाषा लिखन में सिद्धहस्त

हैं। इनकी भाषा में अनुप्रास और मुहावरों की भरमार होती है। शैली मृदु में जी हुई है।

‘धाकी अन्य लेखकों की शैली में कोई उल्लेखनीय बात नहीं। उनके लेख आजकल की हिन्दी के माधारण गमूना मात्र हैं।

### परिशिष्ट ग

#### अनुमानित प्रश्न

१ निम्न लिखित व्यक्तियों की जीवनी पर प्रकाश डालो।  
सय्यद ईशाअल्लाह खाँ, स्वामी दयानन्द, महावीर प्रसाद द्विवेदी  
मत्स्यदेव परित्राजक डा० लक्ष्मण स्वरूप, प्रेमचन्द बी० ए०।

२ निम्नलिखित घटनाओं पर नोट लिखा।

(क) स्पण्डन ब्राह्मण का वैष्णव हाना

(ख) द्रौपदा स्वयंवर

(ग) शुरु-जन्म कथा

(घ) राजपूतनी का बदला

(ङ) रणथम्भौर-ध्वंस

(च) अभिमन्यु उध

(छ) चन्द्रावत का बलिदान

३. ‘रामायण के चरित्रों में स भरत का चरित्र सधम अधिक आदर्श और निर्दोष है परन्तु वे ही रामायण के पात्रों में सधसे अधिक निन्दा का पात्र घने” इस कथन की आलोचना करो।

४ हिन्दी-साहित्य क कुछ प्रसिद्ध मुसलमान कवियों का परिचय दो तथा उनकी कविताओं और विचारों पर सचित नोट लिखो।

५ 'समय होकर भी जा मनुष्य इतने महत्वशाली साहित्य का मवा और अभिवृद्धि नहीं करता अथवा उसमें अनुराग न रखता वह समाजद्रोही है वह दशद्रोही है, वह जातिद्रोही है किद्रोही आत्मद्रोही और आत्महता भी है।' इस स्थान पर सरल हिन्दा ने लिखा 'और इस पर अपना विचार प्रकट करा।

६ निम्नलिखित गद्य भाग का अपनी सरल भाषा में लिखो

"अब सन्ध्या हो गई। मुनिजुमारों ने रत्नचन्द्र से अर्पण दिया था, यह उनमें प्रथम में लगकर गम्भी शोभा देता था जैसा लोहित वर्ण सूर्य। तमारि की क्रिया न धीरे-धीरे प्रथ्वी के कमलजल में और कमलपत्र में वृक्षा के शिखर पर और वह से पहाड़ों की चोटी तक जाकर उसकी स्वर्ण वर्ण किया। धाम में चलानेमान पत्र रूपी हस्त द्वारा मधु वृक्ष पत्तियों को अपने अपने ग्योती में बुलाने लगे और त्रिहङ्गों ने भी कलरव कर उत्तर दिया। मुनि सब ध्यातव्य होकर और हाथ बांध कर सन्ध्या पन्दन करने लगे। कामधेनु के दुहे जाने का शब्द चारों ओर सुनाई देने लगा। हरी पुशा अग्निहोत्र की वेदी पर विछाई गई। तिमिरनाशक के भय से छिपा हुआ तिमिर प्रकट हुआ। सन्ध्या के क्षय होने के शोक से दुःखित रात्रि अन्यकाररूपी मलिन वस्त्र धारण करके नष्टिगोचर हुई। ग्रह रूपी चोर भी, जो सूर्य के प्रताप में छिपे थे, बाहर निकले। पूर्व दिशा में चन्द्रमा का थोड़ा थोड़ा प्रकाश होने लगा। इससे उसकी शोभा ऐसी जान पड़ती थी, मानो वह मुसकरा रही हो सुधाधर का

पफले कलामान, फिर आघा और फिर क्रमशः समस्त मण्डल प्रकाशित हुआ और अन्धकार का नाश हुआ। कोई फूली और मन्द मन्द समीर के बहन स मृग आह्लादित हुए। जीर-जन्तु आत दमय, कुमुद गन्धमय और तपोवन प्रकाशमय हुआ।

७ “दान, दाक्षिण्ये, धृति, वीर्यं, लज्जा, कीर्ति, बुद्धि, मन्तति, श्री, धृति, तुष्टि, पुष्टि सब अन्युत मे ही स्थित हैं।” यह कथन कहाँ तक सत्य है।

८ हिंदी गद्य के विकास का इतिहास लिखो।

९ (क) हिन्दू शास्त्रों के अनुसार माता का गौरव पिता से मांगुणा अधिक है, क्या यह सत्य है और ऐसा क्यों? क्या हिन्दू त्रियात्मक जीवन में सचमुच माता का पिता से इतना अधिक आदर करत है। इस पर संक्षिप्त नोट लिखो।

(ख) श्री रामचन्द्र में कौन से ऐसे गुण थे जिनसे उनका नाम अमर हो गया है, भविस्तर लिखो।

(ग) क्या हिन्दू जाति में प्राचीन जमाने में भी बुद्धि का प्रचार था, प्रमाण दो।

(घ) वाल्मीकि, व्यास और होमर को विश्व कवि क्यों कहा जाता है, उनके काव्य में क्या विशेषताएँ हैं, बताओ।

(ङ) अध्ययन के लाभ अथवा दीर्घ जीवन के उपाय लिखो।

१८ निम्नलिखित वाक्यों का भावार्थ लिखो।

कौड़ियों पर अशफियाँ लुट रही थीं।



जिनकी स्याहा भी उम के मन्द भाग्य की भाँति फीका पद  
गई थी ।

गिरिजा अथ बोइ मायत की पाहुती है ।

११ (क) नेता म क्या गुण होने चाहिये ?

(ख) हनरा फेरर कौन था ?

(ग) आसाश गगा क्या रीत है ?

(घ) मगथ और शिरा ची का क्या और कैसा सम्बन्ध  
था ?

(ङ) सम्भाषण म किन नियमों का पालन करना चाहिये ?

(च) महाभारत का क्या स देश है ?

१२ निम्नलिखित कठिन श-शों का अर्थ लिखो ।

पुट, पुराने धुराने, भोग भरना, प्रतिपादन, जाफरानी,  
सदका, मुँहले, सन्तापित, अचिगन्, निद्रिय, निभ्रत,  
विकलेन्द्रिय, पुनीत प्रव्रज्या, पुष्करिणी, महरूम, साम, दास,  
सौदामिनी, कूठलाविनी, अनघ, पूण्यरीयूप-वाहिनी, ध्यान-  
स्तिमित, पार्थिव, बहोलिनी, अँकवार, लिडार, परकाले, लघन  
उञ्चा, पूणवयरका, माया सम्भूत, जीघत, कुम्बूद, विकृत ।

१३ निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखो और उँद  
अपनी भाषा म प्रयुक्त करो ।

राइ का परत करना, हँकड़ी हवा हो जाना, छटी का दूध  
चाद करा देना, इहलीला सघरण करना, मिट्टी में मिल जाना ।

